हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

की

मध्यमा परीक्षा के साहित्य-विषयक

सोत्तर प्रश्नपत्र

[संवत २००० व २००१ वि०]

लक्ष्मीनिधि चतुर्वेदी एम० ए०
साहित्यरत्न, शास्त्री, हिन्दी प्रभाकर, कविरत्न

प्रकाशक
मातृ-भाषा-मन्दिर
दारागञ्ज, प्रयाग

प्रथमवार] सवत् २००२ [मूल्य १|||)

हिन्दी-विश्व-विद्यालय

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००० वि०)

साहित्य—प्रश्न पत्र १

समय ३ घण्टे] [पूर्णांक १००

१—निम्नलिखित अवतरणों का भली भाँति समझाइए। यदि इनमें कोई विशेष साहित्यिक सौन्दय हो, तो उस पर भी प्रकाश डालिए।

(अ) आतुर न होहु ऊधौ आवति दिवारी अबै।
वैसियै पुरदर कृपा जौ लहि जायगी।
होत नर ब्रह्म, ब्रह्मज्ञान सौं बतावत जौ,
कछु इहि नीति की प्रतीति गहि जायगी।
गिरिवर-धारि जौ उबारि ब्रज लीन्यौ बलि,
तो तौ भाँति काहू यह बात रहि जायगी।
नातरु हमारी भारी बिरह-बलाय सग,
सारी ब्रह्मज्ञानता तिहारी बहि जायगी॥ १०

अथवा

औंसिला भूप बली भुव को भुज भारी भुजगम सों भरु लीनो।
'भूषन' तीखन तेज तरन्नि सों वैरिन को कियो पानिप हीनो॥
दारिद दौ करि बारिद सों दलि त्यो धरनीतल सीतल कीनो।
साहितनै कुल चंद सिवा जस चद सों चद कियो छबि छीनो॥

(आ) मन रे जागत रहिये भाई। १२

गाफिल होइ बसत मति खोवै, चोर मुसै घर जाई ।।टेक।।
षट चक्र की कनक कोठड़ी, बस्त भाव है सोई।
ताली कूँची कुलफ के लागे, उघड़त बार न होई ।।
पंच पहरवा सोइ गये है, बसतै जागण लागी।
जुरा मरण व्यापै कुछ नाहीं गगन-मंडल लै लागी ।।
करत बिचार मनहीं मन उपजी, ना कही गया न आया।
कहै कबीर ससा जब छूटा, राम रतन धन पाया ।।

(इ) कीर के कागर ज्यों नृप चीर विभूषन उप्पम अगनि पाई। न
औध तजी मग बास क रूख ज्यों पथ के साथ ज्यों लोग लुगाई ।।
सग सुबधु पुनीत प्रिया मनों धर्म किया धरि देह सोहाई।
राजिवलोचन राम चले तजि बाप को राज बटाऊ का नाई ।।

उ०—(अ १) यह कवित्त 'श्रीरत्नाकर' रचित 'उद्धवशतक' का है। श्री कृष्ण ने अपने मित्र ज्ञानी उद्धव को गोपियों के पास ज्ञानोपदेश करने के लिए भेजा था। वह गोपियों के पास जाकर निराकार ब्रह्म की उपासना का उपदेश देने लगे; परन्तु श्रीकृष्ण के रग में रगी हुई गोपियों ने उन्हे ऐसे उत्तर दिए कि वह अपनी सारी ज्ञान-गाथा भूलकर, उन्हीं के रग मे रग गये। इस कवित्त मे गोपियाँ उद्धव को 'गोर्द्धन धारण' की घटना का स्मरण दिलाते हुए कह रही है :—

हे उद्धव, आप आतुर न हो, दीपावली का त्यौहार आने ही वाला है। यदि इन्द्र की वैसी ही कृपा हुई तो आपकी इस नीति पर कि ब्रह्म ज्ञान से मनुष्य ब्रह्म बन जाता है, लोगो को विश्वास करने का अवसर प्राप्त होगा। यदि आपने पर्वत को धारण करके ब्रजवासियो को उबार लिया तब तो आपकी यह बात किसी न किसी प्रकार रह जायगी। और यदि ऐसा आप न कर पाये तो हमारी विरह-बला के साथ साथ आपकी सारी ब्रह्मज्ञानता भी बह जायगी।

उ०—(अ २) यह सवैया छन्द श्रीभूषण कवि कृत 'शिवराज भूषण' का है। इस ग्रथ मे कवि ने अलकारों के लक्षण तथा उदाहरण दिये हैं। यह सवैया 'परिणाम' अलकार का उदाहरण है। इसका अर्थ इस प्रकार है :—

महाबली भोंसला राजा (शिवाजी) ने अपने भुजारूपी शेष नाग पर पृथ्वी का भारी बोझ उठा लिया। भूषण कहते हैं कि उन्होंने अपने प्रचण्ड तेजरूपी सूर्य से वैरियों को तेजरहित बना दिया। इसीतरह दरिद्रता रूपी-अग्नि को हाथी रूपी बादलों से नष्ट करके समस्त पृथ्वी को शीतल कर दिया (हाथियों का दान देकर लोगों की दरिद्रता दूर की, और इसतरह उन्हें प्रसन्न कर दिया)। अपने वंश के लिए चन्द्रमा स्वरूप शाहजी के पुत्र श्री शिवाजी ने अपने यश रूपी चन्द्रमा से चन्द्रमा को भी शोभाहीन बना दिया।

उ०—(आ) यह पद 'कबीरपदावली' से लिया गया है। अपने मन को उपदेश देते हुए कबीरदास जी कहते हैं कि :—

हे भाई मन, सदा सावधान रहो तथा असावधान होकर अपने ज्ञान को न खोओ। यदि तुम असावधान रहोगे तो अज्ञान या मायारूपी चोर तुम्हारे (शरीर रूपी) घर में घुस कर सर्वस्व लूट ले जायगा। यह छः चक्रों* की बनी हुई कनक कोठरी (अर्थात शरीर) ही तुम्हारा धन है। इसमें ताला कुंजी (प्राणादि) के रहते हुए भी माया या अज्ञान रूपी चोर को इसमे घुसते देर नहीं लगती। इस घर के पाँचों पहरेदार (पाँचों इन्द्रियाँ या पञ्चप्राण) सो गये हैं (अर्थात् असावधान हैं) और इसमे मायारूपी अग्नि का प्रवेश हो चुका है। इस मायारूपी अग्नि पर जरा, मरण का कोई प्रभाव नहीं पड़ता और यह सर्वत्र व्याप्त है। यह अग्नि (माया या अज्ञान) विचारों के द्वारा मन में अपने आप उत्पन्न हो गई। न मै कहीं गया न आया। परन्तु रामरूपी रत्न (सद्गुरु द्वारा दिये हुए ज्ञान) के प्राप्त होते ही मेरे सारे संशय छूट गये (इस अज्ञान या मायारूपी अग्नि से पीड़ा छूट गया)।

उ०—(इ) श्रीरामचन्द्र जी जब वन को जाने लगे तब उन्होंने अपने राजसी वस्त्र भूषणादि उतार दिये और अयोध्या को छोड़ कर इसभाँति चल

---

*हठ योग के अनुसार स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञा-चक्र और सहस्र दल कमल ये छः चक्र हैं।

दिये जिस भाँति कोई पथिक अपने विश्राम-स्थान को बिना किसी ममता के, छोड़कर चल देता है। इसीको महाकवि तुलसीदास जी कवितावली में इस प्रकार वर्णन करते हैं :—

राजसी वस्त्र तथा गहने उतार देने पर श्रीरामचन्द्रजी का शरीर इस प्रकार सुशोभित होने लगा, जिस प्रकार पत्तों के झड़ जाने पर तोते का शरीर सुन्दर लगता है। उन्होंने अयोध्या को मार्ग के वृक्षों की तरह तथा वहाँ के स्त्री पुरुषों को रास्ते के साथियों की भाँति त्याग दिया। उनके साथ उनका सुन्दर भाई तथा पतिव्रता प्यारी स्त्री (सीताजी) इसप्रकार शोभायमान लग रहे थे, मानों धर्म तथा क्रिया शरीर धारण करके उनके साथ चल रहे हों। कमल के समान नेत्रवाले श्रीरामचन्द्रजी अपने बाप का राज्य किसी पथिक की भाँति छोड़कर चल दिये।

प्र० २—निम्नलिखित अलकारों मे से किन्हीं पाच के लक्षण उदाहरण सहित लिखिए :— १०

उत्प्रेक्षा, सन्देह, भ्रम, अपन्हुति, वक्रोक्ति, प्रतीप, श्लेष।

उ०—उत्प्रेक्षा—जहाँ कोई उपमेय किसी उपमान कल्पना शक्ति के द्वारा कल्पित कर लिया जाय, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। जैसे :—

सोहत ओढे पीत पट, स्याम सलोने गात।
मनो नीलमणि सैल पर, आतप परयो प्रभात॥

× × ×

लता भवन ते प्रकट भै, तेहि अवसर दोउ भाइ।
निकसे जनु जुग विमल विधु, जलद पटल बिलगाइ॥

सन्देह—जहाँ किसी वस्तु को देख कर सशय बना रहे और निश्चय न हो वहाँ सन्देह अलंकार होता है। जैसे :—

को तुम तीन देव में कोऊ,
नर नारायण की तुम दोऊ ?
की तुम हरि दासन महँ कोऊ,
मोरे हृदय प्रीति अति होऊ।

भ्रम—जहाँ भ्रम से किसी और वस्तु को कोई और वस्तु मान लिया जाय वहाँ भ्रम अलकार होता है। जैसे :—

कपि कर हृदय बिचार, दीन मुद्रिका डार तब।
जनु अशोक अगार, सीय हरषि उठ करि गहेउ॥

❀ ❀ ❀

जो जेहि मन भावै सो लेहीं।
मनि मुख मेलि डारि कपि देहीं॥

अपन्हुति—जहाँ किसी सत्य बात को छिपाकर उसके स्थान पर दूसरी बात कही जाय, वहाँ अपन्हुति अलकार होता है। जैसे :—

मै जु कहा रघुबीर कृपाला।
बन्धु न होइ मोर यह काला

वक्रोक्ति—कहे हुए वाक्य का जहाँ श्लेष अथवा काकु (ध्वनि) से और अर्थ कल्पित कर लिया जाय, वहाँ यह अलकार होता है। इसके श्लेष और काकु दो भेद होते हैं। जैसे :—

गौरव सालिनी प्यारी हमारी सदा तुमहीं इक इष्ट अहो।
हौ न गऊ अवसाहू नहीं, अलिनी हूँ नहीं अस काहे कहो॥

यहाँ गौरवसालिनी शब्द को सुनकर गौ+अवसा+अलिनी मानकर उसका उत्तर दिया गया है। इस तरह जब काकु (ध्वनि विशेष) से जब दूसरा अर्थ निकल आवे तब भी यही अलकार होता है। जैसे :—

कह कवि धर्म सीलता तोरी।
हमहुँ सुनी कृत पर तिय चोरी॥
धर्म सीलता तब जग जागी।
पावा दरस हमहुँ बड़ भागी॥

प्रतीप—प्रतीप का अर्थ उलटा होता है, अतः यह अलङ्कार उपमा का उलटा है। इसमें उपमान को उपमेय के समान कहा जाता है। जैसे :—

बिदा किए बटु विनय करि, फिरे पाय मन काम ।
उतरि नहाये गंग जल, जो सरीर सम श्याम ।

यहाँ गंगा शरीर के समान श्याम बतलाई गई है ।

श्लेष—जहाँ दो या दो से अधिक अर्थ निकलें, वहाँ यह अलङ्कार होता है। यह दो तरह का होता है। १ शब्दश्लेष, २ अर्थश्लेष ।

उदाहरण:—

रावन सिर सरोज वन चारी ।
चलि रघुवीर सिलीमुख धारी ॥

❀ ❀ ❀

अजौं तर्‌यौना ही रह्यो, श्रुति सेवत इक अंग ।
नाक बास बेसरि लह्यो, बसि मुकुतन के संग ॥

पहले उदाहरण में सिलीमुख के दो अर्थ हैं—१—बाण २—भौंरा दूसरे उदाहरण में तर्‌यौना (कर्णफूल, तरा नहीं), श्रुति (वेद और कान), नाक (नासिका और स्वर्ग) मुकुतन (मोती और जीवन्मुक्त) के दो दो अर्थ हैं ।

प्र० ३—निम्नलिखित छन्दों में से किन्हीं पांच के लक्षण उदाहरण सहित लिखिए । १०

उदाहरण के लिए कोई एक पूर्ण पद पर्याप्त समझा जायगा—

उपेन्द्रवज्रा, हरिगीतिका, चौपाई, दोहा, घनाक्षरी, मनहरण

उ०—उपेन्द्रवज्रा—इस छन्द के प्रत्येक चरण में जगण, तगण, जगण और दो गुरु होते हैं । जैसे :—

बड़ा कि छोटा, कुछ काम कीजै ।
परन्तु पूर्वापर सोच लीजै ॥
बिना विचारे, यदि काम होगा ।
कभी न अच्छा, परिणाम होगा ॥

हरिगीतिका—इस छन्द में १६, १२ के विश्राम से २८ मात्राएँ होती हैं । जैसे :—

मानस-भवन मे आर्य जन जिसकी उतारें आरती।
भगवान, भारतवर्ष मे गूँजे हमारी भारती॥
हो भद्र भावोद्भाविनी यह भारती हे भगवते!
सीतापते! सीतापते!! गीतामते! गीतामते!!

चौपाई—इस छन्द के प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ हुआ करती हैं। जैसे :—

मणि माणिक मुक्ता छवि जैसी।
अहि गिरि, गज, सिर सोह न तैसी

दोहा—यह मात्रिक अर्द्ध सम छन्द है। इसके पहले और तीसरे चरण में १३, १३ तथा दूसरे और चौथे में ११, ११ मात्राएँ होती हैं।
जैसे :—

मेरी भव बाधा हरौ, राधा नगरि सोइ।
जा तन की झाँई परैं, स्यामु हरित दुति होई॥

मनहरण (कवित्त या घनाक्षरी)—इसके प्रत्येक चरण में ३१ अक्षर या वर्ण होते है। १६-१५ पर यति होती है। जैसे :—

नाच रही तरल तरगे स्वच्छ सागर में,
बोल रहे विविध विहंग रम्य वन में।
छा रही निराली हरियाली मजु मेदिनी मे,
जग रही जगमग ज्योति है गगन मे॥
लोचन लुभाते हुए लोल वृत दोल पर,
फूल रहे फूल कर फूल उपवन में।
किस अनजाने जग-जीवन के स्वागत को,
उड़ रही सरस सुगंधि है पवन मे॥

प्र० ४—प्रथम प्रश्न पत्र के प्रथम अवतरण में कौन सा रस है? उसका आश्रय कौन है और कौन आलम्बन? समझा कर लिखिए ५

उ०—जिससे हृदय द्रवीभूत हो जाय उसे रस कहते हैं। रसों की संख्या ६ है। प्रत्येक रस का एक स्थायी (सदा रहने वाला) भाव होता है जो कारण पाकर अंकुरित हो उठता है। उसको जागृत करने मे जो सहायक रूप से आते हैं वे 'विभाव' कहलाते हैं। ये दो तरह के होते हैं—आलंबन और उद्दीपन। जिनके आलंबन से स्थायी भाव उत्पन्न होते हैं वे आलंबन और जिसके कारण वे भाव उद्दीप्त होते या बढते हैं वे उद्दीपन कहलाते हैं। यहाँ करुण रस से पुष्ट विप्रलम्भ शृंगार है। गोपियाँ आश्रय तथा उद्धव आलबन हैं। उद्धव की लाई हुई प्रेम-पत्रिका उद्दीपन कही जा सकती है। गोपियो के मन म रस का उत्पत्ति हुई है, अत वे आश्रय है। उद्धव उस रस को उत्पन्न करने मे कारण स्वरूप आये है, अतः वे आलम्बन हैं।

प्र० ५ (1) 'युग की बड़ा विभूतियां काल-प्रसूत होती हैं' कबीर पदावली म इस सम्बन्ध म क्या उक्त दी गयी है? १५

उ०—प्रसिद्ध इतिहासकार बकले का कथन है कि युग की बड़ी विभूतियाँ कालप्रसूत होती है। कबीर के सम्बन्ध मे तो यह बात पूर्णरूप से स्पष्ट है। धर्म के सच्चे रहस्य को भूलकर हिन्दू तथा मुसलमान कृत्रिम विभेदों द्वारा उत्तेजित होकर धर्म क नाम पर अधर्म कर रहे थे। ऐसे समय मे सच्चे मार्ग के प्रदर्शन का श्रेय कबीर को है। कबीर ने इन दोनों जातियों के विरोध को दूर करने का प्रयत्न किया, यहा उनका आन्तरिक अभिलाषा थी। तत्कालीन परिस्थितियों का अध्ययन करक उन्होंने अच्छी तरह स समझ लिया था कि विरोध का मूल कारण अध विश्वास है। अतः

कह हिन्दू मोहि राम पियारा, तुरुक कहे रहमाना।
आपस मे दोउ लरि लरि मुए, मरम न काऊ जाना॥

ऐसी उक्तियों से उन्होंने इस विरोध का दूर करने का सफल प्रयत्न किया।

जाति भेद द्वेय और हानिप्रद है, इसका प्रचार भी पहले पहल कबीर ने ही किया। मुसलमानों क आगमन से हिन्दू समाज पर एक और भी बड़ा भारी प्रभाव पड़ा था। उसने देखा कि मुसलमानों के यहाँ ऊँच नीच, द्विज-द्रश

का भेद नहीं है, अतः ऐसे समय भक्ति मार्ग में सबको एक समान बतलाकर कबीर ने हिन्दू समाज का बड़ा उपकार किया।

कबीर ने देखा कि बाह्याडम्बरों को ही लोगों ने धर्म समझ रखा है। धर्म के वास्तविक तत्व को लोग भूल गये हैं। हिन्दू शास्त्रों के अनुसार परमात्मा विश्वव्यापी है। मुसलमानों का सूफी मत भी इसी सिद्धान्त का प्रतिपादन करता था। ऐसी दशा मे दोनों जातियाँ क्यों न एक साथ मिल कर रहें। इसी ध्येय को सामने रखा और यह कह कर कि :—

'हिन्दू तुरुक की एक राह है सतगुरु दियो बताई'

निर्गुण ब्रह्म की उपासना का मार्ग चलाया, जिस पर दोनों जातियाँ बेखटके चल सकती थीं। कहना न होगा कि कबीर अपने इस प्रयत्न मे अच्छी तरह सफल हुए। उनके इस प्रयत्न का ही यह परिणाम है कि आज हिन्दू और मुसलमान दोनों उनके अनुयायी देख पड़ते हैं तथा बड़ी श्रद्धा के साथ उनके नाम का स्मरण किया करते हैं।

अथवा

प्र० ५ (ii)—"कवितावली तुलसीदास के समय समय पर लिखे हुए पदो का सग्रह मात्र है।" इस कथन का पुष्टि कीजिए। १५

उ०—राम-चरित-मानस की भाँति कवितावली प्रबन्ध काव्य नहीं है। यद्यपि इसका सम्पादन प्रबन्ध काव्य के रूप म किया गया है, तथापि प्रबन्ध काव्य में जिन जिन बातों की आवश्यकता होती है उनका इसमें सर्वथा अभाव है। प्रबन्ध काव्य मे घटनाओं की शृंखला इस प्रकार जुड़ी हुई रहती है कि उसमें से एक भी कड़ी पृथक् नहीं की जा सकती। उसमें एक पद का दूसरे पद के साथ इतना घनिष्ट सम्पर्क रहता है कि कथा की परम्परा का बिना जाने अर्थ तथा भाव को समझना कठिन हो जाता है। मुक्तक काव्यों में यह बात नहीं होती। उनमें प्रत्येक छन्द अपने भाव तथा अर्थ के लिए स्वतन्त्र रहता है, उसे दूसरे छन्द की अपेक्षा नहीं रहती। 'कवितावली' मे भी यही बात है। इसका प्रत्येक छन्द स्वतन्त्र सा जान पड़ता है। प्रत्येक काण्ड के आरम्भ, मध्य,

तथा अन्त के छन्दों को देखने से यह बात स्पष्ट हो जाती हैं। विशेषतः उत्तर कांड के छन्दों को देखने से तो इसके मुक्तक काव्य होने में किसी प्रकार का सन्देह नहीं रह जाता। इस कांड मे जितने छन्द हैं, उनका पुस्तक के चरित नायक श्रीरामचन्द्र जी के चरित्र से कोई सम्बन्ध हा नहीं है। पूरा काण्ड देवताओं की स्तुति तथा लेखक की अपनी दीनता के प्रदर्शन मे ही समाप्त कर दिया गया है। यहाँ तक कि काशी के महामारी प्रकोप पर भी कई कवित्त दिये गये हैं जिनका कथानक से कोई विशेष सम्बन्ध नहीं है।

कवितावली के छन्दों को पढने से ऐसा ज्ञात होता है कि इसमें गोस्वामी जी की छात्रावस्था से लेकर बृद्धावस्था तक की समस्त रचनाएँ सम्मिलित की गई हैं। अतः यह स्पष्ट है कि गोस्वामी जी के परलोकवास के पश्चात् उनके किसी भक्त अथवा शिष्य ने इसका सम्पादन करके छन्दो को यथा स्थान रखकर कांडों का विभाग कर दिया है। सवत् १६३१ से लेकर संवत् १६८० तक की रचनाएँ इसमे मिलती हैं।

'कवितावली' के कतिपय छन्दो का भाव रामायण (रामचरितमानस) से ज्यों का त्यो मिलता है। उदाहरण के लिए—

चित्रकूट जनु अचल अहेरी।
चुकै न घात मार मुठ भेरी॥
(अयोध्या कांड)

का

चित्रकूट अचल अहेरि बैठ्यो घात मानों,
पातक के व्रात घोर सावज सँहारि है
(कवितावली उ० कॉड)

के साथ पूर्ण साम्य है। इसी तरह कुछ छन्दों का वाक्यविन्यास 'विनय पत्रिका से मिलता है। विनय पत्रिका के "तिन रंकन को नाक संवारत हौं आयो नकवानी" का कवितावली के "नाक सँवारत आयो हौ नाकहि नाहिं बिना कहि नेक निहोरो" के साथ पूर्ण साम्य है। गीतावली का—"सोइ प्रभु कर परसत टट्यो जनु हतो पुरारि पढायो' चरण कवितावली के

"तुलसी सो राम के, सरोज पानि परसत ही,

टूट्यो मानों बारे तें पुरारि ही पढ़ायो है" चरण से

ज्यों का त्यों मिलता है। कुछ छन्द ऐसे भी हैं जो कवि की वृद्धावस्था के समय रचे गये हैं। उदाहरण के लिए :—

जरठाइ दिसा, रवि काल उग्यो, अजहूँ जड़ जीव न जागहिरे

❀ ❀ ❀ ❀

कियो न कछू, करिबो न कछू, कहिबो न कछू, मरिबोई रहो है

आदि पद्य पंक्तियाँ स्पष्टतः वृद्धावस्था की ओर संकेत कर रही हैं।

उपर्युक्त उदाहरणों से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि कवितावली के छन्दों को गोस्वामी जी ने किसी निश्चित समय पर न बनाकर समय समय पर उनकी रचना की थी। अत: यह ग्रन्थ (कवितावली) उनके समय समय पर लिखे हुए छन्दों का संग्रह मात्र है।

प्र० ६—'भूषण' कवि के शिवाजी के समकालीन होने के विषय में आपका क्या मत है? १५

उ०—हिन्दी भाषा से यत्किंचित् ज्ञान रखने वालों में भी कदाचित् ही कोई ऐसा हो जिसमें 'भूषण' कवि का नाम न सुना हो। यह महाशय अपने रस के एक ही कवि हुए हैं। जिस समय हिन्दी के शृंगारी कवि राजाश्रय पाकर हिन्दी साहित्य को केवल शृंगारपूर्ण रीति-ग्रन्थों से भर रहे थे उस समय इन्होंने वीर रस को अपना कर, अपनी उच्चकोटि की कविताओं से हिन्दी भाषा के साहित्य के एक विशेष अंग की पूर्ति की।

इनका जन्म संवत् १६७० के आस पास माना जाता है। २० वर्ष तक बिलकुल अपढ़ रहने के बाद, अपने बड़े भाई चिन्तामणि की पत्नी के एक कटुवाक्य पर यह घर छोड़कर बाहर निकले, और बड़ी लगन के साथ इन्होंने हिन्दी साहित्य का अध्ययन किया। प्रतिभाशाली थे ही, परिश्रम करते ही इनकी प्रतिभा चमक उठी। हिन्दुओं की तत्कालीन गिरी हुई दशा का इनपर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा और इन्होंने अपनी कविता के लिए वीर रस को ही समय के अनुकूल समझा। इनकी कविता के अनुकूल ही इन्हें

छत्रपति शिवा जी महाराज जैसा नायक भी मिल गया और इन्होंने उन्हें ही अपने काव्यों का नायक बनाकर, अपनी समस्त रचनाएँ उन्हीं के नाम पर बनाते हुए लिखा कि :—

> ब्रह्म के आनन ते निकसे ते, अत्यन्त पुनीत तिहूँपुर मानी।
> राम-जुधिष्ठिर के बरने, बल्मीकहु व्यास के अंग सुहानी।
> भूषण यों कलि के कवि राजन, राजन के गुन पाय नसानी।
> पुण्य-चरित्र सिवा सरजा-जस न्हाय पवित्र भई पुनि बानी।

उनके काव्य नायक शिवाजी ने भी अपना राजकवि बनाकर उनका यथोचित सम्मान किया। जब तक वे जीवित रहे, उन्होंने 'भूषण' को अपने दरबार से अन्यत्र न जाने दिया।

इधर कुछ विद्वानों ने 'भूषण' के शिवाजी के समकालीन होने में संदेह किया है। किन्तु उनका यह सन्देह निराधार है, क्योंकि उनके रचित ग्रन्थों में कई ऐतिहासिक बातें ऐसी हैं जो उन्हें शिवाजी का समकालीन होना सिद्ध करती हैं।

१—सबसे बड़ा प्रमाण उनके 'शिवराज भूषण' नामक ग्रन्थ के अंत में दिया हुआ दोहा है। इसमें उन्होंने अपने ग्रन्थ की समाप्ति का संवत् १७३० दिया है। महाराज शिवाजी १७३० में वर्तमान थे, अतः उनके समकालीन होने में कोई सन्देह नहीं रह जाता।

२—चित्रकूट के महाराज रुद्ररामसोलंकी ने महाकवि 'भूषण' को भूषण की उपाधि दी थी जो इतनी प्रसिद्ध हुई कि उसके कारण कवि के वास्तविक नाम का ही पता नहीं चलता। 'भूषण' ने अपने 'शिवराज भूषण' ग्रन्थ में इसका भी उल्लेख करते हुए लिखा है कि :—

> कुल सुलंकि चितकूट-पति, साहस-सील-समुद्र।
> कवि भूषण पदवी-दई, हृदय राम-सुत रुद्र

यह महाराज संवत् १७२५ के लगभग वर्तमान थे, अतः इस दोहे से भी यह शिवा जी के समकालीन ठहरते हैं।

३—शिवा जी महाराज का स्वर्गवास सवत् १७३० में हुआ, अर्थात् 'शिवराज भूषण' की रचना के बाद वह ७ वर्षों तक और भी जीवित रहे। इन सात वर्षों में जो घटनाएँ हुईं, उनका कोई उल्लेख इस ग्रन्थ में नहीं मिलता। इससे स्पष्ट है कि 'शिवराज भूषण' ग्रन्थ १७३० ही मे समाप्त हो चुका था। अतएव जो कुछ विद्वान 'शिवराज भूषण' के दोहों का भिन्न अर्थ लगाने का प्रयत्न करते हैं वह ठीक नहीं जान पड़ता। ग्रन्थ १७३० ही में समाप्त हुआ और शिवा जी उस समय वर्तमान थे।

४—'भूषण' के 'शिवाबावनी', शिवराज भूषण' में अनेक छन्द ऐसे हैं जिनके वर्णन से ऐसा ज्ञात होता है कि वे घटनाएँ कवि की आँखों देखी हुई हैं।

५—रायगढ़-वास का वर्तमान काल मे वर्णन, तथा अनेक स्थानों पर मगल कामना तथा आशीर्वाद आदि का उल्लेख भी उन्हे शिवाजी का राजकवि सिद्ध करता है।

७—प्रसिद्ध ऐतिहासिक श्री यदुनाथ सरकार, और केलूसकर जैसे विद्वानों ने भी अपनी ऐतिहासिक खोजों के आधार पर 'भूषण' को शिवा जी का राज कवि होना सिद्ध किया है।

अतः उपर्युक्त प्रमाणों को देखते हुए यह स्पष्ट है कि 'भूषण' शिवाजी महाराज के समकालीन थे।

अथवा

प्र० ६— (ii) निम्नलिखित पद्य में क्या सौन्दर्य है ? क्या किसी अन्य कवि ने भी इसी भाव का प्रयोग किया है ? १५

"भीजि बसन तन लिपटि निपट, छवि अंकित है अस
नैननि के नहिं बैन, बैन के नैन नहीं जस"

उ०—काव्य की परिभाषा करते हुए आचार्यों ने उसे 'रसात्मक वाक्य' कहा है। साधारण वाक्य और काव्य में जो अन्तर है, वह यही कि साधारण वाक्य ने इन श्रोताओं को किसी घटना विशेष का ज्ञान मात्र करा देते हैं। वही

वाक्य जब किसी चमत्कार पूर्ण उक्ति के द्वारा श्रोता के मन में हर्ष, विषाद या अन्य किसी भाव का उद्वेग उत्पन्न कर देता है, तब हम उसे काव्य कहने लगते हैं। महाकवि बिहारी यदि सीधे सादे शब्दों में महाराज जयसिंह से यह कह देते कि आप अपनी छोटी रानी के प्रेम में इतने मुग्ध हो गये है कि राज-काज तक नहीं देखते, तो सम्भव है राजा पर वह प्रभाव न पड़ता, जो उनके चमत्कार पूर्ण दोहे

नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहि विकास इहि काल।
अली कली ही तें बिध्यो। आगे कौन हवाल॥

ने राजा पर डाला। साधारण वाक्य के कहने पर यह भी बहुत सम्भव था कि महाराज धृष्टता समझ क्रुद्ध हो जाते।

महाराज बीरबल की मृत्यु का समाचार सुनाने का साहस जब अकबर के दरबार के किसी भी सभ्य को न हुआ तो केशवदास जी ने

भूपति सब याचक भये, रह्यौ न कोऊ लैन।
इन्द्रहु को इच्छा भई, गयो बीरबल दैन॥

कहकर ही अकबर पर प्रभाव डाला था। तात्पर्य वह है कि कविता का मुख्य सौन्दर्य उसकी चमत्कार पूर्ण उक्ति ही है। यदि इसका अभाव हो तो वह केवल साधारण वाक्य कहा जायगा।

उपर्युक्त पद मे भी यही सौन्दर्य है। कवि शरीर से लपटे हुए भीगे वस्त्रों की शोभा पर इतना मुग्ध हुआ है कि उसे यथार्थ वर्णन करते नहीं बनता। अतः वह यह कहकर पीछा छुड़ाता है कि इस शोभा का यथार्थ वर्णन तो आँखें ही कर सकती हैं क्योंकि वे ही शोभा को देख रही हैं। पर उनके पास बोलने की शक्ति ही नही है, और जो वाक्य शक्ति वर्णन कर सकती है, उसके पास आँखें नहीं हैं।"

उक्ति मनोहर है, परन्तु पुरानी है। महात्मा तुलसीदास जी इसका उपयोग करते हुए बहुत पहले कह चुके हैं कि:—

'गिरा अनयन, नयन बिनु बानी'

प्र० ७—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की कविता म वे कौन से तत्व है जा उसे प्राचीनता से पृथक् करते तथा नवीन धारा के सन्निकट लाते है? १५

उ०—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की कविता मे सबसे बड़ा तत्व उनकी देश-भक्ति है जो उन्हें प्राचीनता से पृथक् करके नई काव्य धारा की ओर अग्रसर करता है। इनके पहले कविता की वही पुरानी परिपाटी चली आ रही थी। कवि लोग या तो राजाओ या अपने आश्रय दाताओं की प्रशसा के पुल बॉधते थे अथवा नायिका भेद या अलङ्कारों पर पुस्तके लिखा करते थे। भारतेन्दु अपनी कविताओं मे राष्ट्रीयता का भाव लाये 'देश की गिरी हुई दशा को उठाना कवि का मुख्य लक्ष्य समझ उन्होंने अपने नाटकों तथा कविताओं में स्थान स्थान पर इस ओर सकेत किया। 'नालदेवी' 'भारत दुर्दशा' आदि नाटकों में उन्होंने देश की सच्ची दशा की मार्मिक व्यजना की है। स्वतत्र कविताओं मे भी उन्होंने कहीं देश के अतीत गौरव पर ऑसू बहाए हैं तो कही उसकी वर्तमान अधोगति पर क्षोभ प्रगट किया है। मिश्र देश में जब भारतीय सेना ने विजय प्राप्त की थी तब उनकी छाती गर्व से फूल उठी थी और उन्होने अपने हार्दिक भावों को बड़े ही मार्मिक शब्दों में प्रकट किया था।

भारत की वर्तमान अधोगति पर क्षोभ प्रकट करते हुए वह लिखते है कि :—

हाय। वहै भारत-भुव भारी
सबही विधि सो भई दुखारी

❀ ❀ ❀

हाय चितौर ! निलज तू भारी।
अजहुँ। खरो भारतहिं मॅझारी

❀ ❀ ❀

तुम मे जल नहि जमुना गगा
बढहु-बेगि किन प्रबल तरगा?
बोरहु किन झट मथुरा कासी?
धोवहु यह कलंक की रासी?

भारतेन्दु को तत्कालीन परिस्थितियों से आगे आने वाले समय का बहुत कुछ आभास मिल गया था। अतः 'नीलदेवी' मे उन्होंने इस ओर कैसा सच्चा संकेत किया है—

अपनी वस्तुन कहँ लखि हैं सब हियराई।
निज चाल छोड़ि गहि हैं औरन की धाई॥

उन सामाजिक कुरीतियो की ओर भी भारतेन्दु की गहरी दृष्टि पहुँच गई थी जो हिन्दू समाज को भीतर ही भीतर घुन की तरह पोला करने लग गई थीं। देखिए :—

रचि बहु विधि के वाक्य पुरानन माहि घुसाए।
सैव, साक्त, वैष्णव अनेक मत प्रकट चलाए॥
जाति अनेकन करी, नीच अरु ऊँच बनायो।
खान-पान-सम्बन्ध सबनसो बरजि छुड़ायो॥

❀ ❀ ❀

करि कुलीन के बहुत ब्याह बल बीरजुनारयो।
विधवा ब्याह निषेध कियो विभिचार प्रचारयो॥

❀ ❀ ❀

रोकि विलायत गमन कूप-मंडूक बनायो।
औरन को संसर्ग छुड़ाइ प्रचार घटायो॥

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि आज कल जो राष्ट्रीय भावों से पूर्ण कविताएँ दिखलाई पड़ रही हैं, उनका बीज भारतेन्दु ने ही बोया था। उस समय देश, समाज की दशा पर आँसू बहाने वाला एक भी कवि न था। सभी उसी पुरानी नायिकाभेद, अलंकार छंद वर्णन आदि की चली आई लकीर पर चलने वाले थे। भारत-गौरव पर किसी ने एक पंक्ति भी लिखने की उदारता नहीं दिखलाई। अपनी मातृ-भाषा के सम्बन्ध में यह लिखने वाला उस समय दूसरा कवि कौन था।

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटै न हिय को सूल॥

हिन्दी-विश्व-विद्यालय

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००० वि०)

साहित्य—प्रश्न-पत्र ३

समय ३ घण्टे] [पूर्णाङ्क १००

सूचना—केवल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्न ९ अनिवार्य है सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

१—'हिन्दी साहित्य के इतिहास' से आप क्या तात्पर्य समझते हैं? उसे हम कितने कालों में विभाजित कर सकते हैं और क्यों?

२—'वीर गाथाकाल में वे ही कवि सम्मानित हो सकते थे जो कलम चलाने के साथ ही तलवार चलाने में भी कुशल रहते थे।' इस सिद्धान्त को दृष्टिकोण में रखते हुए तत्कालीन राजनैतिक एवं साहित्यिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

३—विद्यापति, कबीर और जायसी में से किन्हीं दो की भाषा, भाव, शैली तथा काव्य-सम्बन्धी विशेषताओं की मार्मिक तथा युक्ति-संगत आलोचना कीजिए।

४—'सूर और तुलसी' हिन्दी-साहित्याकाश के सूर्य और चन्द्रमा हैं, उनकी जोड़ी अजर और अमर है।' इस कथन की पुष्टि कीजिए।

५—रीति-कालीन कवियों की प्रधान विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। देव, भूषण और पद्माकर में से किन्हीं दो की काव्यगत विशेषताओं का विवेचन कीजिए।

६—'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र' का प्रभाव भाषा और साहित्य दोनों पर गहरा पड़ा। हमारे जीवन और साहित्य के बीच जो विच्छेद पड़ रहा था उसे

उन्होंने दूर किया और साहित्य को नवीन मार्ग दिखाया। इस मत का युक्ति-सहित प्रतिपादन कीजिए।

७—निम्नलिखित किन्हीं चार महानुभावों के सम्बन्ध में उनकी साहित्यिक विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए परिचयात्मक टिप्पणियाँ लिखिए—

(१) मुं० इंशाअल्ला खाँ

(२) महर्षि दयानन्द

(३) पं० बालकृष्ण भट्ट

(४) बाबू मैथिलीशरण गुप्त

(५) श्रीमती महादेवी वर्मा

(६) पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

८—हिन्दी-भाषा के उद्भव और विकास के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट करते हुए स्पष्ट कीजिए कि खड़ी बोली भी उतनी ही प्राचीन है जितनी कि अवधी और व्रजभाषा।

९—'लिपि' में परिवर्तन होने के प्रधान कारणों का उल्लेख कीजिए। नागरी लिपि की कतिपय विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए अ, ए, क, ग, तथा १, ३, ७ के प्राचीन रूप प्रस्तुत कीजिए।

साहित्य-प्रश्न पत्र ३

प्र० १—'हिन्दी साहित्य के इतिहास' से आप क्या तात्पर्य समझते हैं? उसे हम कितने कालों में विभाजित कर सकते हैं और क्यों?

उ०—साहित्य जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब कहलाता है। जिस समय इस चित्तवृत्ति में परिवर्तन होने लगता है उस समय उसके साहित्य में भी परिवर्तन आरम्भ होता है। इन्हीं चित्तवृत्ति को दृष्टि में रखते

हुए साहित्य के साथ इनका सामञ्जस्य दिखलाना ही 'साहित्य का इतिहास' कहलाता है। हिन्दी भाषा के आदि से लेकर अब तक के इस प्रकार के परिवर्तनों का विस्तृत विवेचन हिन्दी-साहित्य' के इतिहास के अन्तर्गत आता है। हिन्दी-साहित्य का विवेचन करने में इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है किसी विशेष समय में लोगों की रुचि विशेष कैसी थी और उसका उद्गम किधर से हुआ। इसी दृष्टि को सामने रखकर हम हिन्दी-साहित्य के इतिहास को निम्नलिखित ४ कालों में विभाजित किया गया है :—

१— आदि काल (वीर गाथा काल) १०५०-१३७५

२—पूर्व मध्य काल (भक्तिकाल) १३७५ १७००

३—उत्तर मध्य काल (रीति काल) १७००-१९००

४—आधुनिक काल (गद्य काल) १९००—अब तक

इन कालों का विभाग रचना की विशेष प्रवृत्ति के अनुसार ही किया गया है। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि उस काल में अन्य प्रकार की रचनाएँ होतीं ही नहीं थी। विशेष प्रवृत्ति जिस प्रकार दृष्टि गोचर हुई उसी को लक्ष्य में रख कर काल विभाग किया गया है। वीर गाथा काल में लोगों की रुचि युद्ध की ओर अधिक थी। राजनीतिक उथल-पुथल के कारण यह समय ही वैसा था अतः रचनाएँ भी उसी प्रकार की गयीं।

इस समय 'खुमानरासो', 'बीसलदेव रासो' तथा पृथ्वीराज रासो जैसे वीर-रस पूर्ण ग्रन्थों की रचना की गई। इसी तरह भक्ति काल में जब हिन्दू जाति नैराश्य के वातावरण में पड़ी हुई थी तब भगवान का पल्ला पकड़ने के सिवा उसके पास अन्य कोई चारा ही न था। अतः इस काल में भक्ति रस पूर्ण कविताओं का ही प्राधान्य रहा। रीति काल में राजनीतिक उथल पुथल बहुत कुछ शान्त हो चुकी थी। राज-दरबारों में हिन्दी-साहित्य के कवियों का आदर होने लगा था। मुसलमान बादशाहों की रुचि शृंगार पूर्ण कविताओं की ओर ही अधिक थी अतः उनके आश्रित कवियों ने नायिका भेद तथा रीति

अन्थों की ओर ही विशेष ध्यान दिया। रीति-ग्रन्थों की प्रचुरता के कारण ही इस काल का नाम 'रीति-काल' पड़ा। आधुनिक काल का नाम गद्य काल इसलिए रखा गया है कि हिन्दी गद्य की नींव इसी काल में पड़ी। फिर धीरे-धीरे विकसित होकर यह गद्य आजकल की अवस्था पर पहुँचा है।

प्र० २—'वीरगाथा काल में वे ही कवि सम्मानित हो सकते थे जो कलम चलाने के साथ ही तलवार चलाने में भी कुशल रहते थे, इस सिद्धान्त को दृष्टिकोण मे रखते हुए तत्कालीन राजनीतिक एवं साहित्यिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उ०—हिन्दी-साहित्य के कालों का विभाग करते समय विद्वानों ने तत्कालीन राजनैतिक स्थिति को विशेष लक्ष्य में रखा है क्योंकि साहित्य पर राजनैतिक उथल-पुथल का बहुत अधिक असर पड़ता है। इन कालों के नामकरण भी इसी सिद्धान्त को लक्ष्य में रखे गये हैं अतः 'वीरगाथा-काल' भी सार्थक नाम है यह वह समय था जब युद्ध सम्बन्धी कविताओं का ही आदर होता था। जिस समय देश में अशान्ति फैली हुई हो जिस समय उत्साह देने वाली वीररस पूर्ण कविताओं का मान होना अनिवार्य ही है। 'काल' का आरम्भ हुआ उस समय देश में चारों ओर घोर अशान्ति तथा राजनीतिक हलचल मची हुई थी। भारतवर्ष में मुसलमानों के आक्रमण होने आरम्भ हो गए थे। पहले सिंध, तथा पंजाब पर अरबों के आक्रमण हुए और फिर धीरे धीरे समस्त उत्तरापथ मुसलमानों के अधीन होने लगा। महमूद गजनवी तथा मुहम्मद गोरी की चढ़ाइयों का यही समय था। पहले तो इन मुसलमान शासकों के आक्रमण केवल लूटमार के उद्देश्य से ही हुआ करते थे पर धीरे धीरे जब उन्होंने यहाँ अपने पैर जमाने आरम्भ किये तथा अपने धर्म इसलाम को लोगों पर तलवार के जोर से लादना आरम्भ किया तो हिन्दू शासकों की आँखें खुलीं। इनके आक्रमणों को रोकने की चेष्टा, हिन्दू राजपूत-राजाओं ने करनी आरम्भ की। इनके अधिकतर धक्के पश्चिम-प्रान्त के निवासियों को ही अधिक सहने पड़ते थे। कन्नौज, अजमेर, अनहलवाड़ा जैसे

बड़े बड़े राज्य उधर ही स्थित थे। उस समय उधर ही की भाषा मे हिन्दी साहित्य का निर्माण हो रहा था क्योंकि वही शिष्ट भाषा समझी जाती थी। कवि तथा भाट-चारण आदि उधर की भाषा में ही अपनी रचनाएँ किया करते थे। हिन्दी के प्रारम्भिक साहित्य का निर्माण उधर ही हुआ अतः वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति की छाप भी उस पर पड़ना स्वाभाविक ही था। तत्कालीन कविताओं की रचना राजाओं के आश्रय में हुई थी और वह लड़ाई भिड़ाई तथा वीरता का समय होने के कारण राजा लोग वैसी रचनाओं का अधिक आदर करते थे। जिसमे उन्हें उनकी प्रशंसा होती थी तथा उन्हें युद्ध के लिए उत्तेजित किया जाता था। बाहरी आक्रमणों को रोकने के अतिरिक्त वे लोग अपनी वीरता का प्रदर्शन करने के लिए आपस मे भी युद्ध किया करते थे। अतः ऐसे युग चंद जैसे कवियों का जो वीरतापूर्ण कविताओं को बनाने के साथ-साथ अपने आश्रय दाता के साथ युद्ध भी कर सकें, विशेष सम्मान होता था। जब देश की दशा ऐसी थी तब उसके साहित्य का सृजन भी तदनुकूल हुआ। वीरोल्लास भरी कविताओं की गूँज देश भर में सुनाई पड़ने लगी। ये वीर गाथाएँ दो रूपों में मिलती हैं। मुक्तक तथा प्रबन्ध, इन वीर गाथाओं का प्रसंग 'युद्ध और प्रेम' ही था। किसी राजा की रूपवती कन्या का समाचार पाकर उस पर चढाई कर देना गौरव का विषय माना जाता था। अतः वीर काव्यों प्रेम या शृंगार का भी मिश्रण रहता था। साहित्यिक प्रबन्ध के रूप में जो ग्रन्थ आज कल प्राप्त है वह 'पृथ्वीराज रासो'। वीर गीतों के रूप में सब से पुरानी पुस्तक 'बीसलदेव रासो' है।

राजा भोज के दरबार में उनकी दानशीलता का अत्युक्तिपूर्ण वर्णन करके लाखों रुपये पा लेने का समय कवियों के लिए बीत चुका था। पांडित्य के चमत्कार की भी विशेष पूछ न थी। उस समय तो जो कवि भाट या चारण पराक्रम पूर्ण गाथाओं की रचना के साथ साथ युद्ध में भी योग दे सकता हो उसी की प्रतिष्ठा थी।

३—विद्यापति, कबीर, और जायसी में से किन्हीं दो की भाषा

हैं। मुझे कोई भी उस स्थान को नहीं बतलाता। तुरन्त ही उसे इस प्रश्न का उत्तर मिलता है 'तपोवन मे रहते हैं अर्थात् वे तपोमय हैं।

अब इनके दूसरे पद की दो पंक्तियाँ देखिए जिसके रहस्य को न समझने वाले इसे अश्लील या नग्न श्रृंगार कह सकते हैं :—

एकहि पलग पर कान्हरे।
मोहि लेख दुर देश भानरे॥

एक पलग पर होने पर भी कृष्ण किसी दूरस्थ देश में शात हो रहे हैं। यहाँ शरीर पलग है, जीवात्मा और परमात्मा का निवास इसी पलंग पर है। पर जो साधक हैं वह कृष्ण रूपी ब्रह्म को इसी पलंग पर पा लेते हैं और जो माया में पड़े हुए हैं उन्हें वे नहीं मिलते।

कबीर का रहस्यवाद निर्गुण रहस्यवाद था। वे एकेश्वरवाद के समर्थक थे जीव ब्रह्म का ही अश है परन्तु माया के बीच में आ जाने के कारण दोनों में भेद प्रतीत होता है। कबीर ने इस भाव को इन दो पक्तियों में कितनी सुन्दरता के साथ व्यक्त किया है :—

जल में कुम्भ, कुम्भ में जल है, बाहर भीतर पानी।
फूटा कुंभ जल जलहिं समाना, यह तत कथहु गियानी॥

किसी जलाशय में पड़े हुए घड़े में भी जल रहता है और उसके बाहर भी, पर घड़े के रहने के कारण दोनों में भिन्नता प्रतीत होती है। घड़े के फूट जाने पर दोनों मिल जाते हैं, बस यही बात जीव और ब्रह्म के विषय में है। माया का पर्दा हटते ही दोनों एक हो जाते हैं।

दोनों के रहस्यवाद में भिन्नता रहते हुए भी कहीं कहीं दोनों की उक्तियों में अद्भुत साम्य भी है। विद्यापति कहते हैं—

सरस वसन्त समय भल पाओलि, दछिन पवन बहु धीरे।
सपनहुँ रूप वचन एक माखिय मुँख से दुरकरु चीरे॥

स्वप्न में रूप के राशि स्वामी ने कहा—'मुँह से घूँघट हटाओ'। मनोविकारों को दूर करो, ईश्वर प्राप्त होंगे। अब देखिए कबीर भी वही बात कह रहे हैं :—

घूँघट का पट खोल रे।
तोको पीव मिलेंगे॥

प्र० ४—'सूर और तुलसी' हिन्दी साहित्याकाश के सूर्य और चन्द्रमा हैं। उनकी जोड़ी अजर और अमर है, इस कथन की पुष्टि कीजिए।

उ०—सूर और तुलसी दोनों ही हिन्दी भाषा के महा कवि हैं। इन दोनों महाकवियों का अपना-अपना स्थान है अतः इनमें कौन बड़ा और कौन छोटा है, यह प्रश्न उठाना ही अनुचित ज्ञात होता है। किसी क्षेत्र से सूर आगे हैं तो किसी में तुलसी। भाषा की दृष्टि से देखा जाय तो तुलसीदास का भाषा पर व्यापक अधिकार था। ब्रज भाषा तथा अवधी में वह समान रूप से कविता कर सकते थे। उधर सूर ने केवल ब्रज की चलती हुई भाषा मे ही कविता की है। परन्तु कविता मे भाषा की अपेक्षा भाव पर ही विशेष विचार किया जाता है। इस दृष्टि से भी तुलसीदास जी आगे हैं। उन्होंने जीवन की भिन्न-भिन्न परिस्थितियों पर रचना करके लोकादर्शों का मार्ग दिखलाया है। सूरदास मे यह बात नहीं पाई जाती। परन्तु साथ ही सूर ने अपने संकीर्ण क्षेत्र में जो प्रतिभा का चमत्कार दिखलाया है उस तक तुलसीदास जी नहीं पहुँच सके। उन्होंने श्रीकृष्ण के केवल बाल-चरित को लेकर जैसी मार्मिक रचना की है वैसी तुलसीदास जी नहीं कर सके। छोटे से क्षेत्र में विशेष चमत्कार दिखलाना सूर ही का काम है। बच्चों के स्वभाव का जैसा चित्रण वह अपने चरितनायक श्रीकृष्ण का कर सके हैं वैसा श्रीराम का बाल चरित वर्णन तुलसी से नहीं बन सका। हाँ, जैसा कहा जा चुका है लोकोपकार की दृष्टि से तुलसीदास जी आगे हैं। भक्ति भावना दोनों में एक सी ही है। एक श्री कृष्ण के अनन्य भक्त हैं तो दूसरे श्री राम के। शुद्ध कवित्व की दृष्टि से भी दोनों

बराबर ठहरते हैं। अतः इन दोनों में छोटे-बड़े का विचार न लाकर इन्हें हिन्दी साहित्याकाश का सूर्य चन्द्रमा कहना ही अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है। सूर्य और चन्द्रमा में हम किसी एक को बड़ा या छोटा नहीं कह सकते। दोनों का अपने अपने स्थान पर महत्व है सूर्य से यदि दिन की शोभा है तो चन्द्रमा से रात की। इसलिए 'सूर सूर तुलसी शसी' वाली उक्ति ठीक ही ज्ञात होती है।

प्र० ५—रीति कालीन कवियों की प्रधान विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। देव, भूषण और पद्माकर मे से किन्हीं दो की काव्यगत विशेषताओं का विवेचना कीजिए :—

उ०—रीति कालीन कवियों की प्रधान विशेषताओं को समझने के लिए तत्कालीन परिस्थितियों पर विचार करना आवश्यक है। 'भक्तिकाल' के बाद कुछ कवियो का ध्यान हिन्दी को संस्कृत भाषा के आधार पर अलंकृत करने की ओर गया। इसके पहले जिन महा कवियों ने हिन्दी मे अपनी रचनाएँ की थी उन्होंने काव्य कला को साधन माना था, साध्य नहीं। परन्तु रीति काल के कवियों ने रीति, अलंकारो को ही सब कुछ मान कर अन्य बातों को गौण स्थान दे दिया। इसका कारण था उस समय की परिस्थिति। राज दरबारों में ऐसी कविताओं का विशेष आदर होने लगा जो शृंगार रसपूर्ण होते हुए कुछ शब्दों का चमत्कार दिखलाने वाला हुआ करती थीं। बस फिर क्या था कवियों को राधा-कृष्ण जैसे नायक-नायिका मिल गये और उन्होंने नरपतियो की विलास-चेष्टाओं की तृप्ति के लिए कलुषित प्रेम की सैकड़ों उद्भावनाएँ कीं।

रीति कालीन कवियों की भाषा प्रौढ और मजी हुई होने लगी। कर्कशता का बहिष्कार करके, कोमल-कोमल शब्द चुनकर रखे जाने लगे। गार्हस्थ्य-जीवन के सुन्दर और सुकुमार चित्र उतारने में ये इस काल के कवि बड़े ही पटु थे। छंदों में भी प्रौढता और परिस्कृति आई। सवैया और कवित्त तो इस काल के प्रधान छन्द बन गये। हाँ, केशव जैसे कुछ कवियों ने विविध छन्दों

में भी रचनाएँ की हैं। रसो में प्रधानता शृंगार की ही थी इसलिए कुछ विद्वानों ने इस काल को शृंगार काल भी लिखा है। इस रस का सारा वैभव कवियों ने नायिका-भेद में ही दिखलाया रस-ग्रन्थो में अधिकाश नायिका-भेद के ही ग्रन्थ हैं। नायिका शृंगाररस का आलम्बन है और आलंबन के अंगों का वर्णन भी बड़े विस्तार के साथ किया गया। नख-शिख वर्णन एक स्वतन्त्र विषय ही हो गया।

देव—रीति कालीन कवियों में देव का स्थान बहुत ऊँचा है ये महाशय भी अन्य रीति कालीन कवियों की भाँति शृगारी कवि थे। इनकी आरम्भिक कविताओं मे शृंगारिकता कूट-कूट कर भरी है, हाँ प्रौढावस्था की रचनाएँ कुछ संयत हुई हैं। इनकी कल्पना बड़ी अद्भुत तथा इनका शब्द भडार बड़ा विस्तृत था। रीति काल के प्रतिनिधि कवियों में सबसे अधिक पुस्तकों की रचना इन्होंने की है। ब्रजभाषा में जितनी सफल रचना यह कर सके उतनी फसन दो एक कवियों को छोड़ कर और कोई नहीं कर सका। कहीं-कहीं पर इनकी कल्पनाएँ बड़ी जटिल भी हो गई हैं। भाषा मे मुहावरों का प्रयोग यह सफलता के साथ करते थे पर अन्य बृज भाषा के कवियों की भाँति शब्दों को तोड़ने मरोड़ने की प्रवृत्ति से यह भी नहीं बच सके। यह महाशय हिन्दी नौ महाकवियों में गिने जाते हैं।

पद्माकर—यह रीतिकाल के अंतिम समय के कवियों में सबसे प्रसिद्ध कवि गिने जाते हैं। इनकी लिखी हुई जगदविनोद हिम्मत बहादुर विरदावली प्रबोध पचासा गंगा लहरी, राम रसायन, पद्मभरण पुस्तकें प्रसिद्ध हैं। जगद विनोद नायिका-भेद का ग्रन्थ है जो जयपुराधीश श्री जगत सिंह के नाम पर बनाया गया था। गगा लहरी, तथा राम रसायन को छोड़ कर इनके सभी ग्रन्थ शृगार रस प्रधान हैं। इनकी भाषा विशुद्ध व्रजभाषा है। इन्हें अपनी रचनाओं में अनुप्रास लाने का बड़ा चाव था कदाचित ही कोई कवित्त या सवैया ऐसा मिले जिसमें अनुप्रास, यमक आदि अलंकारों की छटा न हो। परन्तु अनुप्रासों को लाने की धुन में इनकी रचनाएँ कहीं-कहीं सुन्दर होने के

स्थान पर भद्दी हो गई हैं। शृंगार रस के कवि होने के कारण इनकी 'राम-रसायन' पुस्तक जो कि वाल्मीकि रामायण का अनुवाद है, अच्छी नहीं बन पड़ी। हाँ इनकी मुक्तक रचनाएँ बड़ी मधुर तथा रसीली है।

प्र० ६—'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र' का प्रभाव भाषा और साहित्य दोनों पर पड़ा। हमारे जीवन और साहित्य के बीच जो विच्छेद पड़ रहा था, उसे उन्होंने दूर किया और साहित्य को नवीन मार्ग दिखाया। इस मत का युक्त सहित प्रतिपादन कीजिए।

उ०—वैसे तो हिन्दी गद्य का आरम्भ भारतेन्दु जी से बहुत पहले हो चुका था परन्तु उसे परिमार्जित करके सुन्दर रूप देने का श्रेय उन्हीं को है। इसीलिए वह वर्त्तमान हिन्दी के जन्मदाता कहे जाते हैं। मुंशी सदासुख की भाषा में पडिताऊपन, लल्लू लाल में व्रजभाषापन और सदल मिश्र की भाषा में पूर्वीपन था। बाद में राजाशिवप्रसाद ने जिस गद्य का आरम्भ किया उसमें उर्दूपन अधिक दिखलाई देने लगा। उधर राजा लक्ष्मणसिंह की हिन्दी विशुद्ध होने पर भी आगरे के ठेठ शब्दों से खाली न थी, इसलिए हम कह सकते हैं कि उनकी भाषा में आगरापन अधिक था। भारतेन्दु जी ने इन सभीपनों से हिन्दी गद्य को मुक्तकर उसका सुन्दर और सुसस्कृत रूप बनाया। दूसरी बात यह थी कि उनके पहले हिन्दी का जितना साहित्य प्रकाशित हुआ था वह देश काल के अनुरूप न था। उस साहित्य से हमारे जीवन का कोई संबंध न था बंगाल में नये ढग के अनेक नाटक निकल चुके थे जिनसे देश तथा समाज को नई रुचि का आभास आने लगा था। हिन्दी में भारतेन्दु जी ने यही कार्य किया, उन्होंने ऐसी पुस्तकें लिखीं जिनसे जनता के जीवन पर बड़ा असर पड़ा। देश में राष्ट्रीयता का भाव जाग्रत किया। उनके 'भारत दुर्दशा' 'नीलदेवी' जैसे नाटक जनता में जान डाल देने वाले थे। इस तरह उन्होंने अनेक सामाजिक, देशदेशान्तर सबधी, पौराणिक तथा ऐतिहासिक पुस्तक लिख कर हिन्दी गद्य को नये मार्ग पर लाकर खड़ा कर दिया। इनके पहले केवल भक्ति और शृंगार सम्बन्धी साहित्य का ही सृजन होता था जिससे जनता के वास्तविक जीवन का कोई सम्बन्ध न था। भारतेन्दुजी ने इस विच्छेद को दूर किया।

प्र० ७—निम्नलिखित किन्हीं चार महानुभावों के संबध में उनकी साहित्यिक विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए परिचयात्मक टिप्पणियाँ लिखिए—

उ० १—मुं० इन्शा अल्ला खाँ—यह उर्दू भाषा के प्रसिद्ध शायर थे। इनके पिता मीर मन्शा अल्ला खाँ कश्मीर के रहने वाले थे शाही ज़माने में दिल्ली चले आए और वही दरबारी हकीम हो गये। जब दिल्ली के मुग़ल बादशाह की अवस्था गिरने लगी तब वह मुर्शीदाबाद के नवाब के यहाँ चले गये, वहीं इन्शाअल्लाखाँ का जन्म हुआ। बगाल के नवाब सिराजुद्दौला के मारे जाने पर इन्शा दिल्ली चले आए। वहाँ अपनी अद्भुत प्रतिभा का चमत्कार दिखलाते रहे परन्तु जब गुलाम कादिर बादशाह को अन्धाकर के खजाना लूट कर चल दिया तब इनका निर्वाह भी वहाँ कठिन हो गया और यह लखनऊ चले आए। जब नवाब सआदत अलीखाँ जब गद्दी पर बैठे तब यह उनके दरबार मे आने जाने लगे। दरबार मे इनकी बड़ी प्रतिष्ठा रही पर अंत मे नवाब किसी बात पर इनसे रुष्ट हो गये और उन्होंने इनका वेतनादि सब बन्द कर दिया, इनके दिन कष्ट से कटने लगे।

यह महाशय हिन्दी गद्य के आरम्भ करने वालों में से माने जाते हैं। इनकी लिखी हुई 'उदयभानचरित' या रानी केतकी की कहानी प्रसिद्ध है। इन्होंने ठेठ हिन्दी लिखने की प्रतिज्ञा करके इन्होंने इस कहानी को लिखा था। इनकी भाषा मे फारसी की शैली स्थान स्थान पर मिलती है। जैसे,

'सिर झुका कर नाक रगड़ता हूँ अपने बनाने वाले के सामने जिसने हम सब को बनाया।'

फिर भी आरम्भ कालीन गद्य लेखकों में इनकी भाषा सबसे सुन्दर और तत्कालीन परिस्थिति को देखते हुए मजी हुई है।

२—पं० बालकृष्ण भट्ट—का जन्म संवत् १९०१ मे प्रयाग में हुआ था। आप सस्कृत के बड़े भारी विद्वान थे, हिन्दी पर भी आपका पूरा अधिकार था। सवत् १९३३ में आपने 'हिन्दी-प्रदीप' नामक पत्र निकाला जिसमें

साहित्यिक, राजनीतिक, सामाजिक आदि सभी विषयों पर [ ]विपूर्ण लेख निकलते थे। इनके लेख बड़ी चुटीली भाषा में लिखे जाते थे। उनमें व्यंग की मात्रा बहुत अधिक रहती थी मुहावरों का बड़ा सफल प्रयोग किया करते थे। इनकी भाषा मे पूर्वी समझा बुझाकर के स्थान पर समझाय बुझाय जैसे पूर्वी प्रयोग भी मिलते हैं। अंग्रेजी के Education Standard, Character, Natianal जैसे शब्दों का प्रयोग स्थान-स्थान पर करते थे। इसी प्रकार अरबी फारसी के शब्दों का भी यथेष्ट उपयोग रहता था। 'आँख' 'कान' 'नाक' शीर्षक देकर उन्होंने मुहावरों का बड़ा अच्छा प्रयोग किया है। जैसे—'मैया' आँख बड़ी बला है, इसका आना, जाना, उठना, बैठना सब बुरा है।'

३—श्रीमती महादेवी वर्मा--हिन्दी की स्त्री कवियित्रियों में आपका स्थान सबसे ऊँचा है। आपका जन्म संवत् १६६४ में फरुखाबाद में हुआ। इस समय आप प्रयाग के महिला-विद्यापीठ की प्रिंसिपल हैं। अपने बाल्यकाल में आपने राष्ट्रीय कविताएँ की थीं परन्तु बाद में आपकी कविताएँ राष्ट्र की सीमित भावनाओं को छोड़ कर विश्वव्यापक प्रगति को अपनाया। स्त्री कवियों मे आप रहस्यवाद की एक सफल कवियित्री हैं, आपकी कविताओं में आध्यात्मिक अनुभूति के सफल चित्र स्थान-स्थान पर देखने को मिलते हैं। आप केवल कविता करने में ही यशस्विनी नहीं हैं प्रत्युत सफल गद्य लेखिका भी हैं। आप समालोचना भी अच्छा करती हैं। आपकी लिखी हुई ये पुस्तकें हैं :—

काव्य—नीहार, रश्मि, नीरजा, सान्ध्यगीत, यामा तथा दीप शिखा।

गद्य—अतीत के चल-चित्र, शृंखला की कड़ियाँ, तथा स्मृति की रेखाएँ।

(४) बाबू मैथिली शरणगुप्त—आप अग्रवाल वैश्य हैं। आपका जन्म झाँसी जिले के चिरगाँव नामक स्थान में संवत् १६४३ में हुआ। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जिस समय सरस्वती का सम्पादन करते थे उस समय

आपकी कविताएँ बराबर सरस्वती में निकला करती थीं। आपकी कविताओं को जनता ने बहुत पसन्द किया। कुछ दिनों बाद आपने भारत-भारती नामक एक काव्य लिखा जिसकी बड़ी ख्याति हुई। आपकी कविताओं में देश भक्ति, उच्च आदर्श तथा पवित्रता के भाव भरे रहते हैं। आपकी भाषा शुद्ध खड़ी बोली है। पहले विद्वानों का विचार था कि खड़ी बोली मे उपयुक्त रचनाएँ नहीं हो सकती परन्तु बाबू मैथिली शरण जी ने लोगों की इस धारणा को अन्यथा प्रमाणित कर दिया। आप आजकल के प्रतिनिधि कवि माने जाते हैं। मौलिक ग्रन्थों के अतिरिक्त आपने बहुत से ग्रन्थों का अनुवाद भी किया है।

आपकी लिखी हुई निम्नलिखित पुस्तकें हैं :—

मौलिक :—भारत भारती, जयद्रथ वध, पंचवटी, अनघ, हिन्दू, गुरुकुल, शक्ति, त्रिपथगा, यशोधरा, द्वापर, साकेत-महाकाव्य।

अनुवादितः—मेघनाद-वध, वीरांगना, विरहणी ब्रजांगना, पलासी का युद्ध, रुबाइयात उमर खैयाम।

प्र०—८—'हिन्दी भाषा के उद्भव और विकास' के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट करते हुए, स्पष्ट कीजिए की खड़ी बोली उतनी ही प्राचीन है जितनी की अवधी और ब्रजभाषा।

उ०—आर्य जाति की साहित्यिक भाषा का सबसे पुराना रूप आज कल ऋग्वेद में प्राप्त है। इसकी क्रियाओं को देखने से प्रतीत होता है कि इसमें आर्यों के उस समय की बोल-चाल की भाषा का भी मिश्रण है। उनकी इस साहित्यिक भाषा में भी परिवर्तन होता रहा जिसके नमूने ब्राह्मण तथा सूत्र ग्रन्थों में मिलते हैं। पाणिनि ने इसी काल की भाषा को व्याकरण से बाँधा कि वह स्थायी हो गई और उसका विकास रुक गया। उधर आर्यों की जो बोलचाल की भाषा थी उसमें भगवान बुद्ध ने अपने उपदेशों को देना आरम्भ किया इस तरह उस भाषा का महत्व बढ़ा जो आजकल पाली अथवा पहली प्राकृत के नाम से प्रसिद्ध है। यह पाली उस समय के लोगों की बोल

का ही विकसित रूप है। जब कोई भी भाषा साहित्यिक रूप धारण कर लेती है तथा व्याकरण के नियमों में कस दी जाती है तब उसका विकास रुक जाता है। बोलियों में बराबर परिवर्तन होता रहता है अतः उन्हीं में से किसी दूसरी नई भाषा का प्रादुर्भाव हो जाता है। इस नियम के अनुसार लोगों की बोली में बराबर परिवर्तन होता रहा जो आगे चलकर 'प्राकृत' के नाम से प्रसिद्ध हुई। मध्यकाल में इन प्राकृतों का संस्कृत नाटकों तक में व्यवहार होने लगा। जब प्राकृतों ने भी आगे चलकर साहित्यिक रूप धारण किया तब अपभ्रंश भाषाओं का उद्गम हुआ। इन्हीं अपभ्रंश भाषाओं के शौरसेनी अपभ्रंश से हमारी आधुनिक हिन्दी के भिन्न-भिन्न रूपों का जन्म हुआ। हिन्दी गद्य का जब आरम्भ हुआ तब ब्रजभाषा तथा अवधी का हिन्दी-काव्य ग्रन्थों में प्राधान्य था। इनमें भी ब्रजभाषा अवधी से आगे रही अतएव गद्य में भी पहले पहल ब्रजभाषा का प्रयोग किया गया। आधुनिक गद्य की भाषा खड़ी बोली भी उतनी ही प्राचीन है जितनी ये दोनों भाषाएँ हैं। प्रान्तीय भाषाओं में से ही राजनैतिक तथा अन्य कारणों से कोई भाषा प्रधान पद प्राप्त कर लिया करती है। इस नियम के अनुसार खड़ी बोली भी अपने प्रान्त (मेरठ, बिजनौर तथा दिल्ली के आसपास) बराबर बोली जाती रही पर पद्य में ब्रज भाषा का प्राधान्य होने के कारण तथा लोगों की रुचि उधर ही अधिक होने के कारण ब्रजभाषा का ही बोलबाला रहा परन्तु उस काल में भी खड़ी बोली का व्यवहार बराबर होता रहा। ब्रजभाषा के काल में भी साहित्य में अनेक कवियों ने खड़ी बोली का प्रयोग किया था, परन्तु उसका प्रचार उस समय न हो सका।

९—'लिपि' मे परिवर्तन होने के प्रधान कारणों का उल्लेख कीजिए। नागरी लिपि की कतिपय विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए अ, ए, क, ग, तथा १, ३, ७ के प्राचीन रूप प्रस्तुत कीजिए।

उ०—'लिपि' में परिवर्तन होने का प्रधान कारण लोगों की साहित्यिक अड़चनें हुआ करती हैं। सुविधा के अनुकूल अक्षरों में परिवर्तन होता रहता है तथा नये नये अक्षरों का निर्माण होता चलता है। प्राचीन काल में

ब्राह्मी तथा खरोष्ठी नाम की दो लिपियाँ प्रचलित थीं। इनमें से ब्राह्मी लिपि से (जिसका प्रचार भारत में लगभग ३५० ईस्वी तक रहा) आधुनिक नागरी लिपि का विकास हुआ। नागरी लिपि का प्रयोग उत्तर-भारत में दशवीं शताब्दी के प्रारम्भ से मिलता है किन्तु दक्षिण भारत में आठवीं शताब्दी तक के लेख पाए गये हैं। वहाँ की नागरी लिपि 'नदि नागरी' के नाम से प्रसिद्ध है। इस लिपि की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसके अक्षरों के लिखने तथा बोलने के रूपों में कोई अन्तर नहीं होता। अन्य लिपियों में यह बात नहीं पाई जाती। अंग्रेज़ी में ए लिखकर उसका 'अ, आ' आदि उच्चारण किए जाते है। उर्दू में 'अलिफ' लिखकर 'अ, आ आदि उच्चारणों का काम लिया जाता है पर नागरी लिपि में यह बात नहीं पाई जाती। दूसरी विशेषता यह है कि इस लिपि में हम प्रत्येक भाषा के शब्दों को ज्यों का त्यों लिख सकते हैं। अन्य लिपियों में यह सामर्थ्य नहीं है। प्रयोग का शुद्ध रूप उर्दू की खरोष्टी लिपि में लिखा ही नहीं जा सकता।

अ—प्र त्र प अ अ अ

ए— घ ए ए

क— + ∸ ÷ क क क

ग— ^ ८ न ग ग

१— — ৲ ৲ ৲ १ १

२— ≡ ≡ ≡ २ २

७— ७ ७ ७ ७

नोट :—इन अक्षरों के ब्लाक बनना चाहिये था किन्तु जल्दी में बन न सके, संकेत लिपि में देख लें।

हिन्दी विश्व-विद्यालय

(मध्यमा परीक्षा (संवत् २००० वि०)

साहित्य—प्रश्न-पत्र २

समय ३ घण्टे] [पूर्णाङ्क १००

सूचना—केवल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए, जिनमे पहला और सातवाँ आवश्यक है। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

१—नीचे लिखे अवतरणों मे से केवल तीन के, सन्दर्भ-सहित, भाव स्पष्ट कीजिए :—

(क) शुद्ध बुद्धि तो सदैव निर्लिप्त रहती है। केवल साक्षी-रूप से वह सब दृश्य देखती है। तब भी इन सासारिक झगडों में उसका उद्देश होता है कि न्याय पक्ष विजयी हो—यही न्याय का समर्थन है। तटस्थ की यही शुभेच्छा सत्व से प्रेरित होकर समस्त सदाचारो की नींव विश्व मे स्थापित करती है। यदि वह ऐसा न करे तो अप्रत्यक्ष रूप से अन्याय का समर्थन हो जाता है। हम विरक्तों को भी इसीलिए राजदर्शन की आवश्यकता हो जाती है।

उ०—यह अवतरण अजातशत्रु नामक नाटक से लिया गया है। महात्मा गौतम जिस समय राजा बिम्बसार के यहाँ पधारे थे उस समय बातों ही बातों वासवी ने कहा कि करुणामूर्ति! हिंसा से रगी हुई वसुन्धरा आपके चरणों के स्पर्श से अवश्य ही स्वच्छ हो जायगी' यह सुनकर गौतम ने उत्तर दिया कि हम विरक्तों को वैसे तो राज भवनों में जाने की कोई विशेष आवश्यकता नहीं। पर हाँ कहीं अन्याय का समर्थन न हो जाय इसलिए कभी कभी न्याय के पक्ष के लिए हमे राज-दर्शन करना पड़ता है, क्योंकि हम जैसे तटस्थों का यही प्रयोजन होना है कि समार मे सदाचारों की स्थापना हो। अन्यथा

शुद्ध बुद्धि तो निर्लिप्त रहती है। उसे सासारिक झगडो से कोई प्रयोजन ही नहीं होता।

(ख) घोर अपमान! अनादर की पराकाष्ठा और तिरस्कार का भैरव-नाद!! यह असहनीय है। धिक्कारपूर्ण कोशल-देश की सीमा कभी की मेरी आँखो से दूर हो जाती, किन्तु मेरे जीवन का विकास-सूत्र एक बड़े कोमल कुसुम के साथ बँध गया है। हृदय नीरव अभिलाषाओं का नीड़ हो रहा है। जीवन के प्रभात का वह मनोहर स्वप्न विश्व भर की मदिरा बनकर मेरे उन्माद की सहकारिणी कोमल कल्पनाओ का भण्डार हो गया।

उ०—यह अवतरण 'अजातशत्रु' नाटक से लिया गया है। कोशल के राजकुमार विरुद्धक की धृष्टता पर क्रुद्ध होकर उसके पिता प्रसेनजित ने उसे युवराज-पद से तथा उसकी माता को राजमहिषी पद से वञ्चित कर दिया था। विरुद्धक वहाँ से रूठ कर अपने प्रकोष्ठ मे आया और एकात मे मन ही मन सोचने लगा कि—"पिता जी ने मेरा घोर अपमान किया है। उन्होने जो मेरा अनादर किया है वह असह्य है। मै तो कभी का इस कोशल देश को छोडकर चला जाता पर क्या करूँ, मेरा हृदय एक फूल के समान कोमल रमणी से आबद्ध हो गया है (विरुद्धक का तात्पर्य मल्लिका से है) अतः हृदय मे तरह तरह की अभिलाषाएँ भरी पड़ी हैं। अपने जीवन के प्रारम्भिक काल मे मैने उसे पाने की अभिलाषा की थी और तरह तरह की कोमल कल्पनाओ को अपने हृदय में स्थान दिया था पर वे सब स्वप्न ही प्रमाणित हुई (क्योकि बाद में सेनापति बन्धुल के साथ मल्लिका का विवाह हो गया।)

(ग) "साहित्य के भीतर पहले तो वे सब कृतियाँ आती हैं जिनमे भाव-व्यजक या चमत्कार-विधायक अश पर्याप्त होता है। फिर उन कृतियों की रमणीयता और मूल्य हृदयगमन कराने वाली समीक्षाएँ या व्याख्याएँ। अर्थ-बोध कराना, किसी बात की जानकारी कराना मात्र, जिस कथन या प्रबन्ध का उद्देश्य होगा वह साहित्य के भीतर न आयेगा और चाहे जहाँ जाय।"

उ०—उपर्युक्त अवतरण श्री प० रामचन्द्र शुक्ल द्वारा लिखित 'साहित्य का स्वरूप' नामक निबध से लिया गया है। इस निबन्ध मे विद्वान लेखक ने साहित्य के स्वरूप पर बडी मार्मिक विवेचना की है। इस अवतरण मे लेखक ने जो कुछ लिखा है उसका भाव यह है कि जिस प्रबन्ध मे भावपूर्ण या चमत्कार दरशाने वाली उक्तियाँ नहीं हुआ करतीं उसे साहित्य मे परिगणित नही किया जा सकता क्योंकि भावोन्मेष और चमत्कारपूर्ण अनुरञ्जन ही साहित्य का पहला लक्षण है। जिस वाङ्मय से न तो कोई सुन्दर भाव प्रदर्शित होता हो और न कोई चमत्कारपूर्ण युक्ति प्रकट होती हो वह साहित्य नही कहा जा सकता। वह तो केवल किसी बात की जानकारी प्राप्त कराने का साधन मात्र होगा।

(घ) विद्रोह हुआ उसके प्रस्थान के चन्द हफ्तो बाद ही उस परतत्र देश मे और हुआ उन्ही मूखो द्वारा, जिन्होंने उन महान के मुँह पर थूका था। सत्ता धारियो के रक्त से पृथ्वी लथपथ हो उठी और पृथ्वी के दर्पण मे झाँक कर आकाश के कपोल भी आ रक्त हो उठे। धुँआ उठा, चिनगारियाँ चमकी, आग लगी, ज्वाला मुखी फूटे मगर कब? जब सूलो पर टाँग कर 'अवतार' बना दिया गया।

आह री दुनियाँ! हाय रे उसके समझदार बच्चे!

उ०—उपयुक्त अवतरण श्री 'उग्र' लिखित 'अवतार' नामक निबन्ध से लिया गया है। इसमे उन्होने ससार की अज्ञानता का प्रदर्शन करते हुए दिखलाया है कि मनुष्य भी कैसा विचित्र प्राणी है। इसके हृदय का पता लगाना अत्यन्त कठिन है। विपत्ति पडने पर यह 'अवतार' 'अवतार' पुकारता है और जब 'अवतार' इसके बीच मे आता है तब यह उसे पहचानता तक नही। महात्मा ईसा, जैसे महात्माओ के साथ इसने कैसे कैसे सलूक किये। महात्मा ईसा ने अत्याचार पीडित जनता को अत्याचार के प्रति निडर होने की सलाह दी तो इसने उसे सूली पर चढा दिया। उसके उपदेशों का असर हुआ सही परन्तु उसके शूली पर चढ जाने के कुछ सप्ताह बाद और यह विद्रोह उन लोगो ने ही किया जिन्होने जीवित रहते उस पर घृणित आक्रमण

किये थे। इन मूर्खों ने उसे तब पहचाना जब वह सूली पर चढ़कर अवतारों में गिना जाने लगा था। इसीलिये लेखक संसार की इस समझदारी पर तरस खाते हुए कहता है कि 'आह री दुनियाँ। हाय रे उसके समझदार बच्चे।'

इ—कवित्व स्वच्छन्दता-पूर्वक स्वर्ग के छाया-पथ पर आनन्द से गुनगुनाता हुआ विचरण करे, अथवा वह स्वर्गंगा के निर्मल प्रवाह में निमग्न होकर अपने पृथ्वीतल के पापों का प्रक्षालन करे, लेखक उसे आयत्त करने की चेष्टा नहीं करता। उसकी तुच्छ तुकबन्दी सीधे-मार्ग से चलती हुई राष्ट्र किंवा जाति-गंगा में ही एक डुबकी लगा कर हर-गंगा गा सके, तो वह इतने से ही कृतकृत्य हो जायगा। कहीं उसमें कुछ बात का उल्लेख हो जाय तो फिर कहना ही क्या है।

उ०—यह अवतरण बाबू मैथिली शरणगुप्त द्वारा लिखित 'कल्पना और यथार्थ' शीर्षक लेख से लिया गया है। कवित्व के सम्बन्ध में अपने विचारों को प्रकट करते हुए लेखक ने लिखा है कि कवित्व चाहे स्वर्ग में विचरण करे या पृथ्वी पर लेखक उसी सीमित करने की चेष्टा नहीं करता। उसकी तुच्छ तुकबन्दी में यदि राष्ट्र अथवा जाति पर भी कुछ लिखा जा सके तो वह अपने को धन्य समझता है। और कहीं इसके अतिरिक्त अन्य विषय भी उसमें आ जाँय तब तो कहना ही क्या है। तात्पर्य यह है कि काव्य की शोभा केवल कल्पना या ऊँची उड़ान भरने में ही नहीं है। उसमें कुछ वास्तविकता भी होनी चाहिए जिससे राष्ट्र या जाति का कुछ उपकार हो सके। वह केवल मनोरञ्जन ही की वस्तु न रह जाय।

प्र० २—'प्रसाद' जी के नाटक मरणान्त भले ही हो किन्तु हैं मानवता के लिए प्रसादान्त—इस कथन पर अपने विचार प्रकट करते हुए दिखलाइए कि वे आज की नहीं, आगामी कल की चीज़ है।

उ०—बंगाल के प्रसिद्ध नाटककार द्विजेन्द्रलाल राय की सम्मति थी कि 'जिस नाटक में अन्तर्द्वन्द्व दिखाया जाता है वही उच्चश्रेणी का होता है' द्विजेन्द्र बाबू का यह कथन कुछ अंश में ठीक तो है परन्तु केवल अन्तर्द्वन्द्व

ही नाटक का सर्वस्व नही है। अन्तर्द्वन्द्व से नाटक मे चमत्कार अवश्य आता है परन्तु बाह्यद्वन्द्व का (अर्थात् जगत्) जिससे जीवन का घनिष्ठ सम्पर्क रहता है, नाटक के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अतः हिन्दी के प्रसिद्ध नाटककार रायकृष्णदास जी की राय है कि जो चरित्र मानवता की साधारण गति के समीप होगा वही उसे विशेष शिक्षा देगा। साथ ही विशेष विनोद की सामग्री जुटावेगा। जो दूर है वह केवल कौतुक और आश्चर्य ही का उद्दीपन करेगा। वह, प्रबल प्रतिघात तथा वृत्तियो को विपरीत चक्के खिलाकर उत्तेजित करके अथवा बलवती वासनाओं को दुर्दान्त मानवस्वरूप में अतिचित्रण करके समाज मे कुतूहल उपजावेगा। ऐसे ही नाटक, चाहे वे रचना मे प्रसादान्त क्यो न हो, मानवता के लिए परिणाम में विषादान्त होते हैं। किन्तु जहाँ वासनाओं के चरित्र के साथ उत्थान और पतन तथा सघर्ष होगा, साथ ही उत्कट वासनाओं का आरम्भ होकर शान्त हृदय मे अवसान होगा, वह नाटक मरणान्त भले ही हो किन्तु है मानवता के लिए प्रसादान्त। प्रसाद जी के नाटको मे यही विशेषता है। अजातशत्रु का अतिम दृश्य इसका प्रमाण है। यद्यपि अत मे बिम्बसार का लडखडाता यवनिका पतन के साथ उसके मरण का द्योतक है, किन्तु जिन वाक्यो को कहता हुआ वह लड़खडाता है वे वाक्य तथा उसी क्षण भगवान गौतम का प्रवेश, बिम्बसार के हृदय की तथा उस अवसर की पूर्ण शान्ति के सूचक हैं।

'प्रसाद जी' के नाटकों में अन्तर्द्वन्द्व तथा बाह्यद्वन्द्व दोनो का समुचित सम्मिश्रण है। ऐसे नाटकों का हिन्दी मे एकदम अभाव था। हिन्दी ससार मे ये नाटक एक नये युग के विधायक हैं अतः वे आज की नहीं आगामी कल की चीज हैं।

प्र० ३—निम्नलिखित लेखको मे से किन्ही तीन की गद्य शैली के लक्षण निर्दिष्ट कीजिए और दिखलाइए, उनके लेखों मे कहाँ तक व्यक्तित्व की स्पष्ट छाप है।

राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द', माधवप्रसाद मिश्र, महावीरप्रसाद द्विवेदी, रामचन्द्रशुक्ल तथा बदरीनाथ भट्ट।

३०—**राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द** – राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द 'मिली जुली रोजमर्रा की बोलचाल' की भाषा के पक्ष पाती थे। अपने साहित्य जीवन के प्रारम्भिक काल मे वह विशुद्ध हिन्दी के पक्षपाती थे परन्तु शिक्षा विभाग मे आने के बाद 'मिली जुली' भाषा के हिमायती बन गये। उन्होंने अपने निबन्धों मे दो तरह की शैलियों का प्रयोग किया है। पहली शैली मे तो वह विशुद्ध हिन्दी के शब्दो का व्यवहार करते थे। 'राजा भोज का सपना', 'दमयन्ती की कथा' आदि लेखों मे उन्होने इसी शैली का उपयोग किया है। पीछे से हिन्दी उर्दू को मिलाने के उद्देश्य से उन्होने अपना विचार बदल दिया और ऐसी भाषा लिखने लगे जिसमे हिन्दी की अपेक्षा उर्दू शब्दो की ही अधिक प्रधानता रहती थी। शिक्षा विभाग के लिए लिखे हुए 'इतिहास तिमिर नाशक' मे उन्होने इस शैली का ही उपयोग किया है। उनकी पहली प्रकार की शैली का एक वाक्य नीचे दिया जाता है।

(क) जडाऊ पलग और फूलो की सेजपर सोया। रानियाँ पैर दाबने लगीं। राजा की आँख झप गई तो स्वप्न मे क्या देखता है कि वह बडा सगमरमर का मदिर बनकर बिलकुल तैयार हो गया, जहाँ कहीं उसपर नक्काशी का काम किया है, वहाँ उसने बारीकी और सफाई मे हाथी दाँत को भी मात कर दिया है। जहाँ कही पच्चीकारी का हुनर दिखाया है वहाँ जवाहिरों को पत्थरो मे जडी तसवीर का नमूना बना दिया है।'

(ख) बाद मे राजा साहब जिस तरह की भाषा के पक्षपाती हुए उसका एक नमूना उन्हीं के सम्पादितपत्र 'बनारस अखबार' से दिया जाता है।

"यहाँ जो नया पाठशाला कई साल से जनाब कप्तान किट साहब बहादुर के इहितिमाम और धर्मात्माओ की मदद से बनता है, उसका हाल कई दफे जाहिर हो चुका है। × × × देखकर लोग उस पाठशाले के मकानों की खूबियाँ अक्सर बयान करते हैं।"

माधव प्रसाद मिश्र—प० माधव प्रसाद मिश्र जी की भाषा मे क्रमागत भावों का चित्रण सुन्दर रूप मे हुआ है। उनकी शैली में ओज तथा गम्भीरता का प्राधान्य रहता है। अपनी भाषा मे वह शुद्ध संस्कृत शब्दों का ही व्यवहार करते थे परन्तु फिर भी भाषा मे विशृङ्खलता नहीं आने पाती थी। इनकी भाषा में भावना का आवेश सर्वत्र दिखलाई पडता है। भाषा विचारों से मिली हुई रहती है। जहाँ जिस रस की भावना का उदय होता है वहाँ भाषा तथा विचारों मे भी वही रस प्रवाहित होता था। इनकी शैली का प्रधान गुण नाटकत्व है। कहीं कहीं इन्होंने वक्तृत्वमयी शैली का भी उपयोग किया है। इसलिए इनकी भाषा मे ओज, प्रसाद, तथा प्रौढता आदि गुणों का अच्छा समावेश रहता है। इनकी भाषा का एक नमूना नीचे दिया जाता है : –

आर्यवश के धर्म्म कर्म्म और भक्ति-भाव का वह प्रबल प्रवाह, जिसने एक दिन जगत के बड़े बडे सन्मार्ग विरोधी भूधरो का दर्पदलन कर उन्हें रज मे परिणत कर दिया था और इस परम पवित्र वश का वह विश्व-व्यापक प्रकाश, जिसने एक समय जगत मे अन्धकार का नाम तक न छोडा था—अब कहाँ है ?"

महाबीर प्रसाद द्विवेदी—द्विवेदी जी ने अपनी भाषा को व्यावहारिक तथा व्यापक बनाने के लिए हिन्दी, उर्दू और अंग्रेजी शब्दो एव मुहावरों तक का प्रयोग किया। उन्होंने आवश्यकतानुसार अपनी भाषा में तीन तरह की शैलियों का व्यवहार किया। उनकी पहली शैली व्यंग्यात्मक शैली कहलाती है। इसमे वह व्यावहारिक शब्दों का विशेष प्रयोग करते थे जिससे साधारण पढे लिखे भी उनकी भाषा को समझ सकें। इसमे विनोद तथा हास्य का विशेष पुट रहता था। उनकी दूसरी शैली आलोचनात्मक होती थी। इसमे गम्भीरता तथा ओज की विशेष मात्रा रहती थी। इसमें वह उर्दू के तत्सम शब्दों का भी प्रयोग करते थे। गवेषणात्मक लेखो को लिखने में वह अपनी तीसरी गवेषणात्मक शैली का प्रयोग करते थे। इसकी भाषा शुद्ध संस्कृत

शब्दों से भरी हुई रहती थी। इतना होने पर भी वह इसमें ऐसे अव्यवहारिक शब्दों का प्रयोग नहीं करते थे जिसमे भावों के समझने मे कठिनाई हो।

रामचन्द्र शुक्ल—शुक्लजी के निबंध जैसे गम्भीर होते थे वैसे ही गम्भीर उनकी भाषा होती थी। उनकी भाषा बड़ी सयत, व्याकरण की दृष्टि से विशुद्ध, और प्रौढ होती थी। यह आलोचना तथा गम्भीर निबंध विशेष करके लिखा करते थे अत: इनकी शैली भी विषय के अनुकूल ही होती थी। इनकी भाषा मे गम्भीर विवेचना के साथ ही साथ हास्य तथा व्यंग्य का पुट भी मिलता है। इनका व्यग्य कोरा आक्षेप न होकर गम्भीरता लिए हुए रहता था। यह संस्कृत के तत्सम शब्दों का ही विशेष प्रयोग करते थे। कुछ नवीन पारिभाषिक शब्दो की रचना भी इन्होंने की थी। हिन्दी मे आलोचना का एक निर्धारित रूप लाने वाले यह पहले व्यक्ति थे। इनकी भाषा का एक नमूना नीचे दिया जाता है :—

"साहित्य के अन्तर्गत वह सारा वॉगमय लिया जा सकता है जिसमें अर्थ बोध के अतिरिक्त भावोन्मेष अथवा चमत्कार पूर्ण अनुरजन हो तथा जिसमें ऐसे वॉगमय की विचारात्मक समीक्षा या व्याख्या हो"।

बदरी नाथ भट्ट—भट्टजी की भाषा मे विनोद की मात्रा विशेष रहती थी। इनकी शैली चलती हुई, सरल होती थी। किसी भी विषय को विनोद पूर्ण ढग से व्यक्त करना इनकी विशेषता थी। अपनी भाषा मे यह हिन्दी और उर्दू दोनो भाषाओ के शब्दों का यथेष्ट प्रयोग करते थे। आवश्यकता वश अंग्रेजी शब्दो का व्यवहार किया करते थे। मुहाविरो का प्रयोग इनकी भाषा मे स्थान स्थान पर मिलता है। सरलता, खरापन स्पष्टता तथा विनोद और व्यंग्य इनकी भाषा मे विशेष गुण हैं। बहुत बडे बडे वाक्य इनकी भाषा मे बहुत कम पाये जाते है। छोटे छोटे वाक्य ही लिखना इन्हें अधिक पसन्द था। नीचे इनकी शैली का उमाहरण दिया जाता है :—

"कवि-द्रोह विष है, प्रेम अमृत है। द्रोह दुर्गन्ध है, प्रेम सुगन्ध। कॉटे द्रोह-मय होते हैं। फूल प्रेम मय। दोनों संसार मे आते और रहते हैं।

कॉंटो की निन्दा होती है, फूलो की प्रशसा। एक जूते के तले से कुचला जाता है। दूसरा देव-शीश पर चढता है।

४—साहित्य किसे कहते हैं? भारतीय साहित्य की विशेषताएँ वर्णन कीजिए।

उ०—साहित्य की अनेक परिभाषाएँ हो सकती हैं परन्तु द्विवेदी जी के शब्दो मे सक्षेपतः यह कह देना पर्याप्त होगा कि 'ज्ञान-राशि के सचित कोश' का ही नाम साहित्य है। बोल चाल की भाषा मे किसी भी छपी हुई पुस्तक को हम साहित्य कहा करते हैं पर वास्तव मे साहित्य मे उन्ही पुस्तकों का समावेश हो सकता है जिनमे कला का समावेश है। इस परिभाषा के अनुसार साहित्य के अन्तर्गत कविता, नाटक, चपू, उपन्यास, और आख्यायिकाएँ आदि आती हैं। परन्तु ज्योतिष, गणित, व्याकरण, इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र तथा राजनीति विषयों को, कला का समावेश न होने के कारण, साहित्य के अन्तर्गत नहीं रखा जा सकता। जिन पुस्तकों का सम्बन्ध मनुष्य के ज्ञान-भाव से हुआ करता है वे साहित्य के अन्तर्गत नहीं रखी जा सकतीं। इसके अन्तर्गत उन्हीं पुस्तकों को रखा जा सकता है जो मनुष्य जीवन के दुःख तथा सकटो को क्षणभर के लिए भुला सकें तथा उन्हें कल्पना तथा भावनाओं के सुन्दर लोक मे भ्रमण करा सकें। साहित्य की दूसरी विशेषता सुरुचि है। जिन पुस्तकों का सुरुचि से सबध नही रहता वे भी साहित्य के अतर्गत नही आ सकती। इस दृष्टि से कुरुचि उत्पन्न करने वाली गन्दी पुस्तकें साहित्य नहीं कही जा सकती।

भारतीय साहित्य की विशेषताएँ बाबू श्याम सुन्दर दास जी के शब्दो मे इस प्रकार है :—

"समस्त भारतीय साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता उसके मूल मे स्थित समन्वय की भावना है। उसकी यह विशेषता इतनी प्रमुख तथा मार्मिक है कि केवल इसी के बल पर ससार के अन्य साहित्यों के सामने वह अपनी मौलिकता की पताका फहरा सकती है और अपने स्वतंत्र अस्तित्व की सार्थकता प्रमाणित कर सकती है। साहित्यिक समन्वय से हमारा तात्पर्य साहित्य में

प्रदर्शित सुख-दुख, उत्थानपतन, हर्षविषाद आदि विरोधी तथा विपरीत भावो के समीकरण तथा एक अलौकिक आनन्द मे उनके विलीन होने से है। भारतीय साहित्य के किसी अग को लेकर देखिए, सर्वत्र यही समन्वय दिखाई देगा। भारतीय नाटको में ही सुख दुख के प्रबल घात प्रतिघात दिखाए गये हैं पर सबका अवसान आनन्द में ही किया गया है। इसका प्रधान कारण यह है कि भारतीओं का ध्येय सदा से जीवन का आदर्श स्वरूप उपस्थित करके उसका उत्कर्ष बढाने और उसे उन्नत बनाने का रहा है। वर्तमान स्थिति से उसका इतना सम्बन्ध नहीं है जितना भविष्य की सभाव्य उन्नति से है। हमारे यहाॅ यूरोपीय ढग के दुःखान्त नाटक इसीलिए देख नहीं पड़ते। यदि आज कल दो चार नाटक देख भी पडने लगे हैं तो वे भारतीय आदर्श से दूर और यूरोपीय आदर्श के अनुकरण मात्र हैं।

भारतीय साहित्य की दूसरी विशेषता उसमे धार्मिक भावों की प्रचुरता है। हमारे यहाॅ धर्म की बडी व्यापक व्यवस्था की गई है और जीवन के अनेक क्षेत्रो मे उसको स्थान दिया गया है। आध्यात्मिकता की अधिकता होने के कारण हमारे साहित्य मे एक ओर तो पवित्र भावनाओ और जीवन सम्बन्धी गहन तथा गम्भीर विचारो की प्रचुरता हुई और दूसरी ओर साधारण लौकिक भावों तथा विचारो का विस्तार अधिक नही हुआ। धार्मिकता के भाव से जिस सरल तथा सुन्दर साहित्य का सृजन हुआ, वह वास्तव मे हमारे गौरव की वस्तु है।

तीसरी विशेषता भारत की निसर्ग सिद्ध सुषमा से अनुराग है। जिन्होंने भारत की हिमाच्छादित शैलमाला पर सध्या की सुनहली किरणों की सुषमा देखी है, अथवा जिन्हे घनी अमराइयों की छाया मे कलकल ध्वनि से बहती हुई निर्भरिणी तथा उसकी समीपवर्तिनी लताओं की वसत श्री देखने का अवसर भी मिला है उन्हें अरब जैसे देश मे सौन्दर्य तो क्या उलटे नीरसता, शुष्कता और भद्दापन ही मिलेगा, यद्यपि वहाॅ के कवि साधारण से झरने और ताड के लम्बे लम्बे पेडो मे ही सौन्दर्य का अनुभव कर लेते हैं।

ये जातिगत तथा देशगत विशेषताएँ तो हमारे साहित्य के भाव पक्ष की हैं। इनके अतिरिक्त उसके कलापक्ष में भी कुछ स्थायी जातीय मनोवृत्तियों का प्रतिबिम्ब अवश्य दिखाई देता है। कलापक्ष से हमारा अभिप्राय केवल शब्द सघटन अथवा छन्दरचना तथा विविध आलंकारिक प्रयोगो से ही नहीं, प्रत्युत उसमे भावों को व्यक्त करने की शैली भी सम्मिलित है।

५—"बीस कहानियाँ" नामक कथा-सग्रह की कौन-सी कहानी आप को सदा स्मरण रहेगी ? उसमे कोन-सा ऐसा गुण है, जो अपेक्षाकृत अन्य कथाओं मे कम है ? सप्रमाण लिखिए।

अथवा

हिन्दी कथा-साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियो के सम्बन्ध मे अपने विचार प्रकट कीजिये और बतलाइये, आज की कथाएँ युग की आवश्यकताओ की पूर्ति मे कहाँ तक सहायक हो रही हैं।

उ०—'बीस कहानियाँ' नामक कथा सग्रह मे श्रीचन्द्रधर शर्मा गुलेरी लिखित 'उसने कहा था' कहानी सदा स्मरण रखने योग्य है। कहानी को सीधे सादे ढग से लिख देने की अपेक्षा वे कहानियाँ अधिक कलात्मक समझी जाती हैं जिनमे घटना के रोचक वर्णन के साथ ही साथ मनोवैज्ञानिक विश्लेषण भी हो। उसमे घटना का वर्णन इस प्रकार हो कि पाठक की उत्सुकता आगे का हाल पढने के लिए बढती चली जाय। 'उसने कहा था' मे ये सब गुण विद्यमान है। पहले इक्के-गाड़ीवालो का वर्णन पढकर पाठक कहानी का रहस्य ही नहीं समझ पाता और उसकी उत्सुकता बढती जाती है परन्तु जैसे जैसे आगे बढता है वैसे वैसे कहानी का रहस्य उस पर प्रकट होता जाता है। मनुष्य जब अपनी आशा के विरुद्ध कोई समाचार सुनता है तब उसकी जैसी दशा हो जाती है उसका बहुत ही स्वाभाविक और सुन्दर वर्णन हमे कहानी के आरम्भ मे ही मिलता है। जिस समय लडके से उसकी आशा के विरुद्ध लडकी ने कहा कि हाँ मेरी सगाई हो गई × × × देखते नहीं यह रेशम से कढा हुआ सालू' तो लडके की यह दशा हुई कि मार्ग मे चलते रहने पर भी उसका मन इसी घटना की ओर लगा हुआ था अतः उसने

एक लडके को मोरी मे ढकेल दिया, एक कुत्ते पर पत्थर मारा तथा अनेक ऐसी घटनायें करता हुआ घर पहुँचा। गुलेरी जी का यह मनोवैज्ञानिक विश्लेषण बहुत ही सुन्दर है। आशा विरुद्ध समाचार पानेपर मनुष्यों की ऐसी ही अवस्था हो जाया करती है। कहानी का अतिम दृश्य तो लाजवाब है।' उसे ही कहानी की कुजी समझना चाहिये। उसे पढकर लेखक की भूरि भूरि प्रशसा किए बिना नहीं रहा जाता। इसके साथ बीच बीच की घटनाओं का वर्णन भी बडा रोचक हुआ है। जर्मनों की ओर से किसी जासूस का लप्टन साहब बन कर आना और लहना सिह का उससे जिरह करने का दृश्य तो रोचक होने के साथ ही साथ कहानी के नायक की बुद्धिमता का द्योतक भी है। 'उसने कहा था' शीर्षक का रहस्य भी जब कहानी पढने के अत मे खुलता है तब पाठक चमत्कृत हुए बिना नही रहता। यही कारण है कि यह कहानी अन्य कहानियों की अपेक्षा अधिक स्मरणीय है।

२—प्राचीन ढग की 'नानी की कहानियों' तथा वर्तमान आख्यायिकाओं मे तात्विक अतर यह है कि पहले प्रकार की कहानियाँ अस्वाभाविक घटनाओं से पूर्ण केवल मनोरजन के उद्देश्य से लिखी जाती है परन्तु आख्यायिकाओं का विशेष उद्देश्य हुआ करता है। उसी उद्देश्य को दृष्टि मे लेखक अपनी कहानी की रचना करता है। इस प्रकार की कथाओं मे असम्भव और अस्वाभाविक बातें नही रहा करती। अत. इन कहानियों की मुख्य प्रवृत्ति किसी उद्देश्य विशेष की पूर्ति करने की हुआ करती है। कुछ कहानियाँ सामाजिक, कुछ ऐतिहासिक और धार्मिक होती हैं, जिनमे पात्रों के चरित्र चित्रण के साथ ही युग की आवश्यकताओं की ओर भी सकेत रहता है। अतः वर्तमान कहानियाँ युग की आवश्यकताओं को बड़ी सहायता दे रही है। प्रेमचद जी तथा 'कौशिक' एव सुदर्शन जी की अधिकाश कहानियाँ तो युग की आवश्यकताओं पर ही लिखी गई है। उदाहरण के लिए 'कौशिक' जी की लिखी हुई 'मनुष्य का मूल्य' नामक कहानी उपस्थित की जा सकती है जिसमे पूजीपतियों के कर्तव्य की ओर बडा गहरा सकेत किया गया है।

प्र० ६—निम्नलिखित कहानी लेखको की रचनाओ मे परस्पर क्या अन्तर पाया जाता है ?

परिचय—सहित विस्तार पूर्वक लिखिए :——

(१) प्रेमचन्द, जयशकर 'प्रसाद', रायकृष्णदास और उग्र ।

मुशी प्रेमचन्द—मुशी प्रेमचन्द का वास्तविक नाम धनपति राय था। इनका जन्म काशी से चार पॉच मील उत्तर पॉडेपुर ग्राम के एक कायस्थ परिवार मे सवत् १९३७ वि० मे हुआ था। अपनी आरम्भिक शिक्षा के बाद शिक्षा-विभाग मे कार्य आरम्भ किया और फिर धीरे-धीरे सब डिप्टी इस्पेक्टर हो गये। कुछ दिनों तक गोरखपूर मे नार्मल स्कूल के अध्यापक भी रहे। बाद मे आपने सरकारी नोकरी छोडकर साहित्य सेवा प्रारम्भ की। पहले आप 'उर्दू' भाषा मे लिखा करते थे तथा उर्दू साहित्य मे आपका बड़ा नाम है। 'हिन्दी' के सौभाग्य से आपकी रुचि हिन्दी की ओर हुई और कुछ ही दिनों मे आपने हिन्दी भाषा में भी उच्चतम स्थान प्राप्त किया। वह हिन्दी के सबसे बड़े कहानी लेखक तथा उपन्यास कार माने जाते हैं।

जब यह उर्दू से हिन्दी मे आए तब इनकी भाषा अत्यन्त शिथिल और व्याकरण की भूलो मे भरी रहती थी। पर प्रतिभा शाली होने के कारण शीघ्र ही सुन्दर और मुहावरेदार हिन्दी लिखने लगे। 'सेवासदन' इनकी प्रोढ तथा परिमार्जित शैली की पहली कृति है। मध्य श्रेणी के पारिवारिक जीवन तथा देहाती समाज का चरित्र चित्रण करने मे यह अद्वितीय थे। इनके उपन्यासों के पात्र किसान, जमीदार, मिलमालिक, मजदूर, महात्मा, दुश्चरित्र, भोले-भाले बालक और ग्रामीण स्त्रियॉ हैं।

इनकी भाषा सरल, चलती हुई रहती थी। इनके वाक्य साधारण छोटे छोटे होते थे। इन्हीं छोटे छोटे वाक्यों में कहीं कहीं सूक्तियॉ भी देखने को मिलती थीं।

आपकी रचनाओं में सबसे अधिक मार्मिक चरित्र चित्रण दीन दुखियो एवं ग्रामवासियों के हैं। अपने व्यक्तिगत जीवन में वह स्वय इनके बहुत

निकट रह चुके थे। इन्होंने जिस समाज का चित्र अंकित करने का बीड़ा उठाया वह बड़ा हीन है। उसमें स्वर्गीय उल्लास नहीं है, उच्चभावनाओं का उन्माद नहीं है। वह जनता के साहित्यकार थे। उनकी रचनाओं का मुख्य उद्देश्य समाज की किसी न किसी समस्या पर प्रकाश डालना था। किसी में 'घरेलू कलह', किसी काश्तकार जमींदार का अप्रिय सम्बन्ध, किसी में जमींदारों की धौंस, पुलिस वालों का अत्याचार, घूसखोरी आदि विषय रहा करते थे। इसीलिए उनकी कहानियों या उपन्यासों में इतिवृत्तात्मकता (Matter of fact) अधिक रहती थी। कथात्मकता अधिक और कला पक्ष कम। वह कलाकार कम और प्रचारक (Nopagandist) अधिक थे।

जयशंकर प्रसाद—बा० जयशङ्कर 'प्रसाद' जी की का जन्म संवत् १८८९ ई० में, काशी के एक वैश्य कुल में हुआ था। थोड़ी ही अवस्था में माता-पिता का देहान्त हो जाने के कारण इन्होंने घर पर ही स्वाध्याय द्वारा यथेष्ट अध्ययन किया। इनकी प्रतिभा बहुमुखी थी। काव्य, नाटक, इतिहास, निबन्ध आदि सभी विषयों के आप सफल लेखक थे। खेद है कि केवल अड़तालीस वर्ष की अवस्था में ही आपका सन् १९३७ में देहान्त हो गया। इतनी थोड़ी अवस्था में ही आपने हिन्दी साहित्य को जो निधियाँ प्रदान की हैं, वे अमूल्य हैं। अपने साहित्यिक-जीवन के प्रारम्भिक काल में ब्रजभाषा में कविता किया करते थे परन्तु बाद में आपने खड़ी बोली को अपनाया और थोड़े ही समय में उसके अग्रगण्य महाकवियों में गिने जाने लगे।

आपकी रचनाओं में दार्शनिकता का प्राधान्य रहता था अतः वे क्लिष्ट हो गई हैं और यही कारण है कि उनमें प्रसाद गुण का प्रायः अभाव है। उनकी सबसे प्रसिद्ध काव्य रचना कामायिनी नामक महाकाव्य है। इस महाकाव्य में इन्होंने मानव-संस्कृति के विकास की काव्योचित विवेचना की है। आप यथार्थवादी औपन्यासिक थे अतः आपके उपन्यासों में स्त्रियों की दयनीय दशा का नग्न चित्र देखने को मिलता है। कहानियों की भाषा गद्य-काव्य मयी होने के कारण प्रायः जटिल हो गई है। इसीलिए कला की, दृष्टि से एक दो को छोड़कर, सफल नहीं कही जा सकती। कहानी कला दृष्टि

से श्री प्रेमचन्द जी ने कहानी क्षेत्र में जो सफलता प्राप्त की उस तक प्रसाद जी नहीं पहुँच सके। इनकी कहानियों में जैसी लच्छेदार भाषा देखने को मिलती है वैसा घटनाओं का विकास नहीं। हाँ, नाटक के क्षेत्र में आधुनिक नाटककारों में सर्व श्रेष्ठ कहे जा सकते हैं, इसमें सन्देह नहीं। इनके लिखे हुए निबन्धों की संख्या बहुत कम उँगलियों पर गिनने लायक है। उनकी भाषा भी प्रायः क्लिष्ट हो गई है।

इनकी रचनाओं में उर्दू पदों का प्राय. अभाव है। मुहाविरों की भी कमी पाई जाती है। इसका कारण सम्भवत. यह है कि इनका ध्यान मनोवैज्ञानिक विश्लेषण की ओर अधिक रहता था। इनके शीर्षक भी कुछ विलक्षण एव नवीन होते थे। यह बात प्राय. प्रत्येक रचना में पाई जाती है।

रायकृष्णदास—रायकृष्णदास भाव प्रकाशन की एक नई शैली कर हिन्दी-साहित्य क्षेत्र में आये। इनकी रचनाएँ प्रायः भावात्मक हुआ करती हैं। अत. उनमें कल्पना की प्रधानता रहती है। जो रचनाएँ भावात्मक होती हैं उनमें प्रायः दुरूहता आ जाया करती है पर रायसाहब में यह बात नहीं पाई जाती। भावात्मक रचनाओं को भी इन्होंने दुरूहता से बचाने की चेष्टा की है। भाषा में अलकारिकता की छाप भी स्थान-स्थान पर मिलती है। सस्कृत के तत्सम का बाहुल्य होने पर भी इनकी भाषा में साधारण उर्दू शब्दों की कमी नहीं है। कहीं-कहीं 'कॉटने' 'ढड्ढा' जैसे प्रान्तीय प्रयोग भी मिलते हैं। इनकी रचनाओं में वही आनन्द आता है जो 'प्रसाद जी की रचनाओं में आया करता है। प्रेमचन्द जी की व्यावहारिकता इनमे भी नहीं है। यह भी प्रसाद जी की तरह अपने पाठकों को कल्पना के लोक ले जाया करते हैं। इनकी शैली कहीं तो धाराप्रवाह चलती है और कहीं कहीं उसका पद्यात्मक रूप देखने को मिलता है। इनके वाक्यों की बनावट भी अपनी ही है। इस तरह के वाक्यों में एक तरह का बल (Force) पाया जाता है। "उत्कट इच्छा होती है, वहाँ चलने की' जैसे वाक्यों के प्रयोग से इनकी भाषा सुन्दर तथा बलवती बन जाती है।

पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' – कथन प्रणाली एक विशेषरूप जो 'उग्र' जी की रचनाओं मे दिखलाई पडता है। वह दूसरे लेखकों मे बहुत कम दिखलाई पडता है। भावावेश के कारण इनकी भाषा बहुत ही बलवती बन जाती है। इनकी रचनाएँ-विशेष करके एक उद्देश्य विशेष को लेकर की जाती हैं। विषय के अनुकूल ही इनकी भाषा भी हुआ करती है। सामाजिक बुराइयों का सजीव चित्र खींचने मे जैसी सफलता इन्हें मिली है वैसी अन्य किसी लेखक को नही मिली। अपनी भाषा मे अव्यवहारिक शब्दों का प्रयोग यह बहुत कम करते हैं। भाव को प्रकट करने के लिए जो शब्द जहाँ पर सटीक बैठता है उसी का यह उपयोग किया करते हैं, फिर चाहे वह उर्दू का चलता हुआ शब्द हो या हिन्दी का प्रान्तीय अथवा शुद्ध अग्रेजी का समासान्त पदावली इनकी रचनाओं मे नही मिलती।

प्र० ७—नीचे लिखे गद्य-खण्ड के आधार पर बतलाइए 'सच्चा विश्राम' क्या है और कौन उसे पा सकता है ?

"सच्चा विश्राम सचमुच ही बडा दुर्लभ है। निर्भीक कर्मयोगी ही उस निधि के सच्चे अधिकारी हैं। उसकी साधना कुछ बे-परवाह मस्तों से ही बन पडी है। वीर स्वार्थ त्यागियो ने ही वह महामंत्र साधा है, उन स्वायत्त सिद्धों ने अपने अजर-अमर सिद्धान्तों को ब्राह्मी अवस्था के दिव्य पटलपर अकित किया है। शान्ति-कुटीर तो सदा ही उन नित्य विकसित सिद्धान्त-पुष्पों से आच्छादित-रहती है।"

उ०—इस ससार मे प्रत्येक प्राणी इस उद्योग में प्रयत्न शील रहता है कि उसे सच्चा विश्राम प्राप्त हो सके। परन्तु इन उद्योगियो मे विरला ही ऐसा निकलता है जो उसे प्राप्त कर सके। कारण उसका प्राप्त करना बड़ा कठिन है। स्वार्थी लोग अनेक उद्योग करने पर भी सच्चा विश्राम नही पा सकते। जिन्होंने स्वार्थ को त्याग दिया है और जो निर्भय कर्मयोगी हैं वे ही उसे पा सकते हैं। सासारिक प्रपचों मे पड़े हुए लोग इसे नहीं पा सकते क्योंकि इन प्रपचों से दूर रहना ही सच्चा विश्राम है।

———

हिन्दी विश्व-विद्यालय

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००० वि०)

साहित्य—प्रश्न-पत्र ४

समय ३ घण्टे] [पूर्णाङ्क १००

१—निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर मुहावरेदार भाषा में एक सुन्दर निबन्ध लिखिये :—

(क) करुणा मानवता की जननी है

(ख) हिन्दी के आधुनिक उपन्यास

(ग) राष्ट्र-निर्माण में स्त्री-शिक्षा का महत्व

(घ) किसी वनस्थली का सजीव चित्रण

(ङ) काल की वार्षिक सीमा में जैसे ऋतु-परिवर्तन होता है और उसका थोड़ा-बहुत प्रभाव प्रत्येक व्यक्ति पर पड़ता ही है, ठीक उसी प्रकार साहित्य के क्षेत्र में प्रवृत्तियाँ, धाराएँ और वाद हैं। युग की आवश्यकताएँ उन्हें जन्म देतीं, पनपातीं और विसर्जन कर देती हैं। अतएव प्रत्येक साहित्यकार पर उनका किसी-न-किसी रूप में प्रभाव पड़ जाना सर्वथा स्वाभाविक है।

२—निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो का उत्तर अपेक्षित है—

(अ) हिन्दी के मनोविश्लेषणात्मक कथाकारों में से किन्हीं दो की तुलनात्मक विवेचना कीजिए। २०

(ब) 'कहानी और उपन्यास में तात्विक अन्तर है'—इस कथन की सार्थकता प्रमाणित कीजिए। २०

(स) देवकीनन्दन खत्री और किशोरीलाल गोस्वामी ने हिन्दी के उपन्यास-साहित्य में जिन तत्वों का प्रादुर्भाव किया था, उनकी परम्परा क्यों स्थिर नहीं रह सकी? इस विषय में अपना मत सप्रमाण निर्धारित कीजिये। २०

(द) हिन्दी भाषा के प्रचार और उसके साहित्य-निर्माण की दृष्टि से हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, नागरी-प्रचारिणी सभा तथा हिन्दुस्तानी एकेडमी संस्थाओं में से किन्हीं दो की प्रोत्साहन-दायिनी प्रवृत्तियों का संक्षेप में उल्लेख कीजिये। २०

करुणा मानवता की जननी है

संसार में यथार्थ मनुष्य बनने के लिए जिन गुणों की आवश्यकता होती है, उनमें करुणा अथवा दया का प्रधान स्थान है। दया अथवा करुणा हीन मनुष्य को लोग नर रूप में राक्षस कहा करते हैं। हम रात-दिन देखा करते हैं कि जब कोई राजा, जमींदार, महाजन या साधारण मनुष्य किसी पर अत्याचार करता है तब लोग उसे मनुष्य की संज्ञा देने में हिचकिचाते हैं। इससे स्पष्ट है कि सच्चा मनुष्य बनने के लिए मनुष्य के वास्तविक गुण करुणा की परमावश्यकता है।

करुणा के भाव का सम्बन्ध दूसरों के दुःख से होता है। मन की यह प्रवृत्ति दूसरों के दुःख को देखकर ही उत्पन्न हुआ करती है। अतः परोपकार का मूल मन्त्र भी करुणा ही है। क्योंकि दूसरों के दुःख को देखकर जब हमारे मन में करुणा का भाव उदय ही नहीं होगा तब हम उनकी भलाई या सहायता करना क्यों चाहेंगे। मार्ग में चलते समय दुख से कराहते हुए लोगों का आर्त्तनाद हम नित्य सुनते हैं परन्तु हममें से जो दौड़कर उसकी सहायता करता है उस पर हमारी श्रद्धा हो जाती है और हमारे मुँह से निकल पड़ता है कि भाई सच्चा मनुष्य तो यही है।

हमारे शास्त्रों में करुणा की बड़ी महिमा गाई गई है। लोगों ने भगवान के गुणों में भी करुणा की प्रधानता प्रदर्शित करने के लिए उन्हें 'दयासागर', 'करुणानिधि, करुणायतन आदि नामों से पुकारना आरम्भ किया। जब भगवान के गुणों में करुणा का प्राधान्य है तब मनुष्यों में उसको होना ही चाहिए। जब जब हम पर विपत्ति पड़ती है तब हम भगवान् के 'करुणा' गुण की ही दुहाई दिया करते हैं। भारत की विपत्ति को देखकर भी हरिश्चन्द्र

के मुँह से निकल ही तो पड़ा कि :—"कहँ करुणानिधि केशव सोये'। ऐसा ही उलाहना देते हुए एक दूसरे कवि ने भी कहा है कि—'करुणानिधि नाम कहो क्यों धरायो।'

करुणा, जहाँ व्यक्ति के लिए आवश्यक गुण है वहाँ समाज के अस्तित्व के लिए भी उसकी बड़ी आवश्यकता है। समाज का अस्तित्व व्यक्तियों से है और व्यक्तियो पर हानियो तथा दुःखों का पड़ना स्वाभाविक है। जब समाज का प्रत्येक व्यक्ति दूसरे के दुःख मे करुणा के भाव से प्रेरित होकर सहायता न करेगा तब समाज की क्या दशा होगी यह सहज ही में समझ मे आ सकता है।

मनुष्य के जितने आन्दोलन चलते हैं उनमे किसी न किसी रूप मे करुणा का भाव अवश्य रहता है। इसका कारण यही है कि 'करुणा' मनुष्य को वास्तविक मनुष्य बनाने वाली है। अतः जो सच्चे मनुष्य हैं, वे दूसरो के दुखों को देखकर द्रवीभूत हुए बिना नहीं रहते। राष्ट्रीय आन्दोलनों में भी करुणा का भाव अन्तर्हित रहता है। जब लोग देखते हैं कि हमारा देश आर्थिक दरिद्रता का शिकार बन रहा है और हमारे देश के लोग भर पेट अन्न न पाकर मृत्यु के ग्रास बनते चले जा रहे हैं तब वे देश की रक्षा के लिए कटिबद्ध हो जाया करते हैं तथा अपने देश वासियों पर अत्याचार करने वालों से लोहा लेने तक को उद्यत हो जाते हैं। बगाल के अकाल पीड़ित नरककालो के चित्र मात्र को देखकर लोगों की आँखों मे आँसू भर आते थे। उनकी दयनीय दशा पर तरस खाकर ही अनेक सहृदय धनी व्यक्तियों ने उनके मुफ्त भोजन पाने की व्यवस्था की थी। इन सहृदय व्यक्तियों की सहायता के कारण सहस्त्रों अकिंचनो की जानें बच गई थीं। उधर कुछ लोग ऐसे भी थे जो नित्य प्रति इन नर ककालों को मरता हुआ देखते थे पर उन पर किसी प्रकार का असर नहीं होता था। उनके दैनिक राग रग के कार्य क्रम मे किसी प्रकार का अन्तर नहीं आया था।

निर्धनो की इस भयानक मृत्यु को वे 'ईश्वरीय दण्ड' कहकर टाल दिया करते थे। उक्त दोनो प्रकार के मनुष्य मानव देह धारी थे परन्तु दोनों में

कितना अन्तर था। एक दूसरों के प्राण बचाने के लिए अपना सर्वस्व होम रहे थे और दूसरे उन्हें 'ईश्वरीयदण्ड' तथा कर्मों का फल कहकर सहायता करने वालों की खिल्ली उड़ाते थे। इस विशाल अन्तर का एकमात्र कारण 'करुणा' की उपस्थिति तथा अभाव था। पहले प्रकार के मनुष्यों के हृदय में करुणा थी जिसने उन्हें मनुष्यों के कर्तव्य की ओर प्ररित किया और दूसरे प्रकार के मनुष्य करुणा से शून्य थे।

कुछ विद्वानों की राय है कि मनुष्य के इस दैवी गुण का विरोध केवल न्याय की भावना किया करती है अर्थात् करुणा और न्याय का परस्पर विरोध है। किसी हत्यारे को दण्ड देना न्याय है परन्तु उस हत्यारे के प्राण ले लेने पर यदि उस पर आश्रित निरपधार जनों के भूखों मरने का अवसर आता हो तो करुणा भी सामने आती है। ऐसी अवस्था में यदि न्यायकर्ता नीरक्षीर का विवेकी तथा साथ ही कारुणिक भी हो तो बड़ी विचित्र परिस्थिति में पड़ जाता है। परन्तु सच्ची करुणा ऐसे अवसरों पर भी अपना मार्ग ढूंढ ही लेती है। न्याय कर्ता अपराधी को दड देने के साथ ही साथ उसके आश्रित निरपराधजनों के भरणपोषण का समुचित उपाय भी कर दे सकता है।

करुणा की महिमा ससार के प्रत्येक धर्म मे गाई गई है। हिन्दू धर्म तो इसकी इतनी प्रधानता है कि मनुष्य की बात ही क्या है, कीड़े मकोड़ों पर भी दया का उपदेश दिया गया है। अन्य धर्मों में भी इसे मानवता की शोभा कहा गया है और सनातन धर्म तो इसे मानवता की जननी ही मानता है।

हिन्दी के आधुनिक उपन्यास

हिन्दी में उपन्यास लिखने का आरम्भ तो आज से ६० वर्ष पहले ही हो चुका था परन्तु उस समय के लिखे गये उपन्यासों तथा आधुनिक उपन्यासों की परिपाटी, उद्देश्य तथा शैली में बहुत कुछ अन्तर आ गया है। उस समय 'चंचला', 'मानवती' 'नए बाबू' 'देवरानी-जेठानी' 'दो बहिनें', 'तीन पतोहू' जैसे उपन्यास निकलते थे जिनकी भाषा तो खूब चटपटी रहती थी पर उनमें मनोवैज्ञानिक विश्लेषण बहुत ही कम रहता था।

इसके बाद हिन्दी मे उपन्यासों की भरमार हो चली परन्तु उनमे अधिकांश उपन्यास बगला भाषा के अनुवाद मात्र थे। बगला भाषा के अतिरिक्त मराठी तथा गुजराती के कुछ उपन्यासो का अनुवाद भी हिन्दी भाषा में किया गया।

इन अनुवादों से एक बड़ा भारी लाभ यह हुआ कि हिन्दी के उपन्यासकारों का आदर्श कुछ ऊँचा हुआ। कोरी कहानी मात्र लिख देना ही उपन्यासों का उद्देश्य न रहा। साथ ही साथ मौलिक उपन्यास लिखने की ओर भी लोगों का ध्यान गया।

हिन्दी में प्रथम प्रसिद्ध मौलिक उपन्यासकारों मे बाबू देवकीनन्दन खत्री का ही नाम लिया जा सकता है। आपके लिखे हुए चन्द्रकान्ता और चन्द्रकान्ता सन्तति एव भूतनाथ आदि उपन्यासों ने हिन्दी का एक बड़ा भारी उपकार किया। इन उपन्यासों के कारण हिन्दी की ओर लोगों की रुचि जाग्रत हुई और सैकड़ों की सख्या में उर्दू प्रेमी हिन्दी की ओर झुकने लगे। यदि बाबू साहब ऐयारी और तिलस्मी उपन्यास न लिखकर अपनी प्रतिभा को उत्तमढग के उपन्यासों को लिखने मे खर्च करते तो हिन्दी का अपूर्व लाभ होता।

दूसरे मौलिक उपन्यासकार बाबू किशोरी लाल गोस्वामी हुए। इनके उपन्यासों में समाज का सजीव वर्णन रहा करता था और भाषा भी साहित्यिक होती थी अतः इस दृष्टि से साहित्यिक ढग के मौलिक उपन्यासकार यही हुए। सामाजिक उपन्यासों के अतिरिक्त इन्होंने बहुत ऐतिहासिक तथा राजनैतिक उपन्यासों की रचना भी।

गोस्वामीजी के बाद प्रसिद्ध महाकवि प० अयोध्यासिंह जी उपाध्याय के लिखे हुए दो उपन्यास हिन्दी के सामने आये। पहला 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' और दूसरा 'अधखिला फूल'। इसी समय पंडित लज्जाराम मेहता ने भी कई सुन्दर उपन्यासों की रचना की। इनके उपन्यासों में हिन्दू धर्म तथा हिन्दुओं की पारिवारिक व्यवस्था का बड़ा सुन्दर चित्र रहता था। इनके

लिखे हुए 'आदर्श दंपति', 'हिन्दू गृहस्थ' आदि उपन्यास हिन्दी-साहित्य की सुन्दर निधियाँ हैं।

सवत् १९६६ के में बाबू ब्रजनन्दन सहाय ने 'सौन्दर्योपासक' और 'राधाकान्त' नामक दो उपन्यासों की रचना की जिनमें मनोविकारों की वेगवती व्यजना के साथ साथ सुन्दर चरित्र चित्रण भी देखने को मिलता है।

परन्तु हिन्दी के उपन्यास भाग को भरा-पूरा बनाने का श्रेय स्वर्गीय श्री प्रेमचंद जी को ही है। आप हिन्दी के सर्वश्रेष्ट मौलिक उपन्यासकार और कहानी लेखक थे। इनके पहले हिन्दी का यह विभाग एक तरह से शून्य सा ही था। बगला भाषा के अनुवादों तथा कुछ इने गिने मौलिक उपन्यासों को छोड़कर, हिन्दी में मौलिक उपन्यासों का अभाव सा था। प्रेमचन्द्र जी के लिखे हुए 'सेवासदन' 'प्रेमाश्रम' 'रगभूमि' 'गबन' तथा 'गोदान' आदि मौलिक उपन्यासो ने ससार की अन्यभाषाओं के सामने हिन्दी का मस्तक ऊँचा कर रखा है।

अपने उपन्यासों मे इन्होंने जीवन की समस्त परिस्थितियों का बडा मार्मिक और सुन्दर विवेचन किया है। देहाती समाज का जैसा सुन्दर चित्र यह खींच सके हैं वैसा दूसरा कोई उपन्यासकार नहीं खींच सका। उनके सभी उपन्यासों में आदर्श तथा तथ्यवाद का मिश्रण पाया जाता है क्योंकि उन्होंने स्वय ही एक स्थान पर लिखा है कि 'वही उपन्यास उच्चकोटि का समझा जाता है जिसमे आदर्श और यथार्थ का समावेश हो।' यथार्थवादी लेखक अपने पात्रों का जैसा का वैसा रूप पाठकों के समाने रख देता है। उसे इससे कुछ प्रयोजन नहीं रहता कि सच्चरित्रता का परिणाम बुरा होता है और कुचरित्रता का अच्छा। इसके विपरीत आदर्श वादी केवल आदर्श की ओर चलता है और अच्छे का अच्छा, और बुरे का बुरा परिणाम दिखलाया करता है। दोनो ही ढगों में कुछ न कुछ दोष हैं अतः दोनो का समिश्रण ही अच्छा माना जाता है।

प्रेमचन्द, जी के बाद हिन्दी में उनका समकक्ष उपन्यास कार अभी तक

नहीं हुआ। 'प्रसाद जी' के 'तितली' और 'कंकाल' नामक उपन्यासों में वह गुण नहीं पाया जाता जो श्री प्रेमचन्द के उपन्यासों में यद्यपि उनकी भाषा अधिक प्रभावशालिनी है। 'सुदर्शन' तथा 'कौशिक' आदि ने आख्यायिका लिखने में ही प्रसिद्धि प्राप्ति की है।

(स) देवकी नन्दन खत्री और किशोरी लाल गोस्वामी ने हिन्दी के उपन्यास साहित्य में जिन तत्वों का प्रादुर्भाव किया था उनकी परम्परा क्यों स्थिर न रह सकी? इस विषय में अपना मत सप्रमाण निर्धारित कीजिये।

उ०—बाबू देवकी नन्दन खत्री हिंन्दी के उपन्यास क्षेत्र में सर्व-प्रथम लेखक समझे जाते हैं। जिस समय हिन्दी में उपन्यासों का नितान्त अभाव था उस समय अपना चन्द्रकान्ता तथा चन्द्रकान्ता सतति एवं भूतनाथ उपन्यास लिखकर उन्होंने हिन्दी प्रचार में बड़ी सहायता दी। सैकड़ों मनुष्यों ने केवल उनके उपन्यासों को पढ़ने के लिए ही हिंन्दी सीखी। परन्तु उनके उपन्यास तिलस्मी और ऐयारी ढंग के थे जिनसे क्षणिक मनोरंजन के सिवा और कोई लाभ न था। तत्कालीन परिस्थिति ऐसी थी कि लोग उसी तरह की पुस्तकों को अधिक पसन्द करते थे। परिमार्जित रुचि की हिन्दी जनता का उस समय अभाव था अतः देवकीनन्दन जी के उन्यासों का इतना प्रचार हो गया। बाद में किशोरीलाल जी गोस्वामी के उपन्यास प्रकाशित हुए। वे चन्द्रकान्ता सन्तति के अतिरिक्त अधिक साहित्यिक थे परन्तु वे भी सबसे के सब घटना वशिष्ट हैं। पात्रों के चरित्र का विकास तथा मनोवैज्ञानिक विश्लेषण न तो देवकीनन्दन खत्री के उपन्यासों में था और न गोस्वामी जी के। इसी कारण जब हिन्दी जनता साहित्यिक रुचि परिमार्जित होने लगी तब वह इस प्रकार के उन्यासों की ओर से उदासीन रहने लगी। यही कारण है इन दोनों की उपन्यास परम्परा स्थिर न रह सकी।

(द) हिन्दी भाषा के प्रचार और उसके साहित्य निर्माण की दृष्टि से हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, नागरी प्रचारिणी सभा तथा हिन्दुस्तानी एकेडमी संस्थाओं में से किन्हीं दो की प्रोत्साहनदायिनी प्रवृत्तियों का संक्षेप में उल्लेख कीजिये।

उ०—हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन—

यह सस्था राय बहादुर डा० श्याम सुन्दर दास तथा माननीय बाबू पुरुषोत्तम दास जी टंडन के उद्योग से स्थापित की गई थी। इस सस्था के द्वारा हिन्दी भाषा तथा साहित्य का बड़ा भारी उपकार हो रहा है। इसके साहित्य विभाग द्वारा प्रति वर्ष कई उत्तमोत्तम पुस्तके प्रकाशित की जाती हैं। 'मगला प्रसाद पारितोषिक नामक' १२००) रु०-का वार्षिक पुरस्कार- हिन्दी के किसी निर्धारित विषय पर लिखी हुई पुस्तक दिया जाता है। इसके अतिरिक्त सेक्सरिया पुरस्कार जैसे और अनेक पुरस्कार दिए जाते हैं जिससे हिन्दी लेखको को बड़ा प्रोत्साहन मिलता है। इसी के परीक्षा विभाग मे हिन्दी की उच्च परीक्षाये ली जाती हैं जिनमे प्रतिवर्ष सहस्रो विद्यार्थी बैठते हैं। इन परीक्षाओं का समस्त भारतवर्ष मे बड़ा मान है। उत्तम श्रेणी मे आने वाले छात्रों को पदक तथा पारितोषिक भी दिए जाते हैं।

नागरी प्रचारिणी सभा—यह सभा डा० श्याम सुन्दर दास के प्रयत्न से काशी मे स्थापित की गई थी। इस सस्था द्वारा प्रतिवर्ष दर्जनो उत्तमोत्तम पुस्तके प्रकाशित की जाती हैं और हिन्दी लेखकों को अच्छी अच्छी पुस्तके लिखने के लिए यथेष्ट पुरस्कार दिया जाता है। सभा के द्वारा प्राचीन हिन्दी पुस्तको की खोज भी की जाती है जिसके लिए अनेक वैतनिक विद्वान नियत हैं। इस तरह हिन्दी भाषा और साहित्य का यह संस्था बड़ा उपकार कर रही है।

हिन्दुस्तानी एकेडमी—यह सस्था यू० पी० सरकार की देख रेख मे प्रयाग मे स्थापित की गई है। यह हिन्दी तथा उर्दू दोनों साहित्यो की उन्नति के लिए प्रति वर्ष दोनो भाषाओं में उत्तमोत्तम पुस्तके प्रकाशित करती है। लेखको को यथेष्ट पुरस्कार- दिया जाता है। सभा के द्वारा किसी अच्छे विषय पर भाषण की व्यवस्था भी की जाती है और उस पर समुचित पुरस्कार भी दिया जाता है। इस तरह यह सस्था भी हिन्दी तथा-उर्दू साहित्य का बड़ा उपकार कर रही है।

—:०:—

हिन्दी विश्व-विद्यालय

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००१ वि०)

साहित्य प्रश्न पत्र १

सूचना—प्रश्न १, २ और ३ अनिवार्य है। शेष प्रश्नों में से किन्हीं तीन का उत्तर दीजिये।

१—निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं ऐसे तीन को समझाइए जिनके अंकों का योग ३० हो। इनमें यदि कोई विशेष साहित्यिक सौन्दर्य हो तो उसपर भी प्रकाश डालिए।

—भुज-भुजगेस की वैसगिनी भुजगिनी सी,
खेदि खेदि खाती दीह दारुन दलन के।
बखतर पाखीरन बीच धँसि जाती मीन,
पैरि पार जात परवाह ज्यों जलन के।
रैयाराय चम्पति को छत्रसाल महाराज,
भूषन सकत करि बखान को बलन के।
पच्छी पर छीने ऐसे परे पर छीने बीर,
तेरी बरछी ने बर छीने हैं खलन के ॥२॥

उ०—[महाराज छत्रशाल की बर्छियों का वर्णन करते हुए भूषण कवि कहते हैं कि] ये बर्छियाँ भुजारूपी सर्पों की साँपिन के समान साथ रहने वाली हैं। ये (साँपिने) सेना के सिपाहियों को खदेड़ खदेड़ कर खा डालती हैं। ये जिरह बख़्तरों में इस प्रकार धँस जाती हैं जिस प्रकार मछली जल के प्रवाह को चीर कर पार चली जाती है। भूषण कवि कहते हैं कि हे चम्पतराय के सुपुत्र महाराज छत्रसाल आपकी शक्ति का वर्णन भला कौन कर सकता है! परकटे पक्षियों के समान आपके वैरी क्षीण पड़े हुए हैं। आपकी बर्छियों ने बड़े बड़े दुष्टों का बल छीन लिया है।

(इ)—पचवटी बर पर्नकुटी तर बैठे हैं राम सुभाय सुहाए।
सोहै प्रिया, प्रिय बंधु लसै तुलसी सब अग घने छवि छाए॥
देखि मृगा मृगनैनी कहे प्रिय बैन ते प्रीतम के मन भाए।
हेम कुरंग के संग सरासन सायक लै रघुनायक धाए।

उ०—[यह उस समय का वर्णन है जिस समय रामचन्द्र और महारानी सीताजी पचवटी मे बैठे हुए थे। उसी समय सोने का मृग सामने आया और वे अपना धनुष बाण लेकर उसके पीछे दौड़े] तुलसीदास जी कहते हैं कि सुन्दर स्वभाव वाले श्री रामचन्द्र जी पंचवटी मे बैठे हुए हैं। उनके साथ में उनकी प्यारी पत्नी सीता और प्यारे भाई लक्ष्मण भी सुशोभित हो रहे हैं। हरिण जैसी आँखों वाली सीता ने हिरण को देखते ही जो प्रिय वचन कहे वे प्रियतम (रामचन्द्र) के मन को अच्छे लगे और वह धनुष बाण लेकर सोने के हिरन के पीछे दौड़े।

(ई)—मुरली तऊ गोपालहिं भावति।
सुनि री सखी, जदपि नँदनदहिं नाना भाँति नचावति॥
राखति एक पाँय ठाढो करि अति अधिकार जनावति।
कोमल अग आपु आज्ञा गुरु कटि टेढ़ी ह्वै जावति॥
अति अधीन सुजान कनौडे, गिरधर नारि नवावति।
आपुन पौढ़ि अधर-सेज्या पर, कर सो पद पलुटावति॥

उ—मुरली के सम्बन्ध मे एक सखी दूसरी से कहती है कि हे सखी यह मुरली यद्यपि श्रीकृष्ण को तरह तरह के नाच नचाती है फिर भी उन्हें प्यारी लगती है। देखो यह अधिकार दिखाती है कि उन्हे एक पैर से खड़ा रखती है। उनका अंग तो कोमल है और इसकी आज्ञा अत्यन्त भारी है अतः उनकी कमर टेढी हो जाती है। श्रीकृष्ण को अत्यन्त अपने अधीन जानकर उनकी गर्दन को भी झुका देती है। स्वयं अधर रूपी शैय्या पर लेट कर उनके हाथों से अपने पैर दबवाती है।

(उ)—भरित नेह नवनीर नित; बरसत सुरस अथोर।
जयति अपूरब घन कोउ, लखि नाँचत मन मोर॥

हौं ही बौरी विरह बस, कै बौरो सब गाम।
कहा जानिये कहत हैं, ससिहिं सीत कर नाम॥
मृगमद गरबहु जानि जनि, 'मोर सुगध सुहात'।
तुम किरात के बान सों, मरवायो निज तात॥

उत्तर—सबसे पहला दोहा भारतेन्दु बा० हरिश्चन्द्र का है। यह दोहा उन्हें इतना प्यारा था कि अपनी कई पुस्तकों में उन्होंने इसे मगलाचरण के रूप मे दिया है। इस दोहे का अर्थ यह है कि—नवीन नेहरूपी जल से भरे हुए उस अपूर्व बादल की जय हो जो नित्य सुख बरसाता है तथा जिसे देख कर मेरा मन रूपी मोर नाच उठता है। (वह अपूर्व घन श्रीकृष्ण के अतिरिक्त और कोई नहीं है)।

दूसरा दोहा महाकवि बिहारी का है। इसमें एक विरहाकुला सखी अपनी दूसरी सखी से कहती है कि हे सखी, मैं ही विरहवश पागल हो गई हूँ या सारा गाँव का गाँव पागल हो गया है। न जानें क्या समझ कर ये सब चन्द्रमा को को शीतकर (ठढक पहुँचाने वाला) कहकर पुकारा करते हैं। (विरह के कारण उसे चन्द्रमा गर्म मालूम होता है, अतः शीतकर नाम पर उसे आश्चर्य हो रहा है)।

तीसरे दोहे में कवि मृगमद (कस्तूरी) को सबोधित करके कहता है कि हे मृगमद तुम यह समझ कर कि—मेरी सुगध बड़ी ही सुहावनी है—मन में गर्व न करो क्योंकि—तुम्हीं ने अपने जन्मदाता का पता बतलाकर, किरात के बाणों के द्वारा सहार कराया था। (कस्तूरी की सुगध पाकर ही बहेलिया कस्तूरी वाले हिरण को मार डालता है)।

२—उपमा, रूपक, यमक तथा अपन्हुति अलकारों को समझाइए। केवल पारिभाषिक लक्षण लिखना पर्याप्त न होगा, प्रत्येक का एक उदाहरण दीजिए। सुन्दर मौलिक उदाहरण के लिए अपेक्षाकृत अधिक अक दिये जायेंगे।

(उ) उपमा—समानता, रग अथवा गुण पर धर्म वाली दो वस्तुओं अथवा व्यक्तियों की जब तुलना की जाती है तब उपमालंकार होता है।

जिसका वर्णन किया जाता है उसे उपमेय और जिससे उपमा देते हैं 'उपमान' कहते हैं। जिस गुण के कारण उपमा दी जाती है वह 'धर्म' तथा जिस शब्द के द्वारा उपमा देते हैं उसे 'वाचक' कहा जाता है। जिसमें ये चारों बातें हों वह पूर्णोपमा और जिसमे इनमें से किसी की कमी हो वह लुप्तोपमा कहलाती है। उपमा के और भी कई भेद हैं पर मुख्य ये ही दो हैं। उपमा का एक उदरहरण नीचे दिया जाता है।

(१) सुनि सीता दुख प्रभु सुख अयना
भरि आए जल राजिव नयना

× × × ×

(२) साधु चरित सुभ सरिस कपासू।

रूपक—जहाँ उपमेय पर उपमान का आरोप हो अर्थात् जहाँ दोनों में पूर्ण समानता दिखलाई जाय वहाँ रूपक अलकार होता है। उपमालकार में से जब वाचक और धर्म हटाकर उपमेय और उपमान को एक रूप कर दिया जाता है तब यह अलंकार बन जाता है। इसके भी कई भेद होते हैं :—

उ०—राम नाम मनि दीप धरु, जीह देहरी द्वार।
'तुलसी' भीतर-बाहिरौ, जो चाहत उजियार॥

यमक—जहाँ पर एक ही शब्द बार बार आवे परन्तु उसका अर्थ भिन्न-भिन्न हो वहाँ यमक अलकार होता है। जैसे : —

तो पर वारौ उरवसी, सुनि राधिके सुजान।
तू मोहन कैं उरवसी; ह्वै उरवसी समान॥

इस दोहे मे 'उरवसी' शब्द कई बार आया है पर उसके अर्थ भिन्न भिन्न हैं।

अपन्हुति—जहाँ वास्तविक बात को छिपाकर अन्य वस्तु का आरोप किया जाय वहाँ अपन्हुति अलकार होता है। इसके भी कई भेद हैं। उदाहरण नीचे दिया जाता है :—

मैं जो कहा रघुवीर कृपाला
बन्धु न होइ मोर यह काला

इसमें बालि को भाई न बता कर (जो वास्तविक बात है) काल बताया गया है।

प्र० ३—प्रथम प्रश्न के अवतरण आ, इ, तथा उ में प्रयुक्त छन्दो के क्या लक्षण हैं ? वर्णिक और मात्रिक छन्द कैसे पहचाने जा सकते हैं ? प्रथम प्रश्न के 'ई' अवतरण मे प्रयुक्त छन्द मात्रिक है या वर्णिक ?

उत्तर—प्रथम प्रश्न पत्र के (आ) में प्रयुक्त छन्द को कवित्त या घनाक्षरी कहते हैं। इसमें १६, तथा १५ वर्णों के विश्राम से कुल ३१ वर्ण होते हैं।

(उ) में प्रयुक्त छन्द दोहा है। इसके प्रत्येक चरण मे १३, ११ के विश्राम से २४ मात्राएँ होती हैं। वर्णिक छन्दों गणों अथवा वर्णों या अक्षरों की गिनती होती है और मात्रिक छन्दों मे मात्राओं की। वर्णिक तथा मात्रिक छन्दों की पहचान यह है कि वार्णिक छन्दों के प्रत्येक चरण मे ह्रस्व, दीर्घ अक्षरों का क्रम एक सा रहता है। मात्रिक छन्दो मे ऐसा होना आवश्यक नहीं है। उनमें नियमित मात्राएँ होनी चाहिए। ह्रस्व दीर्घ का क्रम एकसा हो या नहीं। प्रथम प्रश्नपत्र 'ई' मे प्रयुक्त छन्द मात्रिक है।

प्र० ४—"तुलसीदास का लंका-दहन-वर्णन साहित्य की एक अनूठी वस्तु है" उस वर्णन पर प्रकाश डालते हुए इस उक्ति पर अपने विचार प्रकट कीजिए—

उ०—वैसे तो गोस्वामी तुलसीदास जी ने प्राकृतिक तथा अन्य प्रकार के वर्णनों अपनी अद्भुत प्रतिभा का परिचय दिया ही है परन्तु लंका दहन का जैसा सजीव वर्णन उन्होंने कवितावली में किया है वह पढ़ते ही बनता है। उस वर्णन को पढ़ने पर ऐसा ज्ञात होता है मानो पाठक अपनी आँखों से लगी हुई आग का दृश्य देख रहा है। नीचे दो एक उदाहरण दिए जाते हैं जिससे इस कथन की पुष्टि हो जायगी।

जब आग लगती है तब लोग ऐसे व्याकुल हो जाते हैं कि उन्हें अपने प्रियजनों को बचाने तक का ध्यान नहीं रहता, इसका वर्णन करते हुए वह लिखते हैं कि :—

'लागि लागि आगि' भागि भागि चले जहाँ तहाँ,
धीय को न माय, बाप पूत न सँभारही
छूटेबार, बसन उघोर, धूम धुन्ध अन्ध,
कहैं बारे बूढे 'बारि बारि' बार बार ही।
हय हिहिनात, भागे जात, घहरात गज,
भारी भीर ठेलि पेलि रौंदि खौंदि डारहीं।
नाम लै चिलात बिललात अकुलात अति,
"तात तात, तौंसियत, झौंसियत झारहीं॥

कैसा सजीव वर्णन है। छोटे बड़े स्त्री पुरुष सब कपड़े उठाए, बाल खोले 'पानी पानी' चिल्लाते हुए भागे जा रहे हैं। कोई अपनी स्त्री से कह रहा है कि तू भाग जा, कोई अपने पुत्र को भागने की सलाह देता है तो कोई बचा हुआ पुत्र अपने पिता को यही उपदेश दे रहा है।

'प्रिया-तू पराहि, नाथ नाथ ! तू पराहि, बाप !
बाप तू पराहिं, पूतपूत ! तू पराहिरे॥

कोई भागता है, कोई कहता है कि सामान निकालो, कोई आग की गर्मी से व्याकुल होकर पानी पीता हुआ कह रहा है कि 'भई मुझसे आते नहीं बनता'। कोई लपटों में घिरे रहने के कारण विपत्ति में पड़ा हुआ है तो कोई किसी को जलता हुआ ही बाहर निकाल रहा है, कुछ खड़े हुए तमाशा देख रहे हैं तो कुछ कह रहे हैं कि हाय ! आहेग्ग-बड़ी ही भयानक है।

"एक करै धौज, एक कहै काढो सौंज,
एक औंजि पानी पीकै कहै, 'बनत न आवनो'।
एक परे गाढे, एक डाढत ही कोढ एक
देखत है ठाढे, कहैं 'पावक भयावनो'।"

उस अग्नि काण्ड में खाने पीने के पदार्थ जल कर राख हो गए। सोने के

मुकट पलग आदि सामान भी जल रहा है और लोग इन समानो को उठा उठाकर बाहर कर रहे हैं।

"पान, पकवान विधिनाना को सँधानो, सीधो,
विविध विधान धान बरत बखार ही।
कनक किरीट कोटि, पलँग पेटारे पीठ,
काढत कहार सब जरे भरे भारही॥

५—'देव काव्य मे व्यापकता कम है, परन्तु विद्वन्मडली में उनका सम्मान किसी उच्चकोटि के कवि से कम नही है, इसका कारण क्या है?

उ०—रीति कालीन शृगारी कवियों मे बिहारी तथा देव श्रेष्ठ-कवियों मे गिने जाते हैं। देव की कविता का विषय केवल शृंगार- रस ही रहा है। बुढापे मे कुछ भक्ति रस सम्बन्धी कविताएँ भी उन्होने की परन्तु उनका-प्रधान विषय शृगार ही था। शृगार मे स्त्रियों का रूप सौन्दर्य, नख-सिख, नायिका भेद-आदि ही उनके प्रिय विषय थे। सभी-जाति की तथा सभी देश की स्त्रियों का वर्णन करने मे उन्होंने बड़ा अनुराग दिखलाया है। इस रस मे वह यहाँ तक आगे बढ गये थे कि—"जोगहू सौ कठिन संजोग परनारी को' वाला सिद्धान्त मानने लगे थे। शृगार रस बड़ा व्यापक रस है परन्तु देव ने उसकी व्यापकता को सीमित कर दिया था। यही कारण है कि उनके काव्य मे भी वह व्यापकता नहीं मिलती जो उन्ही के समकालीन अन्य कवियों में पाई जाती है। इसका मुख्य कारण यही था कि उन्होंने अपने काव्य में विविध विषयो की अवहेलना की। परन्तु यह सब होते हुए भी आज उन्हे हिन्दी के सर्व श्रेष्ठ कवियो मे स्थान दिया जाता है। इसका कारण उनकी काव्य की व्यापकता नहीं प्रत्युत उनकी मौलिकता प्रतिभा तथा कवित्वशक्ति है। अश्लील शृगार मे भी वह ऐसी सूझ लाते थे कि उनकी कविता शक्ति देख कर मुग्ध हो जाना पड़ता है। अपनी कल्पना के सहारे उन्होने अनेक पुराने भावो मे नवीन चमत्कार दिया है। उनकी उक्तियाँ सुन्दर तथा सरस हुआ करती थी। मुहाविरों का अपनी कविता मे जैसा सटीक प्रयोग वह करते थे वैसा शायद ही कोई कवि कर सका हो।

प्रेमियों के आतरिक भावों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करने में भी वह अद्वितीय थे। यही कारण है कि व्यापकता रहित होने पर भी वह श्रेष्ठ कवियों मे गिने जाते हैं।

६—निम्नलिखित विषयों पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए :—

भ्रमर गीत, रहस्यवाद, अष्टछाप

उ०—**भ्रमरगीत**—भ्रमरगीत श्रीसूरदास जी द्वारा लिखी हुई एक विशेष रचना है। इसमे उन्होंने गोपियो तथा उद्धव के सवाद पर बड़े मनोहर पद बनाए हैं। इसमे गोपियाँ अपना उपालम्भ भ्रमर को सम्बोधित करती हुई कहती हैं इसीलिए इस प्रसंग का नाम ही 'भ्रमरगीत' पड़ गया। घटना यों हुई कि जिस समय गोपियों और उद्धव का संवाद चल रहा था उस समय एक भौरा उड़ता हुआ आया। बस फिर क्या था। गोपियाँ उद्धव को लक्ष्य मे रखकर उसी पर अपनी व्यंग्योक्तियों की बौछार करने लगीं। आगे चलकर 'नन्ददास' ने भी इसी पर एक विशेष प्रकार की रचना की जो 'भ्रमरगीत' के नाम से प्रसिद्ध है। उनके बाद कृष्णदास जी ने भी 'भ्रमरगीत' को बनाया।

रहस्यवाद—परमात्मा से आत्मा के मिलने की आतुरता पर रहस्यवाद की सृष्टि हुई है। यह ससार किसी अदृश्य शक्ति के द्वारा सचालित हो रहा है अतः वह शक्ति हमारे लिए एक रहस्य ही है। रहस्यवाद भी दो तरह का है। एक कबीर का अद्वैतवादी और दूसरा मुसलमानो का सूफीमत सम्बन्धी। सूफीमत में खुदा (ईश्वर) और बन्दे (व्यक्ति) के एकीकरण की भावना रहती है। उसमें माया का कोई स्थान नही रहता परन्तु अद्वैतवादी रहस्यवाद माया को भी मानता है जो आत्मा को परमात्मा से मिलने मे अड़चन डाला करती है। उसमे सद्गुरु का भी महत्व है जो परमात्मा से मिलाने मे परमसहायक माना जाता है। अतः सद्गुरु को बड़ा ऊँचा स्थान दिया गया है।

अष्टछाप—कृष्णभक्ति शाखा के सबसे प्रसिद्ध ८ कवियों की मंडली को 'अष्टछाप' की संज्ञा दी गई है। यह श्री गोस्वामी विट्ठल नाथ जी का

दिया हुआ है। उन्होंने जिन ८ सर्वोत्तम कवियों को चुनकर 'अष्टछाप' की प्रतिष्ठा की उनके नाम ये हैं :—१ श्री सूरदास, २. श्री कुमनदास, ३ श्री परमानन्ददास, ४ श्री कृष्णदास, ५ श्री छीतस्वामी, ६ श्री गोविन्दस्वामी, ७ श्री चतुर्भुजदास, ८ श्री नन्ददास।

७—हिन्दी काव्य की वर्तमान प्रवृत्तियों पर कौन-कौन से प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होते हैं? उदाहरण देकर समझाइए।

उ०—हिन्दी काव्य की वर्तमान प्रवृत्ति पर दो तरह के प्रभाव स्पष्ट लक्षित होते हैं। आधुनिक कवियों का एक दल तो पुरानी काव्य धारा को नवीन जामा पहनाकर पुरानी प्रवृत्तियों को नया रूप दे रहा है। पुराना नायक-नायिका भेद अब अपने पुराने रूप मे न आकर नये शब्दाडम्बरों से ढका हुआ जनता के सामने आया करता है। इनमें भी कुछ कवि ऐसे हैं जो पुराना ही ढग ढग पसन्द करते हैं और अपनी रचना को उसी रूप में उपस्थित करते हैं। दूसरा प्रधान दल उन कवियों का है जो देश तथा समाज की पतितावस्था को देखकर द्रवीभूत हो राष्ट्रीय भावनाओं से युक्त रचनाएँ करता है। इसी दल के अन्तर्गत एक दल रहस्यवादी कवियों का है जिनपर महाकवि रवीन्द्र तथा अंग्रेजी के कवि वर्ड्सवर्थ, कीटस, शैली, बायरन आदि का प्रभाव पड़ा है। इनमें कुछ कवियों की रचना कल्पना-प्रधान होती है और कुछ की भाव-प्रधान। इस प्रकार के कवि नवीनता के बड़े प्रेमी हैं। इनकी कविता के भाव ही नये नहीं होते प्रत्युत छन्द भी नये नये होते हैं। स्वर्गीय श्री 'प्रसाद', श्री सुमित्रानन्द पंत, मोहनलाल महतो, श्री महादेवी वर्मा, श्री रामकुमार वर्मा इसी कोटि के कवि हैं। इन्ही मे एक शाखा ऐसे कवियों की है जो छायावादी कहलाते हैं, श्री भगवती चरण वर्मा, जगन्नाथ प्रसाद 'मिलिन्द', श्री जनार्दन-प्रसाद द्विज और श्री हरिकृष्ण आदि की रचनाएँ इस कोटि के अन्तर्गत हैं।

८—रसखानि तथा घनानन्द जी की कविता की विशेषताएँ लिखिए—

उ०—रसखानि तथा घनानन्द दोनों ही हिन्दी भाषा के सुकवियों में गिने

जाते हैं। दोनों ही प्रेम कवि तथा रस की मूर्ति माने जाते हैं। रसखानि दिल्ली के पठान थे और घनानन्द कायस्थ। अपने जीवन के आरम्भिक काल में दोनों ही परम प्रेमी जीव थे। दोनो ही का सासारिक प्रेम भगवद्भक्ति मे परिणत हो गया। दोनो ने श्रीकृष्ण की भक्ति पर ऐसी सुन्दर रचनाएँ की हैं कि रीति कालीन कवियो मे ऐसी विशुद्ध व्रजभाषा मे प्रेम तथा भक्ति से सराबोर कोई सवैया छन्दों की रचना करने वाला अन्य कोई हुआ ही नहीं। इनकी कविताओ मे प्रसाद तथा भावगाम्भीर्य कूट कूट कर भरा है। शब्दाडम्बर से इनकी कविता सर्वथा शून्य है। कहीं भी ऐसी पक्ति नहीं मिलती जिसके समझने मे घटो माथा पच्ची करनी पड़े।

यह दोनो ही कवि प्रेम का आनन्द ले चुके थे अतः इनकी रचनाएँ भी प्रेम का सच्चा प्रतीक हुई हैं। अपने सासारिक प्रेम को दिव्य प्रम की ओर मोड़ते हुए रसखानि ने कैसी सुन्दर उक्ति कही है:—

तोरि मानिनी ते हियो, फोरि मोहिनी-मान।
प्रेम देव की छविहि लखि, भये मियाँ रसखानि।

घनानन्द की कविताए भी इसी प्रकार सांसारिक प्रेम से दिव्य प्रम की ओर बढी थी। देखिए सुजान का प्रेम बृन्दावन के प्रेम में कैसा परिवर्तित हो गया है।

गुरनि बतायो, राधा मोहन हू गायो,
सदा सुखद सुहायो वृन्दावन गाढे गहिरे।
अद्भुत अभूत महिमंडन, परे तें परे,
जीवन को लाहु हाहा क्यों न ताहि लहिरे।
आनद को घन छायो रहत निरन्तर ही,
सरस सुदेय सो पपीहापन बहिरे।
जमुना के तीर केलि कोलाहल भीर ऐसी,
पावन पुलिन पै पतित परि रहिरे॥

९—भूषण कवि के शिवाजी के समकालीन होने के सम्बन्ध मे आपकी पाठ्य पुस्तक मे जो मत दिये गये हैं, उन पर प्रकाश डालिए।

इसका उत्तर सवत् २००० के साहित्य विषयक प्रश्न पत्र के ६ प्रश्न के उत्तर में देखिए (पृष्ठ ११)

— ० :—

मध्यमा परीक्षा (सम्वत् २००१)

साहित्य—प्रश्नपत्र २

समय ३ घंटे] [पूर्णाङ्क १००

सूचना—केवल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रथम तथा अन्तिम प्रश्न अनिवार्य हैं।

१—अधोलिखित अवतरणों में से किन्हीं तीन को प्रसग-निर्देश-पूर्वक समझाइये :— २४

प्र०—(क) उपर्युक्त मनोवृत्ति का परिणाम यह हुआ कि साहित्य में उच्च विचार तथा पूत भावनाएँ तो प्रचुरता से भरी गईं, परन्तु उसमें लौकिक जीवन की अनेकरूपता का प्रदर्शन न हो सका। हमारी कल्पना अध्यात्म पक्ष में तो निस्सीम तक पहुँच गई, परतु ऐहिक जीवन का चित्र उपस्थित करने में वह कुछ कुंठित-सी हो गई। हिन्दी की चरमउन्नति का काल भक्ति-काव्य का काल है, जिसमे उसके साहित्य के साथ हमारे जातीय-साहित्य के लक्षणों का सामजस्य स्थापित हो जाता है।

उ०—यह अवतरण बा० श्याम सुन्दर दास द्वारा लिखित 'भारतीय-साहित्य की विशेषताएँ' शीर्षक निवन्ध से लिया गया है। इसमें भारतीय साहित्य की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बाबू साहब ने लिखा है कि हमारे साहित्य की विशेषताओं में से सबसे बड़ी विशेषता धार्मिक भावों की प्रचुरता है। आध्यत्मिकता की अधिकता होने के कारण हमारे साहित्य में एक ओर तो पवित्र भावनाओं और जीवन सबधी गहन तथा गम्भीर

विचारो की प्रचुरता हुई, और दूसरी ओर साधारण लौकिक भावों तथा विचारो का विस्तार अधिक नहीं हुआ। अतः परिणाम यह हुआ कि साहित्य मे केवल पवित्र भावनाएँ ही भर गई और लौकिक जीवन के अन्य विषयों का कोई समावेश न रहा। हमारी कल्पना ने केवल आध्यात्मिक जीवन पर ही अपना चमत्कार दिखलाकर उसे पराकाष्ठा पर पहुचा दिया, और जीवन के साधारण पहलू की ओर से वह उदासीन ही रही। हाँ केवल भक्तिकाल ऐसा है जिसके साहित्य के साथ हमारे जातीय साहित्य का समन्वय हो जाता है।

प्र० —(ख) दुष्यन्त—(कान पर हाथ रखकर) पाप से भगवान् बचावें:—

क्यों चाहति तू पदमिनी, करन पातकी मोहि।
अरु दूषित मम वश को, मै पूछत हौ तोहिं॥
सरिता निज तट तोरि जो, रूखन लेति खसाय।
नीर बिगारति आपनो, शोभा देति नसाय॥

उ०—यह अवतरण राजा लक्ष्मण सिंह जी द्वारा अनुवादित शकुन्तला नाटक के ५ वें अङ्क से लिया गया है। दुर्वासा ऋषि के शापवश दुष्यन्त शकुन्तला को भूल गये हैं। इधर बेचारी शकुन्तला इस रहस्य से अनभिज्ञ थी। वह कण्व ऋषि की आज्ञा के अनुसार दुष्यन्त के पास भेजी गई। वहाँ उसके साथ गये हुए कण्व के शिष्यों तथा स्वय शकुन्तला ने बहुतेरी याद दिलाई, परन्तु जब दुष्यन्त को स्मरण न आया तब शकुन्तला ने क्रुद्ध होकर कहा कि हे पुरुवशी! तुमको योग्य नहीं है कि आगे तपोवन मे मुझ सीधे स्वभाव वाली को प्रतिज्ञाओं से फुसलाकर अब ऐसे निठुर वचन कहते हो'। इस पर दुष्यन्त ने कानों पर हाथ रखकर कहा कि हे पद्मिनी, मैं पूछता हूँ कि तू मुझे पापी तथा मेरे वश को दूषित क्यों बनाना चाहती है। 'नदी अपने किनारे को तोड़कर उसपर लगे हुए वृक्षों को यदि ढीला कर देती है तो उससे अपने पानी को गँदला करके अपनी शोभा को बिगाड़ लेती है।

प्र०—(घ) साहित्य का सबसे ऊँचा आदर्श यह है कि उसकी रचना केवल

कला की पूर्ति के लिए की जाय। 'कला के लिए कला' के सिद्धात पर किसी को आपत्ति नहीं हो सकती। वह साहित्य चिरायु हो सकता है जो मनुष्य की मौलिक प्रवृत्तियों पर अवलम्बित हो। ईर्षा और प्रेम, क्रोध और लोभ, भक्ति और विराग, दुःख और लज्जा —ये सभी हमारी मौलिक वृत्तियाँ हैं। इन्हीं की छटा दिखाना साहित्य का परम उद्देश्य है।

उ०—यह अवतरण श्री प्रेमचन्द जी द्वारा लिखित 'उपन्यास' शीर्षक लेख से लिया गया है। साहित्य के आदर्श के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट करते हुए वह लिखते हैं कि साहित्यकार का काम केवल पाठकों का मन बहलाना नहीं है। यह तो भाटों और मदारियों, विदूषकों और मसखरों का काम है। साहित्यकार का पद इससे कहीं ऊँचा है, वह हमारा पथ-प्रदर्शक होता है, वह हमारे मनुष्यत्व को जगाता है। वह ऐसे चरित्रों का निर्माण करता है जो प्रलोभनों के आगे सिर न झुकाए, बल्कि उनको परास्त करे। जो वासनाओं के पजे में न फँसे बल्कि उनका दमन करें। अतः साहित्यिक रचना का सबसे बडा उद्देश्य यह होना चाहिए कि उससे कला की पूर्ति की जाय। कुछ लोग कहा करते हैं कि कला केवल कला के लिए है उससे अन्य उद्देश्य पूर्ति की आशा न रखनी चाहिए। यह सिद्धान्त अपने स्थान पर ठीक है, परन्तु फिर भी जो लेखक यह चाहता है कि उसका साहित्य या रचना चिरस्थायिनी रहे तो उसे अपनी रचना में मनुष्य की मौलिक प्रवृतियों का चित्रण अवश्य करना चाहिए। ईर्षा, प्रेम, क्रोध, लोभ आदि का होना मनुष्य में स्वाभाविक है। इन्हीं मनोविकारों के कार्यों को दिखलाना ही सच्चे साहित्यक का कार्य होना चाहिए।

प्र०—(ड) इसीलिए प्रकृति में उसे इतना सुन्दर और मनमोहन आवरण दिया है—रमणी का रूप। सगठन और आधार भी वैसे ही हैं। उन्हें दुरुपयोग में न ले आओ। क्रूरता अनुकरणीय नहीं है। उसे नारी-जाति जिस दिन स्वीकृत कर लेगी, उस दिन समस्त सदाचारों में विप्लव होगा। फिर कैसी स्थिति होगी, यह कौन कह सकता है।

यह अवतरण 'अजातशत्रु' के तीसरे अङ्क के चौथे दृश्य से लिया गया है। कोशल की रानी शक्तिमती तथा सहकारी सेनापति दीर्घ कारायण में परस्पर बातचीत हो रही है। स्त्री पुरुषों के अधिकार तथा सीमा पर बातचीत होने के सिलसिले मे रानी शक्तिमती ने कहा कि यदि पुरुष वध जैसे कठोर तथा नृशस कार्य कर सकता है तो स्त्रियाँ क्यों नहीं कर सकतीं। इसका विरोध करते हुए कारायण ने कहा कि विश्व भर मे सब कार्य सब के लिए नहीं है। सूर्य अपना काम जलता बलता हुआ करता है, तो चन्द्रमा उसी आलोक को शीतलता से फैलाता है। पुरुष क्रूरता है तो स्त्री करुणा है। इसीलिए प्रकृति ने उसे इतना सुन्दर बनाया है कि वह नृशसता से दूर रहे। रमणी के इस रूप का दुरुपयोग न करो, शक्तिमती! क्रूरता ऐसी वस्तु नहीं कि उसका अनुकरण किया जा सके। जब नारी जाति क्रूरता को अपनालेगी तब सदाचारो का अन्त हो जायगा। और फिर ससार की क्या दशा होगी—यह कहा नही जा सकता।

प्र० २—'अजातशत्रु' की कथा-वस्तु-योजना मे विरुद्धक और मागधी का स्थान बतलाइए।

उ०—'अजातशत्रु' का पूरा कथानक ३ अंको मे समाप्त किया गया है। प्रधान घटनास्थल तीन हैं, मगध, कोशल, और कौशाम्बी। जो विरोधाग्नि मगध मे प्रज्वलित हुई उसकी प्रचडता कोशल मे दिखाई पडी और उसकी लपट कौशाम्बी तक पहुँची है। अतः इस दृष्टि से कोशल राज्य का नाटक के कथानक मे महत्वपूर्ण स्थान है। विरुद्धक कोशल का राजकुमार है। मगध का समाचार जैसे ही कोशल देश मे पहुंचता है वैसे ही सारी राजसभा मे अजात के अपने पिता के विरुद्ध हो जाने की घटना पर विवाद उठता है। युवराज विरुद्धक ने अजात का पक्ष लिया, जिसमे उसके पिता प्रसेनजित को दुरभिसन्धि की आशका हुई और उन्होंने उसे युवराज पद से पृथक कर दिया। असहाय और निरवलम्ब होने से उसमे विरोधमूलक दृढता उत्पन्न होती है, और वह अपनी धुन का पक्का हो जाता है। 'अपमान सहकर अपने पिता के आसन की भी' इच्छा उसे नही है। शैलेन्द्र डाकू बनकर काशी की जनता मे

आतंक फैलाता है। पहले तो बंधुल को अपने दल में मिलाने की चेष्टा करता है। बाद में अजात-शत्रु को ही अपना लक्ष्य बनाता है। तत्पश्चात् उसे अनुकूल बनाकर युद्ध की मन्त्रणा करके शपथ करता है कि 'कौशाम्बी की सेना पर मैं आक्रमण करूँगा।' अंत में पिता से क्षमा प्राप्त कर राज्याधिकारी बनता है। इस तरह कथानक मे आरम्भ से अंत तक उसका विशेष स्थान है।

इसी प्रकार मागधी भी कथानक मे अपना विशेष स्थान रखती है। उसके पिता ने उसके विवाह का प्रस्ताव बुद्ध से किया था परन्तु उन्होंने तिरस्कार पूर्वक उसे अस्वीकृत कर दिया था। उसी दिन से वह इस तिरस्कार की ज्वाला से जलने लगी। उदयन से विवाह होने पर भी वह इस घटना को न भूलती और एक दिन मन ही मन सोचती हुई कहती है—"इस रूप का इतना अपमान, सो भी एक दरिद्र भिक्षु के हाथ।" उदयन के यहाँ उस रूप का गौरव' तो प्राप्त हुआ, परन्तु दरिद्र कन्या होने के अपमान से वहाँ भी दुखी है। अत: निश्चय करती है कि 'दिखला दूँगी कि स्त्रियाँ क्या कर सकती हैं।' इसी निश्चय के अनुसार पद्मावती के विरुद्ध षडयन्त्र रचती है और उसे प्रासाद छोडकर भागना पडता है। तत्पश्चात् काशी की वीर विलासिनी बनकर शैलेन्द्र नाम धारी विरुद्धक के पजे में पडकर मरते मरते बचती है। इस तरह कई घाटों का पानी पीने के बाद मल्लिका की शान्ति-दायिनी छाया मे विश्राम लेती है।

प्रश्न ३—सर्वमान्य नैतिकता के आधार पर दुष्यन्त के चरित्र की समीक्षा कीजिए।

उ०—'शकुन्तला' के चरित नायक दुष्यन्त का चरित्र आदर्श रूप मे अंकित किया गया है। आरम्भ से लेकर अंत तक कहीं भी उसके चरित्र मे ऐसी बात नहीं पाई जाती जो उसे सर्वमान्य नैतिकता के आदर्श से गिरादे। जिस समय वह कण्व ऋषि के आश्रम में पहुचता है उस समय अपने अनुचरों को आज्ञा देता है कि तपोवन मे कोई भी ऐसा कार्य न किया जाय जिसमे तपस्वियों के कार्यों में विघ्न पहुचे। 'शकुन्तला' के आश्रम मे पहुचकर यद्यपि वह स्वाभाविक मनोविकार के वश में हो जाता है, परन्तु फिर भी

शकुन्तला से बोलने का तब तक साहस नहीं करता, जब तक उसे यह ज्ञात नहीं होता कि वह ऋषि की कन्या न होकर क्षत्रिय कन्या है। अपनी प्रजा के दुख सुख का उसे प्रति समय ध्यान रहता है। प्रजा के तनिक से कष्ट को भी सुनकर वह उसे तुरन्त दूर करने की चेष्टा करता है। उसके सम्बन्ध मे सोचता हुआ कंचुकी कहता है कि :—

जोरि तुरग रथ एकदों, रवि न लेत विश्राम।
तैसे ही नित पवन कों, चलिबे ही तें काम॥
भूमिभार सिर पै सदा, धरत शेष हू नाग।
यही रीति राजान की, लत छठो जो भाग॥

दूसरे की राय यह है कि: -

राखत बन्धु समान, याही ते तुम सबन को।
करत मान सन्मान, दुःख न काहू देत हो॥

उसके प्रजापालन का यह आदर्श था। उधर चरित्र की इतनी दृढता थी कि दुर्वासा ऋषि के शाप वश जब वह शकुन्तला को भूल गया तब परस्त्री समझ कर उसे स्वीकार नही करता और स्पष्ट शब्दो मे उत्तर देता है कि:—

क्यों चाहति तू पद्मिनी, करन पातकी मोहि।
अरु दूषित मम वश को, मै पूछत हौ तोहि॥

फिर सोच समझकर भी जब स्मरण नहीं आता तब कहता है कि: —

किधौ दार त्यागी बनूँ, करि याको अपकार।
कै परनारी परस कौं, लेहु दोप सिर भार॥

वीर ऐसा था कि बडे बडे वीर उसके नाम से थर्राते थे। इन्द्र तक उसकी सहायता के इच्छुक रहते थे। इस तरह दुष्यन्त सभी दृष्टियों से एक आदर्श नायक था।

प्रश्न ४—'अजात शत्रु' अथवा 'शकुन्तला' को उदाहरण स्वरूप लेकर समझाइए कि किस अर्थ में नाटक मे दृश्यत्व और काव्यत्व रहता है।

उ०—नाटक दृश्य-काव्य के अन्तर्गत है अतः उसका अधिक महत्व रंग मंच पर खेले जाने मे ही है। वह पहले अभिनय करने की वस्तु है बाद मे साहित्य की उज्वल रत्न-राशि। नाटको मे उन्ही तत्वों का विशेष समावेश करना चाहिए जो उसमे दृश्यत्व ला सकें। कृत्रिमता या बनावटीपन से नाटक का बहुत कुछ महत्व घट जाता है। वह कोरा काव्य बन जाता है। अतः उत्तम नाटककार अपने नाटक को सच्चा दृश्य काव्य बनाने मे विशेष दत्तचित्त रहते हैं। नाटक मे जो पात्रों के कथोपकथन रहते हैं उनमे ऐसी भाषा का ही प्रयोग किया जाता है जो अनाटकीय न हो। कृत्रिम और काव्यमयी भाषा से नाटक का नाटकीय गुण उड़ जाता है। उनमे केवल काव्यत्व ही रह जाता है। 'अजात शत्रु' मे कई स्थल ऐसे हैं जहाँ पर दृश्यत्व का अभाव है। पात्रों के कथोपकथन मे भी कृत्रिमता आ गई है। उनमें केवल काव्यत्व ही दृष्टि गोचर होता है। उदाहरण स्वरूप राजा प्रसेनजित् के प्रति बन्धुल की यह उक्ति दी जा सकती है। बन्धुल कहता है— 'सम्राट, कोशल की विजयिनी पताका वीरो के रक्त मे अपने अरुणोदय का तीव्र तेज दौड़ाती है और शत्रुओं को उसी रक्त मे नहाने की सूचना देती है"। आगे चलकर बन्धुल अपने घोर अपमान की बातो को सोचता हुआ कहता है कि "जीवन के प्रभात का वह मनोहर स्वप्न, विश्वभर की मदिरा बनकर मेरे उन्माद की सहकारिणी कोमल कल्पनाओ का भंडार हो गया, × × × विश्व के असख्य कोमल कंठ की रसीली तानें पुकार बनकर तुम्हारा अभिनन्दन करने, तुम्हें सम्हाल कर उतारने के लिए नक्षत्र लोक को गई थीं।" इस तरह के कथोपकथन मे स्वाभाविकता नाम मात्र को भी नहीं। नाटको मे इस तरह की भाषा से नाटक का प्रधान गुण दूर हो जाता है। लच्छेदार-जटिल भाषा केवल साहित्य की शोभा हो सकती है। नाटक की नही। नाटक खेलने की वस्तु होती है और साहित्य मनन करने की। दोनों मे बहुत अन्तर है। 'अजात शत्रु' मे ऐसे बहुत से स्थल हैं।

प्र० ५—'उसने कहा था' या 'रमणी का रहस्य' शीर्षक कहानी का विश्लेषण करके आख्यायिका के तत्वों और उद्देश्य का विवेचन कीजिए।

उ०—श्री चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' जी द्वारा लिखित 'उसने कहा था' शीर्षक कहानी कला की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ कहानियो मे मानी जाती है। पात्रों का चरित्र चित्रण घटनाओ का यथार्थ-सजीव-वर्णन एव प्रेम का मर्यादित सकेत जैसा इस कहानी मे मिलता है वैसा अन्यत्र नही। सामान्यतः किसी भी कहानी के १-कथानक, २-पात्र, ३-कथोपकथन, ४-देशकाल या परिस्थिति, ५-भाषा भावव्यजना, ६—उद्देश्य ये छः तत्व हुआ करते हैं। ये छः तत्व कहानी को जॉचने की कसौटी हैं। जिसमे इन तत्वों का निर्वाह उत्तम ढग से किया जाता है वे ही उच्च कोटि की कहानियॉ मानी जाती हैं। 'उसने कहा था' कहानी इन तत्वो पर जॉचने से उत्तम ठहरती है। सबसे पहले कथानक पर दृष्टि डालने से ज्ञात होता है कि लेखक ने घटना या कथानक के चुनाव मे दृष्टि-कोण की मौलिकता तथा कथा को चरमसीमा तक (Climax) पहुचाने के कौशल पर पूरा पूरा ध्यान रखा है। कहानी का वह अतिम अश जिसमे लहना सिह मरते समय सारी घटनाओ का स्मरण करता हुआ कथानक को पाठका पर प्रकट करता है, बड़ी बुद्धिमत्ता के साथ लिखा गया है। कला के अनुसार वही पात्र प्रधान माने जाते है जिनका चरम सीमा (Climax) से घनिष्ट सम्बन्ध है। इस कहानी मे लहनासिह ओधा, सूबेदार हजारा सिंह और उसकी पत्नी सभी का चरम सीमा से घनिष्ट सम्बन्ध है।

कथोपकथन भी बडा स्वाभाविक और मनोवैज्ञानिक हुआ है। कहानी के पात्रो की परस्पर बातचीत से विचार आदर्श और उद्देश्य का पता चल जाता है। कहानी के आरम्भ मे बालक लहनासिह और लडकी का परस्पर वार्तालाप मध्य मे लहनासिह तथा अन्य सिपाहियों की बातचीत स्वाभाविक और सुन्दर हुई हैं। देश, काल, तथा परिस्थति का भी इस कहानी मे समुचित ध्यान रखा गया है। कोई भी ऐसी बात नहीं कही गई जो देश, काल या परिस्थिति के प्रतिकूल जान पडे। स्थान, ऋतु, समय, नगर, गॉव आदि सब का सम्बन्ध देश काल से होता है। अतः इस कहानी के मध्य भाग मे युद्ध स्थल का जा वर्णन किया गया है-उसमे इस तत्व का पूरा पूरा ध्यान रखा गया है। भाषा भी रोचक सरल और शिष्ट है। जहॉ जैसी भाषा का प्रयोग आवश्यक है

जहाँ वैसी भाषा का प्रयोग किया गया है। कहानी उद्देश्य रहित—केवल मनोरंजन के लिए—नहीं लिखी गई। क्योंकि लहनासिंह के चरित्र से वीरता, सहृदयता तथा प्रतिज्ञापलन आदि के सुन्दर सकेत प्राप्त होते हैं।

प्र० ६—'कल्पना और यथार्थ' शीर्षक निबन्ध मे दिये गये गुप्त जी के विचारो से आप कहाँ तक सहमत हैं ?

उ०—'कल्पना और यथार्थ' शीर्षक निबन्ध मे गुप्त जी ने जो विचार प्रकट किए हैं उनका निष्कर्ष यही है कि कविता का उद्देश्य केवल ऊँची उड़ान भरना तथा स्वर्गीय कल्पनाओ का गुम्फनमात्र मान लिया गया है। गुप्त जी का कहना है कवित्व मे भले ही ऊँची उडानों तथा स्वर्गीय कल्पनाओ का समावेश रहे परन्तु उसमे यथार्थता का पुट भी आवश्यक है। जिस काव्य या कविता से किसी सुन्दर उद्देश्य की सिद्धि न हो सके उसे केवल मनोहर शब्दो का गुम्फन मात्र कहा जायगा। इसी को दृष्टि मे रखकर गुप्त जी ने लिखा है कि—"एक एक पत्ते मे फूल खोजने की चेष्टा व्यर्थ होगी और ऐसे फूलों का कोई मूल्य भी न रह जायगा और सच पूछिए तो पत्तियों के बीच में ही वह खिलता है" अतः उन्होंने कवियों से अनुरोध किया है कि वे कवित्व की सीमा को अत्यन्त संकुचित न कर दें। आजकल बहुत सी पंक्तियाँ ऐसी लिखी जाती हैं जिनकी शब्दावली बडी मनोहर और चित्ताकर्षक होती है। परन्तु उनसे किसी उद्देश्य विशेष की पूर्ति नही होती। ऐसी निरुद्देश पंक्तिया लिखने वाले प्रायः कहा करते हैं कि कवित्व का काम उपदेश देना नहीं है। परन्तु ऐसे लोग सम्भवतः यह नहीं जानते कि उपदेश कवित्व के ससर्ग से ही सुन्दर बनता है। कविता मय उपदेश का जैसा असर पडता है वैसा कोरी शब्दावली का नहीं। अतएव गुप्त जी का यह लिखना सर्वथा ठीक ही है कि ऊपर केवल स्वर्गङ्गा और स्वर्ग ही नही, वैतरणी और नरक भी हैं। स्वर्ग और नरक उलटे होकर भी ३६ के अङ्कों के सामान पास ही पास रहते हैं।

प्र० ७—'स्वार्थ त्याग का सिद्धान्त प्रकृति के सर्वथा विरुद्ध और इसलिए अव्यवहार्य है। अगणित महात्माओं की वाणी का मधुर सौन्दर्य उसे आकर्षक

नही बना सका है। कोरे प्रतिष्ठा लोभ ने, निस्सन्देह उसे भड़कीला, किन्तु सुकुमार आवरण दे रखा है, जो सत्य की कठोर ठेस नहीं सह सकता। सहस्राब्दियो का इतिहास इसी एक बात को सिद्ध करता है कि समाज की प्रतिष्ठा किसी अधिक ठोस आधार पर करना चाहिये। वह ठोस आधार केवल स्वार्थ ही हो सकता है। एक बार बल-पूर्वक हमे अपना यह युगों का स्वांग उतार फेकना चाहिए, और स्वीकार कर लेना चाहिए कि दूरदर्शी स्वार्थ ही हमारे आचार का सच्चा आधार हो सकता है।

(क) इस कथन की अलोचना कीजिए

(ख) इस कथन के लिए उचित शीर्षक सुझाइये

उ० — (क) इस गद्यांश मे जो कुछ लिखा गया है -उसका तात्पर्य यही है कि संसार मे स्वार्थत्याग का जो उपदेश दिया जाता है वह कोरा ढोंग या पाखण्ड है। स्वार्थत्याग की भावना मनुष्य प्रकृति के विरुद्ध है अतः अव्यवहार्य है। बड़े बड़े महात्मा अपनी लच्छेदार भाषा मे इस स्वार्थ-त्याग का उपदेश अवश्य दिया करते हैं परन्तु उनके इन लच्छेदार शब्दों का कोई असर नहीं हुआ करता। उन्होंने इस 'स्वार्थत्याग' शब्द को ऊपर से श्रवण सुखद तथा मधुर बना दिया है, परन्तु यदि सत्यता को कसौटी पर जॉच की जाय तो इसका ठहरना असम्भव हो जाता है। सीधे सादे शब्दों मे यदि कहा जाय तो इसका यही अर्थ निकलता है कि 'स्वार्थ' स्वाभाविक है, और स्वार्थ त्याग अस्वाभाविक एव अव्यवहार्य है। इसलिए स्वार्थ को ही समाज का आधार बनाना चाहिए। स्वार्थत्याग जब अव्यवहार्य है, तब उससे दूर ही रहना चाहिए। कोरा त्याग दिखलाने से समाज का कोई विशेष लाभ नहीं हो सकता।

अब देखना यह है कि इस गद्य खड मे जो बात लिखी गई है वह कहाँ तक ठीक है। लेखक का यह लिखना कि 'स्वार्थ' ही स्वाभाविक है सर्वांश मे यथार्थ है। परन्तु उसका यह लिखना कि यह व्यवहार्य है, अतः स्वार्थ ही पर समाज की नींव रखनी चाहिए, अनुचित प्रतीत होता है। ससार में कितने ही आदर्श ऐसे हैं, जिन्हें साधारण समाज काम मे लाना नहीं चाहता, तो क्या उनका उपदेश बद कर देना चाहिए। फिर स्वार्थत्याग सर्वांश में

अन्यवहार्य भी नहीं है। दर्जनों ऐसे स्वार्थत्यागी हैं जिन्होने यथार्थ में अपने स्वार्थ को तिलाञ्जलि दे दी है और परमार्थ का साधन किया है। हाँ, ऐसे महात्माओं की सख्या बहुत थोड़ी होगी, यह ठीक है। पर आदर्श पालक गुणी महात्माओं की सख्या थोडी ही हुआ करती है। इन थोड़े महात्माओं से ही समाज मे गुणों की भावना फैलती है, तथा उसकी स्थिरता कायम रहती है। अतः स्वार्थत्याग को छोडकर 'स्वार्थ का उपदेश देना अनुचित ही प्रतीत होता है।

(ख) 'स्वार्थ त्याग की अन्यवहारिकता' यसका उचित शीर्षक होगा।

— ० —

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००१ वि०)

साहित्य—प्रश्नपत्र ३

समय ३ घटे] [पूर्णाङ्क १००

सूचना—केवल पॉच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्न दस अनिवार्य हैं। सभी प्रश्नों के अक समान हैं।

१—वीरगाथा-काल का प्रारम्भ कब से माना जाता है और क्यों? त कालीन सामाजिक एव साहित्यिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिये।

२—'पृथ्वीराज रासों' की प्रामाणिकता के विषय मे भिन्न-भिन्न मतों का उल्लेख करते हुए उसकी प्रामाणिकता पर युक्ति-सगत विचार कीजिये।

३—रहस्यवाद का आप क्या तात्पर्य समझते हैं? कबीर और जायसी के रहस्यवाद की तुलना कीजिये।

४—निर्गुण धारा तथा सगुण धारा से क्या अभिप्राय हैं? प्रत्येक धारा के एक-एक प्रमुख कवि की काव्य-सम्बन्धी विशेषताओं का परिचय दीजिये।

५—रीतिकाल का आरम्भ कब से माना जाता है और क्यो? केशव,

बिहारी और सेनापति मे से किन्हीं दो की भाषा, भाव, शैली तथा काव्य-सम्बन्धी विशेषताओ की मार्मिक तथा युक्ति-सगत आलोचना कीजिये।

६ — हिन्दी-गद्य के विकाश का सक्षिप्त विवरण देते हुए मुशी सदासुख-लाल, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र तथा पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी के क्रियात्मक सहयोग का स्पष्ट उल्लेख कीजिये।

७ आलोचना का क्या उद्देश्य है? हिन्दी-साहित्य मे आलोचना के इतिहास का विवरण प्रस्तुत कीजिये। किन्ही दो वर्त्तमान आलोचकों की रचनाओं तथा शैली की विस्तार-पूर्वक व्याख्या कीजिये।

८—निम्नलिखित विषयो मे से किन्ही दो पर आलोचनात्मक टिप्पणियाँ लिखिये :—

(१) ईसाइयो का हिन्दी-प्रचार तथा आर्यसमाज की हिन्दी-सेवा।

(२) आधुनिक हिन्दी-काव्य में सामाजिक भावनाएँ।

(३) छायावाद तथा प्रगतिशील साहित्य।

(४) हमारा नाट्य-साहित्य।

९—हिन्दी भाषा के उद्भव और विकास पर अपने विचार प्रकट कीजिये। हिन्दी की प्रधान बोलियो की व्यापकता का उल्लेख करते हुए ब्रज भाषा अथवा खड़ी बोली के महत्व पर प्रकाश डालिये।

१०—'नागरी लिप' से क्या तात्पर्य है? प्रमाणित कीजिये कि अन्य लिपियो की अपेक्षा यह अधिक सरल एव वैज्ञानिक हैं। च, छ, ठ, म तथा २, ४ आर ५ के वर्तमान रूप किस प्रकार की अवस्थाओं मे रहते हुए विकसित हुए हैं?

—: ० :—

१—वीरगाथा काल का आरम्भ कबसे माना जाता है और क्यों? तत्कालीन सामाजिक एवं साहित्यिक विशेपताओ पर प्रकाश डालिये।

उ० —वीरगाथा काल का आरम्भ सवत् १०५० से माना जाता है। यह वह समय था जब भारतवर्ष पर बाहरी आक्रमण आरम्भ हो गये थे। इधर भारतीय शासकों मे आपस का व्यवहार भी अच्छा न था। वे लोग बिना

किसी विशेष प्रयोजन के केवल वीरता प्रदर्शित करने के लिये भी लड़ा करते थे। अतः इस समय ऐसे कवियों का विशेष सम्मान होना स्वाभाविक था जो बाहरी अथवा भीतरी शत्रुओं के प्रति अपने आश्रयदाता को उत्साहित कर सकें। समय की आवश्यकता के अनुसार ही कविताएँ भी हुआ करती हैं, इस लिए इस समय ऐसी कविताएँ ही अधिक की गईं जिनमें वीरता का प्रदर्शन अधिक होता था। इसी कारण संवत् १०५० के लगभग से ही वीरगाथा काल का आरम्भ माना जाता है।

समाज में उन कवियों का उतना आदर न होता था जो अपने पाण्डित्य का चमत्कार दिखलाया करते थे। अब तो जो भाट, चारण या अन्य कोई भी कवि पराक्रम, विजय आदि पर वीरोल्लास भरी कविताएँ करता था, वही समाज में सम्मान पाता था। दूसरे शब्दों मे यही कहा जा सकता है कि उस समय समाज में वीरता की ही अधिक प्रतिष्ठा थी। ऐसी दशा में साहित्य पर सामाजिक विशेषता का प्रभाव बिना पड़े कैसे रह सकता था। अतः वीरगाथाओं की खूब उन्नति हुई। ये वीरगाथाएँ प्रबन्धात्मक भी थी और मुक्तक भी। जो वीरगाथाएँ प्रबन्धात्मक होती थीं उनमे युद्ध के साथ ही साथ प्रेम का भी वर्णन रहता था। किसी राजा की रूपवती कन्या का चढाई करके अपहरण कर लाना वीरता का कार्य समझा जाता था। उसे लोग गौरव की दृष्टि से देखते थे। यहाँ तक कि राजनीतिक कारणों से होनेवाले युद्धों का कारण भी कोई रूपवती स्त्री ही मान ली जाती थी।

गोरी और पृथ्वीराज के बीच होनेवाले 'आना के युद्ध' तथा हम्मीर पर अलाउद्दीन की चढाई के ऐसे ही कारण कल्पित किए गये थे। यही कारण है कि इस समय के लिखे हुए वीर काव्यों में शृंगार भी मिश्रित रहता था। परन्तु प्रधानता वीर रस ही की रहती थी। उस समय के प्रबन्धात्मक काव्यों में सबसे प्रसिद्ध पुस्तक 'पृथ्वीराज रासो' मानी जाती है। और वीरगीतों के रूप में लिखी हुई सबसे प्रसिद्ध पुस्तक 'बीसलदेव रासो' है।

प्र० २—'पृथ्वीराज रासो' की प्रामाणिकता के विषय में भिन्न-भिन्न मतों का उल्लेख करते हुए उसकी प्रामाणिकता पर युक्ति संगत विचार कीजिए।

३०— 'पृथ्वीराज रासो' ढाई हजार पृष्ठों का एक बड़ा भारी ग्रन्थ है। इसमें ६९ समय या सर्ग हैं। प्राचीन समय मे प्रचलित प्रायः सभी छन्दों का व्यवहार इसमे किया गया है। इसमे आबू के यज्ञ कुण्ड मे चार क्षत्रिय कुलों की उत्पत्ति से लेकर पृथ्वीराज के गौरी द्वारा पकडे जाने तक का सविस्तार वर्णन है।

ऐतिहासिक घटनाओ तथा तिथियों का मेल न खाने के कारण बहुतेरे विद्वान इसे जाली ग्रन्थ समझने लगे हैं। उनका कहना है कि यह ग्रथ प्रामाणिक नही है। इस तरह का विचार रखने वालो मे से सबसे प्रसिद्ध ऐतिहासिक रायबहादुर प० गौरी शकर हीराचन्द जी ओझा हैं। वे इसे १७ वीं शताब्दी का जाल मानते हैं। उनका कहना है कि कुछ सुनी सुनाई बातों के आधार पर इस बृहत् ग्रन्थ की रचना की गई है। यदि यह पृथ्वीराज के समय का लिखा हुआ होता तो इसमे इतनी अप्रासगिक बातें न मिलती जितनी कि इसमे भरी पडी हैं इश ग्रन्थ मे निम्नलिखित घटनाएँ अशुद्ध रूप मे मिलती हैं

१—पृथ्वीराज की बहन पृथा का मेवाड के राना समरसिंह के साथ विवाह। पृथ्वीराज १२४८ सवत् मे मर गए थे और समरसिह सवत् १३२४ तक वर्तमान थे।

२—रासो के अनुसार गुजरात के राजा भीम ने पृथ्वीराज के पिता सोमेश्वर को मारा और पृथ्वीराज ने उसका बदला लिया, पर भीमदेव १२३५ मे गद्दी पर बैठे और सोमेश्वर की मृत्यु १२३६ मे हुई (अतः यह घटना भी असत्य है)।

३—रासो के अनुसार आबू के परमार सलक ने गोरी को १२३६ में कैद किया, परन्तु आबू पर न तो इस समय कोई परमार राजा हुआ था और न इतिहास के अनुसार यह घटना हुई थी।

४—'पद्मावती समय' की कथा मे अनद सवत् ११३९ अथवा १२३० वि० मे समुद्र शिखर के यादव राजा विजयपाल की पुत्री पद्मावती के विवाह का जो उल्लेख है वह भी अनैतिहासिक है।

५—जयचंद के अश्वमेध यज्ञ की कथा भी असत्य है। उनके कई दान-पत्र प्राप्त हुए हैं, जिनमें अश्वमेध सम्बन्धी उल्लेख कहीं भी नहीं मिलता।

६—रासो का कोई सवत् ठीक नहीं मिलता। इन सवतों की [illegible] ठीक ठीक मिलाने के लिए राय बहादुर डा० श्याम सुदर दास को अनद सवत् की कल्पना करनी पडी। इस सवत् के अनुसार रासो मे दिए हुए सवतों में ९१ वर्ष जोड देने से विक्रम सवत् निकलता है। डाक्टर साहब का कहना है कि ९१ वर्ष नदों ने राज्य किया और नद वृषल थे इसलिए उनका राज्यकाल सवत् से निकाल दिया गया है। इस अद्भुत कल्पना को मान लेने पर भी सवत् ठीक नहीं बैठते। रासो के अनुसार पृथ्वीराज का जन्म १११५ सवत् मे हुआ। इसमे ९१ वर्ष जोडने पर १२०६ होता है, परन्तु १२०६ मे पृथ्वी राज के पिता बालक ही थे।

डा० बूलर भी इसे जाली मानते हैं। परन्तु डा० श्याम सुन्दर दास और मिश्रबन्धु इसे प्रामाणिक ग्रन्थ समझते हैं। मिश्र बन्धुओं का कहना है कि यदि इसे कोई १६वीं शताब्दी मे रचता तो अपना नाम न लिखकर ऐसा बडा ग्रन्थ चन्द को क्यों समर्पित कर देता। ऐतिहासिक घटनाओ की अशुद्धियों को कहीं वह कविता सबंधी अत्युक्ति और कहीं मुसलमान इतिहास कारों का पक्षपात बतलाते हैं। जो हो, ऊपर जो प्रमाण दिए गए हैं उनमे रायबहादुर गौरी शकर हीरा चद ओझा ही का मत मान्य प्रतीत होता है।

प्र० ३—रहस्यवाद का आप क्या तात्पर्य समझते हैं? कबीर और जायसी के रहस्यवाद की तुलना कीजिये।

उ०—आत्मा का परमात्मा से मिलने की आतुरता पर रहस्यवाद की सृष्टि हुई है। यह जगत किसी अदृश्य शक्ति द्वारा सचालित हो रही है, और वह शक्ति हमारे लिए रहस्य ही है। अतः उस रहस्य के सतत अन्वेषण के आधार पर रहस्यवाद की रचना हुई है। जायसी का रहस्यवाद सूफीमत के आधार पर है। सूफीमत में बन्दे और खुदा का एकीकरण है। उसमे माया के लिए कोई स्थान नहीं। खुदा से मिलने के लिए बन्दे को अपनी रूह का परिष्करण करना पड़ता है, जिसकी चार दशाएँ मानी गई हैं। १—शरीयत २—तरीकत, ३—हकीकत, ४—मारिफत। कबीर का रहस्यवाद अद्वैतवाद के आधार पर है। इसमें आत्मा परमात्मा से मिलकर एक रूप धारण

करती है। इसीलिए उन्होने आत्मा को स्त्री रूप मे और परमात्मा को पुरुष रूप मे माना है। जब आत्मा परमात्मा से जा मिलती है तब रहस्यवाद की पूर्ति हो जाती है। कबीर के रहस्यवाद मे माया का भी विशेष स्थान है, जो आत्मा को परमात्मा से मिलने के मार्ग मे तरह तरह की अड़चने डालती है। उन्होंने माया के भी दो रूप माने हैं, एक सत्य, दूसरा मिथ्या। इनमे सत्य माया महात्माओं को ईश्वर प्राप्ति मे सहायता देती है, और मिथ्या माया अड़चने डालती है। इन्होंने मिथ्या माया का ही अधिक वर्णन किया है। कबीर के रहस्यवाद मे सतगुरु का भी प्रधान स्थान है। यहाँ तक कि उन्होंने कहीं कही उसे ईश्वर से भी बड़ा स्थान दिया है, क्योंकि ईश्वर से मिलाने का साधन सत्गुरु ही होता है। उन्होंने एक स्थान पर कहा भी है कि :—

गुरु गोविन्द दोनों खड़े, काके लागू पाय।
बलिहारी गुरु आपकी, गोविन्द दिया बताया।

उनके रहस्यवाद मे जो प्रेमतत्व की प्रधानता मिलती है, वह उन्होंने सूफियो से ली है। इसलिए कबीर का रहस्यवाद अद्वैतमत और सूफी मत का मिश्रण है।

प्र० ४—निर्गुण धारा तथा सगुण धारा से क्या अभिप्राय है ? प्रत्येक धारा के एक एक प्रमुख कवि की काव्य सबधी विशेषताओं का परिचय दीजिए।

उ० —जो लोग भगवान की साकार पूजा के पक्षपाती थे तथा शिव, विष्णु आदि की मूर्ति बनाकर उपासना किया करते थे, वे सगुणोपासक कहलाते थे और जो भगवान् को निराकार मानकर मूर्ति पूजा का विरोध करते थे वे निर्गुणोपासक कहलाते थे। इन दोनो तरह के भक्त कवियों के नाम पर उक्त दोनो धाराओं का नाम पड़ा। जिस धारा या परम्परा मे निर्गुण कवि प्रधान थे वह निर्गुण धारा कहलाई और जिसमे सगुण कवियों की प्रधानता थी सगुण धारा के नाम प्रचलित हुई। निर्गुणोपासकों मे भी दो तरह के कवि हुए। एक ज्ञानाश्रयी और दूसरे प्रेममार्गी। निर्गुण मार्ग के

ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रधान प्रवर्तक कबीर थे, तथा प्रेममार्गी शाखा के कुतबन और जायसी। सगुण मार्ग के मुख्य कवि तुलसी और सूर माने जाते हैं। नीचे निर्गुण तथा सगुण मार्ग के एक एक प्रधान कवि की विशेषताओं का परिचय दिया जाताहै :—

निर्गुण धारा-कबीर—कबीर के पहले भी बहुत से धार्मिक सुधारक हुए परन्तु उनमे इतना साहस न था कि अप्रिय सत्य कह सकें। कबीर की कविता की सबसे बड़ी विशेषता उनकी निर्भीकता थी। वह जिसे पाखन्ड समझते थे उसे निर्भय हो कर कहा करते थे। उन्हें हिन्दू मुसलमान किसी का कोई विचार न था। जिसमे पाखण्ड देखा उसी की भर्त्सना की। अंध विश्वास के-वह कट्टर शत्रु थे। उनका विचार था कि धर्म का मार्ग संसारिक भेदभावों से परे है। अतः वह कहा करते थे कि :-

कह हिन्दू मोहि राम पियारा, तुरुक कहै रहिमाना।
आपस मे दोउ लरि लरि मूये, भेद न काहू जाना॥

भारत में सर्वप्रथम बन्धुत्व भाव फैलाने वाले भी वही थे। जाति विभाग तथा ऊँच नीच का एकीकरण का भाव भी उन्होंने ही फैलाया। अपने विचारो के समर्थन के लिए वह किसी धार्मिक ग्रन्थ का आश्रय न लेकर, जो साक्षात् देखते थे वही कहते थे।

मै कहता हूँ आँखिन देखी।
तू कहता कागद की लेखी॥

शिक्षित समाज पर चाहे कबीर का उतना प्रभाव न पड़ा हो परन्तु साधारण जनता मे उनकी वाणियों के कारण यह भाव अवश्य उत्पन्न हो गया कि सबका भगवान एक है-और सब उसी के बन्दे हैं,। वेदात, मायावर्णन. सत्सगति का प्रभाव तथा कर्मकाण्ड की निस्सारता आदि-कठिन विषयो को भी उन्होंने अपनी सीधी सादी चलती भाषा में बहुत अच्छी तरह से समझाया है।

सगुण धारा तुलसीदास—जिस प्रकार निर्गुणधारा मे दो शाखाएँ थी उसी प्रकार सगुण धारा भी दो भागों मे विभक्त थी। एक धारा

में राममक्ति के कवि आते हैं और दूसरी मे कृष्णभक्ति के। तुलसीदास जी रामभक्ति शाखा के सबसे प्रसिद्ध कवि थे। उनकी कविता की सबसे बड़ी, विशेषता प० रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों मे यह है, कि एक ओर तो वह व्यक्तिगत साधना के मार्ग में विरागपूर्ण शुद्ध भगवद्भक्ति का उपदेश करती है, दूसरी ओर लोकपक्ष मे आकर पारिवारिक और सामाजिक कर्त्तव्यों का सौंदर्य दिखाकर मुग्ध करती है। व्यक्तिगत साधना के साथ ही लोक धर्म की अत्यन्त उज्वल छटा केवल इन्हीं महानुभाव के काव्यों में देखने को मिलती है। प्राचीन भारतीय भक्ति-मार्ग के भीतर भी उन्होंने बहुत सी बढ़ती हुई बुराइयों को रोकने का प्रयत्न किया। लोक संग्रह का भाव उनकी भक्ति का एक अग था। कृष्णोपासक भक्ति कवियों में इस अंग की कमी थी।

स्वयं विरक्त होते हुए भी उन्होंने अपने पाठकों को गार्हस्थ्य जीवन का उचित आनन्द लेने का उपदेश दिया है। हाँ अतिशय ऐहिक उन्नति के प्रयत्न की उन्होंने अवश्य निन्दा की है। उनकी चौपाइयाँ आज अर्ध शिक्षित से लेकर पूर्ण पडितों तक के घरों में नित्य मुहावरों का काम दे रही हैं। जहाँ किसी को चाटुकारिता का उदाहरण देना हुआ वहाँ चट उसके मुँह से निकल पडता है कि—'हमहूँ कहब अब ठकुर सुहाती।' अपनी शक्ति का परिचय देते हुए लोग बहुधा यह कहते सुने जाते हैं कि यहाँ 'कुम्हड बतिया कोउ नाहीं'। भाई की भक्ति के लिए लक्ष्मण का, पतिव्रता स्त्रियो के लिए सीता का, उदाहरण तो प्रत्येक मनुष्य की जिह्वा पर रहता है। उनकी कविता केवल उपासकों के काम की न होकर जनता की पथ प्रदर्शिका है। यही कारण है आज समस्त संसार मे उसका इतना मान है।

५ प्र०—रीतिकाल का आरम्भ कबसे माना जाता है और क्यों? केशव, बिहारी और सेनापति में से किन्ही दो की भाषा, भाव शैली तथा काव्य-सम्बन्धी विशेषताओ की मार्मिक तथा युक्ति सगत आलोचना कीजिए।

उ०—रीतिकाल का आरम्भ संवत् १७०० से माना जाता है। यद्यपि

रीति-ग्रन्थों की रचनाएँ इस काल से पहले ही आरम्भ हो चुकी थी, परन्तु उसकी अखंडित परम्परा चिन्तामणि त्रिपाठी से ही चली। अतः इस काल का आरम्भ संवत् १७०० से ही माना जाता है। वैसे तो १५६८ मे ही कृपाराम ने, तथा उनके बाद संवत् १६१५ मे गोपराम ने रस और अलकारो पर बहुत कुछ लिखा था और बाद मे काव्यरीति का समुचित सम्पादन आचार्य केशव ने किया परन्तु फिर भी ऊपर लिखे कारण से इस काल का आरम्भ उनसे नमाना जाकर चिन्तामणि से ही माना जाता है।

केशव--हिन्दी ससार मे सूर और तुलसी के बाद आचार्य केशव ही का नाम लिया जाता है। सस्कृत के लाक्षणिक ग्रन्थों का परिचय हिन्दी मे कराने वालो मे आपही का नाम सर्वप्रथम लिया जाता है। रीति पर इन्होंने कविप्रिया और रसिकप्रिया नामक दो प्रसिद्ध ग्रन्थ लिखे। पहला अलङ्कार पर और दूसरा रस पर, दोनो ही सुन्दर ग्रन्थ हैं। रामचन्द्रिका नामक प्रबन्ध काव्य भी इन्होंने लिखा। प्रबन्ध काव्य की दृष्टि से यह काव्य सफल नहीं कहा जा सकता, यद्यपि सवादो का निर्वाह अच्छा किया गया है। वर्णन क्रमानुकूल से ज्ञात न होकर मुक्तक से जान पड़ते हैं। केवल चमत्कार तथा शब्द कौशल अधिक दिखलाया गया है। कला प्रदर्शन के लिए कहीं-कही कादम्बरी तथा अनर्घ राघव की उक्तियाँ ज्यो की त्यो ले ली गई हैं।

केशव की भाषा बड़ी क्लिष्ट है। इनकी भाषा की क्लिष्टता को देखकर ही यह कहावत चल पड़ी कि—

"कवि को दीन न चहै बिदाई,
पूछै केशव की कविताई"।

इनकी काव्य-शैली सबसे निराली थी। अपनी कविता मे चमत्कार लाने के लिए यह क्लिष्ट से क्लिष्ट शब्दो का व्यवहार करते थे। अनेक छन्दों में रचना करना इन्हे बहुत प्रिय था। रामचन्द्रिका मे स्थान-स्थान पर छन्दो में परिवर्तन किया है। भाव की दृष्टि से कही-कहीं पर बहुत सुन्दर भावों का प्रदर्शन किया है। विशेषत. सवादो की रचना मे तो वे बहुत ही सफल हुए हैं।

बिहारी—की गणना हिन्दी प्रसिद्ध महाकवियों में की जाती है। उनका लिखा हुआ केवल एक ग्रन्थ 'बिहारी सतसई' है। इस सतसई में कुल मिलाकर ७१६ दोहे हैं।

इस एक ही ग्रन्थ ने बिहारी को हिन्दी भाषा में वह स्थान प्रदान कर दिया है जो अनेक महाकवियों को कई ग्रन्थ बनाने पर प्राप्त हुआ है। बिहारी की भाषा यद्यपि ब्रजभाषा है तथापि इसमें अन्य भाषाओं के शब्द भी बहुत मिलते हैं। बुन्देल खडी शब्दों का व्यवहार तो इन्होंने बहुत अधिक किया है। 'इजाफा' 'सबील' आदि फारसी शब्द भी मिलते हैं। इन्होंने संसार भर के सभी प्रमुख विषयों पर अपना काव्य चमत्कार दिखलाया है। 'विरहवर्णन' 'मनुष्यप्रकृति' नीति, भक्ति, ज्योतिष 'प्रकृतिवर्णन' आदि विषयों पर ऐसी उक्तियाँ लिखी हैं, कि इनकी बहुमुखी प्रतिभा पर आश्चर्य होता है। इन्होंने अपनी रचना केवल 'दोहा' जैसे छोटे छन्द में की है, और उसकी रचना शैली इतनी निराली है कि कोई भी कवि अपने दोहे को इनके दोहों मे नहीं मिला सकता। अपने इस छोटे से छन्द में इन्होंने इतने गम्भीर भाव भर दिए हैं कि उन्हीं भावों का प्रदर्शन करने के लिए अन्य महाकवियों को कई-कई छन्द लिखने पड़े हैं। अतः 'गागर में सागर' वाली कहावत इनके दोहों पर बिल्कुल ठीक उतरती है। कहीं-कहीं तो एक-एक दोहे का अर्थ लिखने मे विद्वानों को कई-कई पृष्ठ लिखने पड़े हैं। शब्दचयन के अद्भुत कौशल तथा सक्षेप मे गम्भीर भावों के प्रदर्शन में बिहारी अपना समकक्ष नहीं रखते।

प्र० ६—हिन्दी-गद्य के विकास का संक्षिप्त विवरण देते हुए मुन्शी सदासुख लाल, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, तथा प० महाबीर प्रसाद द्विवेदी के क्रियात्मक सहयोग का स्पष्ट उल्लेख कीजिए।

उ०—यद्यपि रीतिकाल के बाद से ही हिन्दी गद्य का कुछ-कुछ प्रचार हो चला था परन्तु खड़ी बोली मे गद्य की नियमित रूप से प्रतिष्ठा करने वाले मुन्शी सदासुख लाल, सैयद इन्शा अल्ला खाँ, लल्लू लाल तथा सदल मिश्र ही हुए। इनके पहले गोरखनाथ के शिष्यों के लिखे हुए गद्य के नमूने

मिले हैं परन्तु उनकी भाषा ब्रजभाषा है। इसके बाद 'चौरासी वैष्णवों की वार्त्ता' तथा दो सो बावन वैष्णवो की वार्त्ता नामक ग्रन्थो मे भी ब्रजभाषा का ही उपयोग किया गया है। सो श्री नदगाम मे रहतो हतो। सो खडन ब्राह्मण शास्त्र पढ्यो हतो" जैसी भाषा का प्रयोग किया जाता था। इसी लिए गद्य लिखने की परिपाटी का आरम्भ करने वाले ऊपर लिखे हुए चार महानुभाव ही माने जाते हैं। इनमे मुशी सदा सुखलाल 'नियाज' दिल्ली के रहने वाले थे। संवत् १८५० मे यह कपनी की अध्यक्षता में चुनार में किसी अच्छे पद पर थे। इन्होंने श्रीमद्भागवत का स्वच्छन्द अनुवाद 'सुखसागर' के नाम से किया। इन्होने तत्कालीन हिन्दुओ की प्रचलित शिष्ट भाषा का ही प्रयोग किया। उर्दू शब्दो के प्रयोग से अपनी भाषा को बचाते रहे। तत्कालीन परिस्थिति को देखते हुए इन्होंने हिन्दी गद्य का बड़ा उत्कृष्ट नमूना उपस्थित किया। इन्होंने अपनी पुस्तक केवल हिन्दी के प्रेम के कारण ही लिखी थी। किसी के अनुरोध पर आर्थिक लोभ से नही, अतः हिन्दी गद्य के विकास मे इनका विशेष स्थान समझना चाहिए।

गद्य के आरम्भिक काल मे जिस प्रकार मुशी सदासुख लाल जी ने हिन्दी गद्य के प्रचार मे क्रियात्मक सहयोग किया उससे भी कहीं बढकर भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र ने हिन्दी की सेवा की। ऊपर जिन महानुभाव का उल्लेख किया गया है उनका गद्य खडी बोली का उत्कृष्ट नमूना नही कहा जा सकता। इस दृष्टि से भारतेन्दु जी ही को हिन्दी गद्य का जन्मदाता समझना चाहिए। 'कवि वचन सुधा' तथा 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' नामक मासिक निकाल कर उन्होंने हिन्दी के अनेक पाठक और लेखक तैयार किये। हरिश्चन्द्र मैगजीन का नाम आगे चलकर 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' रखा गया और उसमे उत्कृष्ट गद्य के नमूने निकलने लगे। इसके अतिरिक्त उन्होंने स्वय भी अनेक ग्रन्थों की रचना करके गद्य प्रसार में क्रियात्मक सहयोग किया। यह सब होते हुए भी उन दिनों व्याकरण की अशुद्धियों तथा सुन्दर वाक्य सगठन पर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता था।

वे 'इच्छा किया' 'आशा किया' जैसे वाक्यांशों का प्रयोग हुआ करता था। भाषा की इस त्रुटि को प० महावीर प्रसाद द्विवेदी ने दूर किया। भाषा की शुद्धता तथा सफाई प्रवर्त्तक वही माने जाते हैं। 'सरस्वती' द्वारा उत्तमोत्तम निबन्ध लिखकर तथा अन्य लेखकों को उत्साहित करके दर्जनों लेख लिखाकर उन्होंने हिन्दी गद्य का बड़ा उपकार किया। 'सरस्वती' के द्वारा अशुद्ध भाषा की कडी समालोचना करके उन्होंने अशुद्ध भाषा के लेखकों को सतर्क कर दिया। अतः शुद्ध भाषा के वे जन्मदाता कहे जाते है। इसके लिए हिन्दी गद्य उनका सदा ऋणी रहेगा।

प्र० ७—आलोचना का क्या उद्देश्य है? हिन्दी साहित्य मे आलोचना के इतिहास का विवरण प्रस्तुत कीजिये। किन्हीं दो वर्त्तमान आलोचको की रचनाओ तथा शैली की विस्तार पूर्वक व्याख्या कीजिए।

उ०—साहित्य के गुण तथा दोषो का प्रदर्शन करके सत्साहित्य का प्रचार करना ही समालोचना का उद्देश्य है। सस्कृत साहित्य मे समालोचना का यह ढग था, जब कोई कवि काव्य रचना करता था तब उसके उत्तम श्लोकों को आचार्य लोग सत्काव्य के उदाहरण मे उद्धृत करते थे, और दूषित श्लोको को दोषो के अन्तर्गत रख देते थे। दूसरा ढग यह भी था कि कवि अथवा लेखक की प्रशसा मे कुछ श्लोक बद्ध उक्तियाँ लिख दी जाती थी। गुण दोष को दिखलाने के लिए अलग पुस्तक लिखने की प्रणाली हमारे यहाँ नहीं थी। हिन्दी भाषा मे समालोचना गुणदोष के रूप मे ही पहले पहल प्रकट हुई। सर्वप्रथम प० बद्री नारायण चौधरी ने अपनी 'आनन्द कादम्बिनी' में तत्कालीन लेखको की रचनाओ की समालोचना निकालनी आरम्भ की। उसमे लाला श्रीनिवासदास लिखित सयोगिता स्वयवर की बडी कड़ी आलोचना प्रकाशित की गई थी। परन्तु पुस्तक रूप मे समालोचना का श्रीगणेश पडित महावीर प्रसाद जी द्विवेदी के समय से ही हुआ। आपने कालीदास पर एक समालोचनात्मक 'कालीदास की निरंकुशता' पुस्तक प्रकाशित की। 'सरस्वती' पत्रिका में भी वह प्रायः कुछ न कुछ समालोचनात्मक

लेख लिखा करते थे। उसके बाद मिश्र बन्धुओं का 'हिन्दी नवरत्न' नामक समालोचनात्मक ग्रन्थ प्रकाशित किया गया, जिसमे हिन्दी के प्रसिद्ध ६ महाकवियों के काव्यों के गुण दोष का विवेचन किया गया था। तत्पश्चात् पडित पद्मसिंह शर्मा ने 'सतसई सहार' के नाम से स्वर्गीय श्री ज्वाला प्रसाद शर्मा की बिहारी पर की गई टीकापर, आलोचनात्मक पुस्तक प्रकाशित की, और बिहारी पर एक स्वतत्र समालोचनात्मक टीका भी लिखी। फिर 'देव और बिहारी' नामक पंडित कृष्ण बिहारी मिश्र की लिखी हुई पुस्तक सामने आई। इस तरह हिन्दी मे समालोचना का सूत्रपात हुआ और अब तो परिचयात्मक समालोचना तो प्राय. सभी पत्रो मे प्रकाशित होती हैं। साथ ही पुस्तको पर गम्भीर समालोचनाएँ भी बराबर प्रकाशित होती रहती हैं। कुछ मासिक या त्रैमासिक समालोचनात्मक पत्र भी हिन्दी में प्रकाशित किये गये। श्रीकृष्ण बिहारी मिश्र का 'समालोचक' तथा श्री प्रेमचन्द का 'हंस' नामक-पत्र इसी कोटि के थे।

श्री कृष्ण बिहारी मिश्र बी० ए०, एल-एल बी० आप व्रजभाषा काव्य के मर्मज्ञ तथा प्रसिद्ध समालोचक हैं। आपने 'समालोचक' नामक त्रैमासिक पत्र का सम्पादन करके समालोचना के क्षेत्र मे बहुत बडा कार्य किया। 'देव और बिहारी' तथा 'मतिरामग्रन्थावली' का सम्पादन भी आपने समालोचनात्मक रूप से किया है। प्रायः देखा जाता है कि किसी कवि या लेखक की समालोचना करते समय समालोचक गण बडी कटु भाषा का प्रयोग करने लगते हैं और ऐसे ऐसे व्यग बाण छोड़ते है जिनसे लाभ तो कुछ होता नहीं उलटे अनेको विद्वानों की दृष्टि मे गिर जाते है। बिना कटूक्तियों के प्रयोग के भी समालोचना की जा सकती है। मिश्र जी की शैली मे यह विशेष बात है। वह अपनी उक्तियो को भद्दे ढग से उपस्थित नहीं करते। 'प्रसाद' तथा 'माधुर्य' गुण से युक्त भाषा में लिखते हुए निर्धारित विषय को बड़े अच्छे ढग से समझाते हैं। वर्तमान समालोचकों मे आपका स्थान बहुत ऊँचा है।

रामकृष्ण शुक्ल एम० ए० 'शिलीमुख' आप महाराजा कालेज-जयपूर-

मे अध्यापक हैं। वर्तमान समालोचकों में आपका भी विशेष स्थान है। आपने हिन्दी भाषा के कई कविनो पर सुन्दर समालोचनाएँ लिखी हैं। जयशंकर 'प्रसाद' जी पर लिखी हुई 'प्रसाद' की 'नाट्यकला' नामक पुस्तक से आपकी समालोचना शक्ति का अच्छा परिचय मिलता है। आपकी शैली व्यंग्योक्ति पूर्ण होते हुए अनुचित आक्षेपों से रहित रहती है।

प्र० ८—निम्न लिखित विषयो मे से किन्हीं दो पर आलोचनात्मक टिप्पणियाँ लिखिए :—

(१) ईसायो का हिन्दी-प्रचार तथा आर्य समाज की हिन्दी सेवा

(२) आधुनिक हिन्दी-काव्य की सामाजिक भावनाएँ

(३) छायावाद तथा प्रगतिशील साहित्य

(४) हमारा नाट्य साहित्य

उ०—८ (४) हमारा नाट्य साहित्य—सन् १९ ० से पहले हिन्दी मे नाटको का नितान्त अभाव था। वैसे तो देव कवि का 'माया प्रपञ्च' नामक नाटक बहुत पहले लिखा जा चुका था, परन्तु नाटक लिखने का वास्तविक आरम्भ भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र जी के समय ही से समझना चाहिए। इन्होंने बगला तथा सस्कृत के अनेक नाटको का अनुवाद करके हिन्दी मे नाटकों का सूत्रपात किया। अनुवादित नाटकों के अतिरिक्त इन्होने 'चन्द्रावली' 'नीलदेवी' तथा 'भारत दुर्दशा' जैसे मौलिक नाटक भी लिखे। उसी काल मे राय देवी प्रसाद 'पूर्ण' तथा बाबू राधाकृष्ण दास एव श्री निवासदास ने भी इस क्षेत्र में अच्छा कार्य किया। परन्तु उस समय के लिखे हुए नाटकों मे से कुछ को छोडकर अधिकाश ऐसे हैं जिन्हे रगमंच पर दिखलाना असम्भव सा ही है। इनमे अधिकाश दृश्य ऐसे दिये गये हैं जो रगमन्च पर नहीं दिखलाये जा सकते। इन नाटकों मे गीत अथवा कविताओं का इतना अधिक उपयोग किया गया है कि उनमे बहुत कुछ अस्वाभाविकता आ गई है।

आजकल वही नाटक अच्छे समझे जाते हैं जिनमे यथार्थ वादिता हो। आदर्शवादी नाटकों को अब लोग पसन्द नही करते। हमारे प्राचीन नाटक

आदर्शवादी होने के साथ ही ऊपर लिखी हुई त्रुटियों से भरे हुए भी थे। उनमें नाचने और गाने की इतनी भरमार रहती थी कि कला की दृष्टि से भद्दापन आ जाता था। कही कहीं तो रोने की बात को पात्र गाकर सुनाया करते थे। इसलिए लोगो की रुचि बदली और कलापूर्ण नाटकों की रचना होने लगी। उन्हे यथार्थ दृश्यकाव्य बनाने की ओर लोगों का ध्यान गया।

स्वर्गीय श्री जयशङ्कर प्रसाद के नाटक कला की दृष्टि से अच्छे कहे जाते हैं, परन्तु उनमे भी ऐसी कई त्रुटियाँ रह गई हैं जिन्हे आधुनिक नाट्यकार छोड रहे हैं। हर्ष की बात है कि अब हिन्दी मे 'राजमार्ग' जैसे कला पूर्ण नाटक प्रकाशित हो रहे हैं।

प्र० ८—(१) ईसायो का हिन्दी प्रचार तथा आर्यसमाज की हिन्दी सेवा—

सवत् १८६० के लगभग हिन्दी गद्य की जब प्रतिष्ठा हुई तब ईसाई प्रचारको ने इसके प्रचार मे खूब हाथ बँटाया। उस समय सिरामपुर मे ईसाई पादरियो का अड्डा था। सवत् १८७५ वि० मे समस्त ईसाई धर्म-पुस्तक का अनुवाद हिन्दी गद्य मे किया गया और जनता मे इसके प्रचार की योजना की गई। इस अनुवाद की भाषा ठेठ हिन्दी थी। उर्दू, फारसी शब्दों का प्राय बहिष्कार किया गया था। क्योंकि उस समय की जनता उर्दू फ़ारसी के कठिन शब्दो को न समझती थी और ईसाइयो को अपना प्रचार शिक्षित तथा अशिक्षित सभी प्रकार की जनता में करना था। ईसाइयो ने अपने धर्म प्रचार की दृष्टि से ही यह अनुवाद कराया था, परन्तु इससे हिन्दी के प्रचार में बहुत अधिक सहायता मिली, इसमे सन्देह नही। इतना ही नहीं उस समय की पादरियों की स्कूल-बुकसोसाइटी ने बहुत सी स्कूली पुस्तकों का अनुवाद भी हिन्दी में कराया। मार्शमैन साहब के प्राचीन इतिहास का अनुवाद 'कथासार' के नाम से प्रकाशित किया गया। इससे भी हिन्दी प्रचार में बहुत सहायता मिली।

आर्य समाज ने अपने प्रारम्भिक काल से ही हिन्दी की बडी सेवा की।

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द ने आर्य भाषा (हिन्दी) को अपने सिद्धान्तो के प्रचार मे प्रधान लक्ष्य बनाया। स्वय गुजराती भाषा भाषी होते हुए भी 'सत्यार्थ प्रकाश' हिन्दी भाषा ही मे लिखा और धार्मिक कृत्यों मे आर्य भाषा (हिन्दी) के उपयोग करने का ही उपदेश दिया। अब भी आर्य समाज द्वारा हिन्दी की बडी सेवा की जा रही है। आर्यसमाज द्वारा स्थापित सभी सस्थाएँ हिन्दी साहित्य के प्रचार तथा निर्माण मे बहुत सहायता पहुचा रही हैं।

प्र० ६—हिन्दी भाषा के उद्भव और विकास पर अपने विचार प्रकट कीजिये। हिन्दी की प्रधान बोलियो की व्यापकता का उल्लेख करते हुए ब्रजभाषा अथवा खडी बोली के महत्व पर प्रकाश डालिये।

उ०—हिन्दी भाषा के उद्भव के सम्बन्ध मे विद्वानो के भिन्न भिन्न मत हैं, परन्तु इस विषय मे सभी एक मत हैं कि हिन्दी का उद्भव प्राकृत भाषाओ से हुआ है। स्वर्गीय डा० श्यामसुन्दर दास जी बी० ए० की राय है कि मूल भाषा (जिसके उदाहरण अब नहीं मिलते) से वैदिक संस्कृत की उत्पत्ति हुई। यही मूल भाषा पहली प्राकृत कहलाती है। आगे चल कर पहली प्राकृत या मूल भाषा दूसरी प्राकृत के रूप मे परिवर्तित हुई, जिसकी तीन अवस्थाएँ हुई:— 'पाली' शौर सेनी आदि प्राकृतें तथा अपभ्रश। इन अपभ्रशो के एक भेद शौर सेनी अपभ्रश से हमारी आधुनिक हिन्दी की उत्पत्ति हुई है। ८वीं शताब्दी से लेकर १२वीं शताब्दी तक अपभ्रशो का समय माना जाता है। इसी समय हिन्दी भाषा का अकुर जमा है। हिन्दी के सबसे पुराने रूप की झलक चन्द कवि के 'पृथ्वीराज रासो' मे मिलती है।

हिन्दी का विकास होते होते उसके कई प्रान्तीय रूप बन गये, जिनमें ब्रजभाषा, अवधी, राजस्थानी, मैथिली तथा खडी बोली मुख्य है। इनमे से सभी भाषाओ मे साहित्यिक रचनाएँ की गई, परन्तु ब्रजभाषा को विशेष महत्त्व प्राप्त हुआ। कुछ समय पहले तक यह समस्त हिन्दी क्षेत्र की काव्य-भाषा थी। अपने माधुर्य के कारण शताब्दियो तक इसका एकछत्र राज्य रहा। बाद मे खडी बोली ने इसके स्थान को लेना आरम्भ किया, जो आजकल

हिन्दी गद्य पद्य की भाषा बन रही है। खडी बोली भी यद्यपि ब्रजभाषा की तरह एक प्रान्त मेरठ की भाषा है। परन्तु अब वह इतनी व्यापक हो चुकी है कि सभी प्रान्तों का पढा-लिखा शिष्ट समुदाय उसी मे लिखता और बोलता है। ब्रजभाषा यद्यपि पद्य की भाषा रही, परन्तु उसमें इतनी व्यापकता नही आई। ब्रजमंडल को छोड कर अन्य प्रान्त वाले उसे नहीं बोल सकते। खड़ी बोली मे यह बात नहीं है। प्रत्येक प्रान्त वाले उसे सरलता से बोल सकते हैं। अतः इस दृष्टि से खड़ी बोली ही हिन्दी साहित्य के लिए अधिक महत्व-शालिनी है।

प्र० १०—'नागरी लिपि' से क्या तात्पर्य है? प्रमाणित कीजिए कि अन्य लिपियो की अपेक्षा यह अधिक सरल एवं वैज्ञानिक है। च, छ, ठ, म तथा २, ४ और ५ के वर्तमान रूप किस प्रकार की अवस्थाओं मे रहते हुए विकसित हुए है?

उ०—आजकल जितनी लिपियाँ प्रचलित हैं उनमे नागरी लिपि ही विशेष वैज्ञानिक तथा सरल समझी जाती है। इसकी सबसे बडी विशेषता यह है कि इसमे लिखे हुए शब्दो के उच्चारण अथवा लिखावट मे किसी प्रकार के भ्रम की आशका नही रहती। 'अ' लिखा जाता है तो उसका उच्चारण भी 'अ' ही होता है। अलिफ या ए लिखकर 'अ' का काम नहीं लिया जाता। फिर 'मूली' को मोती अथवा अडे को उडे आदि पढा जाना भी इसमे सम्भव नहीं है। प्रयाग' 'पृथ्वी' जैसे शब्द अन्य लिपियो में लिखे ही नही जा सकते। इस लिपि मे किसी भी भाषा का शब्द सरलता से लिखा और पढा जा सकता है इसीलिए यह अधिक सरल और वैज्ञानिक मानी गई है।

नोटः—प्रश्न के दूसरे हिस्से का उत्तर श्री रायबहादुर गौरी शकर हीरा चद ओझा कृत 'नागरी अक और अक्षर' मे देखिए।

—:o:—

मध्यमा परीक्षा (सम्वत् २००१ वि०)

समय ३ घंटे] [पूर्णाङ्क १००

साहित्य—प्रश्न पत्र ४

१—निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर सुन्दर भाषा में प्रायः १०० पंक्तियों का एक निबन्ध लिखिये :— ६०

(क) साहित्य और जीवन का सम्बन्ध।

(ख) स्त्रियों की उच्चशिक्षा का हिन्दू-संस्कृति पर प्रभाव।

(ग) वैज्ञानिक आविष्कार वर्तमान संसार के लिए अभिशाप प्रमाणित हुए हैं।

(घ) सभ्यता के वर्तमान युग में मानवता का पतन हो रहा है।

(ङ) राष्ट्र-निर्माण के लिए कैसे साहित्य की आवश्यकता है?

२—निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिये:—

(अ) 'आजकल मनोविश्लेषणात्मक कहानियाँ अधिक प्रभावशालिनी हो रही हैं।'—इस कथन की पुष्टि करते हुए बतलाइये, किसकी कहानियों से आप अधिक प्रभावित हुए हैं और क्यों? २०

(ब) सामयिक पत्र-पत्रिकाओं में आपको कौन अधिक प्रिय है? उसकी विशेषताओं एवं उपयोगिताओं को स्पष्ट कीजिये। २०

(स) हिन्दी भाषा और नागरी लिपि के प्रचार में कौन-कौन संस्थाएँ किस प्रकार के कार्य कर रहीं हैं, और उनके कार्यों से निकट भविष्य में आप कितनी सफलता की आशा करते हैं? २०

(द) इस समय के जीवित कवियों में आप जिसको सर्वश्रेष्ठ समझते हो, उसकी कृतियों की कुछ विशेषताएँ दिखलाकर उनकी सर्वश्रेष्ठता सिद्ध कीजिये। २०

—: ० :—

प्र० १—(क) साहित्य और जीवन का सम्बन्ध

(उ) अपनी पाठ्यपुस्तक 'साहित्य सुषमा' में प० नन्ददुलारे वाजपेयी द्वारा लिखित 'साहित्य और जीवन का संबंध' पढ़िए।

प्र० (ग) वैज्ञानिक आविष्कार वर्तमान संसार के लिए अभिशाप प्रमाणित हुए हैं।

उ०—आज के बीसियों वर्ष पूर्व जिस समय वैज्ञानिक आविष्कारों का आरम्भ हुआ था उस समय संसार भर के लोगों को एक 'सुखमय संसार' की कल्पना होने लगी थी। उनकी यह कल्पना कुछ अंशों में ठीक ही थी। क्योंकि आगे चलकर वैज्ञानिक आविष्कारों से मनुष्य जाति का बड़ा उपकार हुआ। रेल, तार, टेलीफोन, आदि से लोगों की कठिनाइयाँ दूर हो गई। महीनों की यात्रा दिनों में और दिनों की यात्रा घण्टों में तय होने लगी। सैकड़ों मीलपर बैठे हुए इष्ट मित्रों का समाचार तार और टेलीफोन के द्वारा मिनटों में मिलने लगा। एक थान कपड़े को ओटने, कातने तथा बुनने में जहाँ १ महीना लगता था वहाँ मशीनों द्वारा थान के थान एक दिन में बुने जाने लगे। किसी बड़ी दावत में जहाँ महीनों पहले आटा पिसवाने का प्रबन्ध करना पड़ता था वहाँ घण्टों में सैकड़ों मन आटे का पिस जाना सम्भव हो गया। बिजली के आविष्कार ने रात को भी दिन बना दिया। कुछ दिनों बाद जब हवाई जहाज का आविष्कार हुआ तब तो लोगों को और भी अधिक प्रसन्नता हुई। यात्रा की कठिनाइयाँ और भी सुलभ हो गईं। जल-स्थल सब का पार करना साधारण बात हो गई। जहाजों के आविष्कार ने जलपर ही विजय प्राप्त की थी, परन्तु इस आविष्कार से मनुष्य जल, स्थल तथा आकाश सबका स्वामी बन बैठा।

परन्तु प्रत्येक वस्तु के दो पहलू हुआ करते हैं—अच्छे और बुरे। मनुष्य चाहे तो किसी भी अच्छी वस्तु से दूसरों को हानि पहुँचा सकता है और दूसरी ओर बुरी वस्तुओं में भी लाभ पहुँचाने की संभावना छिपी रहती है। यही बात वैज्ञानिक आविष्कारों के सबंध में भी है। वैज्ञानिक आविष्कार करने वालों ने यह स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि उनके आविष्कारों से लाभ की अपेक्षा हानि की संभावना होगी। लोग उनके आविष्कारों का दुरुपयोग करेंगे।

जिन आविष्कारों के सबंध में लोग तरह तरह के सुख की कल्पना कर

रहे थे, वह धीरे-धीरे लुप्त होने लगी और अब यह बात प्रमाणित हो चुकी है कि वैज्ञानिक आविष्कारों ने लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक पहुँचाई है।

जिन हवाई जहाजो से जनता की यात्रा तथा डाक की सुलभता होनी चाहिए थी उनसे आज नरसहार का कार्य लिया जा रहा है। वे अपनी छाती पर मनुष्यो को लाद कर इधर से उधर पहुँचाने के बदले बम्ब के गोले लाद कर ले जाते हैं, और उनसे स्त्री पुरुष तथा बच्चों का सहार करते हैं। नित्य नये बमो का आविष्कार हो रहा है, जो कमसे कम समय मे अधिक से अधिक प्राणियों का विनाश कर सके। एटम बम ने यह बात प्रमाणित भी कर दी है। इसके अतिरिक्त न जाने कितनी प्रकार की विषैली गैसो का भी आविष्कार हुआ है जो क्षण मात्र मे लाखों मनुष्यो का सहार कर प्रलय का दृश्य उपस्थित कर दे सकती हैं।

ये अविष्कार तो मनुष्य सहार ही के लिए किये गये हैं अत. इनसे यदि विनाश का कार्य लिया जाता है तो दुःख का विषय भले ही हो परन्तु आश्चर्य की कोई बात नही हैं। आश्चर्य तो तब होताहै जब मनुष्य उपकार के लिए किये गये आविष्कारो से भी हानि पहुँचाई जा रही है। बिजली का आविष्कार मनुष्य के उपकार के लिए किया गया था, परन्तु उससे हानि पहुँचाने का काम लिया जा रहा है।

इसी प्रकार अन्य साधारण आविष्कारों से भी मनुष्य जाति को हानि पहुचने लगी। रेल से आज जहाँ यात्रा की सुविधा हुई है वहाँ प्रति वर्ष सैकडो मनुष्यों के विनाश का कारण भी वहीं है। कलो के आविष्कार मे सैकड़ों मजदूरो की मजदूरी तथा व्यापार को हानि पहुँची है। कपडे बुनने वाली कलों ने जुलाहो को जो हानि पहुँचाई है वह वही जानते हैं। जहाजो के आविष्कार ने नावो के व्यापार को चोपट ही कर दिया है। इसतरह सभी वैज्ञानिक आविष्कारों से मनुष्य जाति को हानि पहुँचने लगी हैं। कुछ आविष्कारो से स्वतः हानि पहुँचती है, तो कुछ जान बूझ कर हानि के लिए आविष्कृत किए गए है, अतः ये वैज्ञानिक आविष्कार वरदान प्रमाणित न होकर अभिशाप ही प्रमाणित हुए हैं

(ख) प्र० स्त्रियो की उच्च शिक्षा का हिन्दू-संस्कृति पर प्रभाव।

उ०—स्त्रियों को शिक्षा देने या न देने वाले प्रश्न पर अब उतना वाद विवाद नहीं हुआ करता जितना कि आज से कुछ वर्ष पूर्व हुआ करता था, क्योंकि स्त्री शिक्षा की उपयोगिता मे अब किसी को सन्देह नहीं रह गया है। अब केवल शिक्षा के ढग पर ही वाद विवाद होता है। कुछ लोग प्रचीन ढग की शिक्षा का पक्षपात करके स्त्रियों को उसी ढंग की शिक्षा देने की वकालत करते हैं, और कुछ आधुनिक ढग की शिक्षा के हामी हैं। उधर एक दल ऐसा भी है जो यह कहा करता है कि स्त्रियों को गृहस्थी के कार्य भार को सँभालने के लिए शिक्षा देने की अवश्यकता तो है, परन्तु उन्हें उतनी ही शिक्षा दी जाय जिससे वह अपने गृह का कार्य सुचारु रूप से चला कर, सच्ची गृहिणी बन सके। उच्च शिक्षा देने से वे हिन्दू सस्कृति पर कुठाराघात करने लगती हैं। उनके रहन-सहन, रीति-रिवाज सब विदेशी हो जाते हैं।

अब देखना यह है कि इस दल की यह आशङ्का कहाँ तक ठीक है। स्त्रियो की उच्च शिक्षा का जैसा कुछ प्रबन्ध आजकल है, उसकी प्रणाली को देखते हुए उक्त दल की आशङ्का मे तथ्य का अन्श अवश्य ज्ञात होता है। आधुनिक ढग के उच्च विद्यालय अथवा विश्वविद्यालयो से जो महिलाएँ शिक्षा प्राप्त करके निकलती हें, वे नाम से अपने को हिन्दू भले ही कहे परन्तु उनके कार्य ऐसे ही होते हैं जिनसे हिन्दू सस्कृति पर कुठाराघात होता हैं। उन्हें हिन्दू रीति रिवाज तथा रहन-सहन से एक प्रकार की घृणा सी हो जाती है। जो बातें हिन्दू शिष्ठाचार के विरुद्ध होती हैं, उन्हीं को वे करती हुई पाई जाती हैं।

कहा जा सकता है कि इसमे शिक्षा का नहीं, प्रत्युत प्रणाली का दोष है। ठीक है। परन्तु जब परिणाम अच्छा न हुआ तब चाहे प्रणाली का दोष हो या शिक्षा का यह विवेचना साधारण मनुष्य नहीं कर पाते। जन साधारण जब उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाओं को हिन्दू सस्कृति के विरुद्ध आचरण करते हुए देखते हैं तो वह उच्च शिक्षा को ही दोषी मान कर कहा करते हैं कि 'भाई इससे तो यही अच्छा है कि इन्हें साधारण शिक्षा दी जाय। उच्च शिक्षा से तो ये अपना धर्म-कर्म सब भूल बैठती है।'

ऊपर जो बात कही गई है उसके अपवाद भी हैं। आज ऐसी महिलाएँ भी मिलती हैं जो उच्चतम-शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी पक्की, हिन्दू संस्कृति की अनुयायिनी हैं। परन्तु ऐसी महिलाओं की संख्या उँगलियों पर गिनने लायक है, अतः उन्हें अपवाद कहा गया है। अधिकांश उदाहरण ऐसे ही मिलते हैं, जिनसे हिन्दू संस्कृति पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

तब क्या स्त्रियों के लिए उच्च शिक्षा बन्द कर देनी चाहिए? नहीं, कदापि नहीं। शिक्षा तो क्या स्त्री क्या पुरुष दोनों के लिए परमावश्यक है। प्रश्न केवल प्रणाली का है। महिलाओं के लिए ऐसे ही विद्यालय तथा अन्य उच्च शिक्षा संस्थाएँ हों जिनमें उन्हें हिन्दू संस्कृत के आधार पर ऊँची से ऊँची शिक्षा दी जाय, जिससे वे अपनी संस्कृति घृणा के बदले प्रेम करना सीखें। आधुनिक ढंग के विश्वविद्यालयों में जब तक शिक्षा के दृष्टिकोण में परिवर्तन नहीं होता तब तक उनसे विशेष आशा नहीं की जा सकती। परन्तु हर्ष है कि भारतवर्ष में अब कुछ ऐसी उच्च शिक्षा देने वाली महिला शिक्षण संस्थाएँ खुली हैं जो उन्हें सुशिक्षित हिन्दू रमणी बनने में सहायता दे रही हैं।

(स) प्र०—हिन्दी भाषा और नागरी लिपि के प्रचार में कौन-कौन संस्थाएँ किस प्रकार के कार्य कर रही हैं, और उनके कार्यों से निकट भविष्य में आप कितनी सफलता की आशा करते हैं?

(स) उ०—हिन्दी भाषा और नागरी लिपि के प्रचार में सबसे बड़ा कार्य काशी की नागरी प्रचारिणी सभा कर रही है इस संस्था के द्वारा अनेक प्रचारक केवल हिन्दी पुस्तकों की खोज के लिए नियत हैं। हिन्दी साहित्य की उन्नति के लिए सभा की ओर से अनेक उत्तमोत्तम पुस्तकें प्रति वर्ष प्रकाशित की जाती हैं। नागरी लिपि के प्रचार के लिए सतत उद्योग किया जा रहा है। नागरी-प्रचारिणी-सभा के बाद दूसरा नम्बर प्रयाग के अखिल-भारतवर्षीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का नाम आता है। यह संस्था, यद्यपि अपने उद्देश्यों के अनुसार हिन्दी साहित्य की उन्नति के लिए विशेष दत्तचित रहती है तथा नागरी प्रचार में इस संस्था की ओर से बड़ा कार्य किया जा रहा है। इसी के तत्त्वावधान में मद्रास की हिन्दी प्रचार सभा स्थापित की गई थी, जिसने दक्षिण

भारत मे सैकड़ों की संख्या मे हिन्दी भाषा तथा नागरी लिपि के प्रेमी तथा जानकारों को उत्पन्न कर दिया है। यह सस्था अब स्वतन्त्र रूप से हिन्दी भाषा तथा नागरी लिपि का प्रचार कर रही है। आगरा तथा आरा की नागरी प्रचारिणी सभाओं के द्वारा भी इस क्षेत्र मे बहुत अधिक कार्य हो रहा है। अबोहर (पजाब) का साहित्य सदन भी इसी कार्य मे सलग्न है। इस प्रकार बहुत सी अन्य सस्थाएँ भी इस कार्य को कर रही हैं। इसके प्रयत्न को देख कर आशा होती है कि निकट भविष्य मे नागरी लिपि तथा राष्ट्र भाषा हिन्दी का ही यहाँ प्राधान्य होगा।

(ब) प्र०—सामयिक पत्र पत्रिकाओं मे आपको कोन अधिक प्रिय है? उसकी विशेषताओं एव उपयोगिताओं को स्पष्ट कीजिये।

(ब) उ०—सबसे उपयोगी पत्र तथा पत्रिका वही कही जा सकती है जिसमें उत्तमोत्तम लेखों तथा कविताओं के अतिरिक्त सर्वसाधारण के हित के लिए भी यथेष्ट सामग्री हो। स्त्रियो तथा बालको के उपयोगी लेख भी हों। स्वास्थ्य, विज्ञान आदि विषयों पर लेख हों और साथ ही सामयिक बातों पर भी निबन्ध हों। जो पत्र एकागी होता है उससे न तो उतना उपकार ही होता है और न वह लोक प्रिय बन सकता है। किसी विषय विशेष का पत्र उन्हीं के लिए अच्छा हो सकता है जो उसके प्रेमी हों। 'विज्ञान' सम्बन्धी पत्र को लेकर सर्व साधारण उतना लाभ नहीं उठा सकते जितना एक वैज्ञानिक। परन्तु किसी सर्व साधारण के हित वाले पत्र मे विज्ञानिक भी सरल भाषा में कोई लेख हो तो वह सर्व साधारण की दृष्टि से अधिक उपयोगी होता है। इसका यह तात्पर्य नहीं कि विषय विशेष पर निकाले हुए पत्र उपयोगी नहीं होते, प्रत्युत यह सब लिखने का अभिप्राय यही है कि लोक प्रिय पत्र अथवा पत्रिका वही हो सकती है जिसमें आधुनिक सभी विषयों पर कुछ न कुछ अवश्य रहता हो। इस दृष्टि से हिन्दी में 'विशाल भारत' तथा 'सरस्वती' दो ही ऐसे हैं जो सर्वदृष्टि से अच्छे कहे जा सकते हैं।

———

हिन्दी विश्व-विद्यालय

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००० वि०)

इतिहास—प्रश्न-पत्र १

समय ३ घंटे] [पूर्णाङ्क १००

सूचना—केवल छः प्रश्नों का उत्तर देना आवश्यक है। परन्तु प्रत्येक समूह में से दो से अधिक प्रश्नों का उत्तर देना अनावश्यक होगा। सभी प्रश्नों के लिए समान अङ्क नियत हैं। चार अङ्क स्वच्छ-लेखन के लिए नियत हैं।

(क)

१—प्राचीन भारत में जाति-भेद की उत्पत्ति, उत्थान एवं पतन पर एक निबन्ध लिखिये।

२—अशोक ने बौद्ध-धर्म के प्रचार के लिए कौन कौन से साधनों का प्रयोग किया और उनको कहाँ तक उसमे सफलता मिली?

३—गुप्त-काल के कला-कौशल तथा विद्या की उन्नति का वर्णन कीजिये।

(ख)

४—भारतवर्ष के इतिहास मे बलबन क्या स्थान है?

५—तैमूर कौन था? उसने हिन्द पर क्यो चढ़ाई की? उसकी चढ़ाई का इस देश की राजनैतिक अवस्था पर क्या प्रभाव पड़ा।

६—विजयनगर के साम्राज्य की उत्पत्ति तथा उसके उत्थान का वर्णन करते हुए उसके पतन के कारणों पर प्रकाश डालिये।

(ग)

७—क्या यह सच है कि हिमायूँ की असफलता और उसके कष्ट के कारण उसके बन्धु थे ?

८—औरंगजेब की दक्षिणी नीति की विवेचना कीजिये और बतलाइये, वह असफल क्यों रही ?

९—निम्नलिखित पुरुषों में से किन्हीं ४ ने अपने समय में जो विशेष कार्य किये हो उनका उल्लेख कीजिये :—

महात्मा कबीर, गुरु गोविन्दसिंह, सुलताना, चॉदबीबी, सैय्यदबन्धु, बैरमखॉ, बीरबल और टोडरमल।

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००० वि०)

इतिहास—प्रश्न पत्र २

समय ३ घण्टे] [पूर्णाङ्क १००

सूचना—केवल छः प्रश्नों का उत्तर दीजिये। प्रत्येक समूह से केवल तीन प्रश्नों का उत्तर देना आवश्यक है। सभी प्रश्नों के लिए समान अङ्क नियत हैं। शेष ४ अङ्क स्वच्छ तथा सुन्दर लेख के लिए नियत हैं।

समूह (अ)

१—ईस्ट-इण्डिया-कम्पनी की क्या परिस्थिति थी, जिससे रेग्युलेटिंग ऐक्ट के निर्माण की आवश्यकता पड़ी ? इस ऐक्ट की विविध धाराओं का उल्लेख कीजिये और उसके गुण-दोषों को उदाहरण देकर समझाइये।

२—बंगाल का 'स्थायी प्रबन्ध' (Permanent Settlement) क्या था ? उसके गुण व दोषों पर भी प्रकाश डालिये।

३—'उसने ईस्ट-इण्डिया-कम्पनी को एक व्यापारिक संघ से एक राजनैतिक सत्ता में परिणत कर दिया। उसने ब्रिटिश-शासनरूपी भवन को ईंटों का बना हुआ पाया ; परन्तु वह उसे संगमरमर का बनाकर छोड़

गया । उसने उस नीति का शिलारोपण किया जिससे पृथक् होना असम्भव था ।'

उपर्युक्त कथन को ध्यान मे रखकर लार्ड डलहौजी के आगमन-काल की ईस्ट-इन्डिया-कम्पनी की परिस्थिति तथा उसे दृढ़ करने के उपाय—नीति आदि पर तर्कपूर्ण विवेचना कीजिये ।

४—पेशवा कौन थे ? उन्होंने भारत के इतिहास को निर्माण करने मे क्या भाग लिया ?

५—लार्ड विलियम बेटिंग के सामाजिक तथा राजनैतिक सुधारो का विशद वर्णन कीजिये और बतलाइये, उन सुधारों का देश पर क्या प्रभाव पड़ा ?

६—रणजीतसिंह का जीवनचरित्र तथा शासन-प्रबन्ध लिखते हुए उसके व्यक्तित्व तथा नीति की हैदरअली तथा उसके कार्य से तुलना कीजिये ।

७—निम्नलिखित विषयों में से किन्ही चार के ऊपर ऐतिहासिक टिप्पणियाँ लिखिये :—

१—रुहेला युद्ध, २—सन् १८५७ के विद्रोह की असफलता, ३—वग-भग और उसके परिणाम, ४—गवर्नमेन्ट-आफइन्डिया ऐक्ट १९३५, ५—भारतीय राष्ट्रीय कॉग्रेस की वर्तमान परिस्थिति ।

समूह (ब)

१—'योरोपीय धार्मिक सुधार' (Reformation) से आप क्या तात्पर्य समझते हैं ? उसमे इगलैंड में हुए सुधार में क्या अन्तर है ? हेनरी अष्टम तथा एडवर्ड षष्ठ का इस आन्दोलन मे क्या भाग था ?

२—महारानी एलिजाबेथ की घरेलू तथा विदेशी नीति का आलोचना-पूर्ण वर्णन करते हुए यह दिखलाइये कि इस नीति से इगलैंड को कितना लाभ हुआ ?

३—ऑलीवर क्रॉमवेल का जीवन-चरित्र लिखिये और उसकी परराष्ट्र नीति तथा उसके परिणाम पर भी प्रकाश डालिये ।

४—फ्रान्स की 'राज-क्रान्ति' क्या थी ? उसके क्या कारण थे ? इंगलैंड

का रुख इस क्रान्ति के प्रति क्या रहा तथा पिट के शासन-प्रबन्ध पर इस क्रान्ति का क्या प्रभाव पड़ा ?

५—जर्मनी को एक सबल राष्ट्र बना देने में बिस्मार्क का क्या भाग था ?

६—रूस के अलेक्जेन्डर द्वितीय के सुधारों का सविस्तार वर्णन कीजिये और बतलाइये, उसने इस नीति को क्यों त्याग दिया तथा उसका परिणाम क्या हुआ ?

७—निम्नलिखित विषयो मे से किन्ही चार पर ऐतिहासिक टिप्पणियाँ लिखिये :—

(१) गैरीबाल्डी, (२) १९१४ के महायुद्ध के लिए जर्मनी का उत्तरदायित्व, (३) बोलशेविज्म, (४) वेस्ट-फेलिया की सन्धि, (५) वर्तमान महायुद्ध मे मित्रराष्ट्रों की परिस्थिति ।

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००० वि०)

कृषिशास्त्र—प्रश्न-पत्र १

समय ३ घंटे] [पूर्णाङ्क १००

१—मूँगफली की खेती का सपूर्ण ब्योरा विस्तार-पूर्वक लिखिये । २०

२—औषधो के प्रयोग किये बिना आप किन रीतियों और क्रियाओं से अपनी खेती को कीड़ो से सुरक्षित रखेंगे ?

३—यदि आपके बैलों को चोट लग जाय और घाव हो जायँ या अपच हो जाय, तो आप देशी और विलायती कौन-कौन-सी औषधियाँ प्रयोग करेंगे और किस बात का बचाव रखेंगे ? २०

४—जो तरकारी स्वयं आपने बोई है, उसका ब्योरा लिखिये और बतलाइये, आपका खेत किस जिले में था और उसकी पैदावार आपने कहाँ बेची थी ? २०

(५) क, ख, ग, न, त, घ, य, ल, ह, स, व खेत की निम्नांकित फील्ड-

बुक है। नाप गंटरी, जरीब की कड़ियो मे है। इसका क्षेत्रफल एकड़ों में निकालिये और बतलाइये, ये कै पक्के बीघा हुआ? २०

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००० वि०)

कृषि-शास्त्र—प्रश्न-पत्र २

समय ३ घटे] [पूर्णाङ्क १००

सूचना—किन्ही पाँच प्रश्नो का उत्तर दीजिये। सभी प्रश्नों के लिए समान अङ्क नियत हैं।

१—आपके प्रान्त मे कृषि-पदार्थों की बिक्री किस ढग से होती है और उसमें क्या बुराइयाँ हैं? उन्हे दूर करने के लिए सहकारी-बिक्री कहाँ तक वांछनीय है?

२—उपज की मात्रा मे वृद्धि करने के लिए आप निम्नांकित उपायो मे से किसे सबसे अधिक महत्वपूर्ण समझते हैं और क्यों?

सिंचाई, चकबन्दी और उपज-उत्पादन-योजना।

३—संयुक्त-प्रान्त की सरकार नहरों से सिंचाई की दर में वृद्धि कर रही है। क्या अनाज के ऊँचे दामों के कारण होनेवाली अतिरिक्त आय को घटाने का यह उचित साधन है? इसका कृषि-उत्पादन पर क्या प्रभाव पड़ेगा? सतर्क उत्तर दीजिये।

४—वर्तमान समय में प्रत्येक प्राणी तक अनिवार्य भोजन की मात्रा पहुँचाने के लिए कृषि-व्यवस्था में किस प्रकार का परिवर्तन आवश्यक है ? आपके प्रान्त की सरकार इस सम्बन्ध मे क्या उपाय कर रही है और उसके विषय मे आपके क्या विचार हैं।

५—ग्रामीण आर्थिक व्यवस्था मे सड़कों का क्या महत्व है ? क्या आपके विचार से निकट भविष्य मे सड़को की अपेक्षा रेलो की वृद्धि होनी चाहिये ?

६—आपके प्रान्त में चालू कानून कब्जा-आराजी मे कौन-सी बुराइयाँ हैं ? उनका किसानों पर क्या प्रभाव पड रहा है ?

७—निम्नांकित विषयों मे से किन्हीं चार पर टिप्पणी लिखिये :—

जीवन-सुधार समिति, बोर्ड, सरकारी बीज-गोदाम, सीर, प्राइमरी शिक्षा तथा खेती की कमाई।

८—ढोरो के आर्थिक महत्व को दृष्टि मे रखकर उनकी समस्याओ पर प्रकाश डालिये और बतलाये, उनको हल करने मे आपके प्रान्त की सरकार किसानों की क्या सहायता कर रही है ?

मध्यमा परीक्षा (सवत् २००० वि०)

अर्थशास्त्र—प्रश्न-पत्र १

समय ३ घटे] [पूर्णांक १००

सूचना—केवल पाँच प्रश्नों का उत्तर लिखिये। सभी प्रश्नों के लिए समान अक नियत हैं।

१—अर्थशास्त्र में आप क्या अध्ययन करते हैं ? अन्य शास्त्रो के साथ इसका सम्बन्ध बतलाते हुए इसकी उपयोगिता समझाइये।

२—उपयोगिता के क्रमागत ह्रास-नियम' को स्पष्ट कीजिये।

३—उपभोक्ता की बचत किसे कहते हैं ? इसका निर्धारण किस प्रकार होता है ? उदाहरण द्वारा समझाइये।

४—अधिक परिमाण में उत्पत्ति के क्या लाभ है ? भारतवर्ष मे यह कहाँ तक सम्भव है ?

५—भारतीय कृषि के दोषों का वर्णन करते हुए उनके दूर करने के साधन बतलाइये।

६—मामूली कीमत और बाजारू कीमत का भेद स्पष्ट कीजिये और बतलाइये, इनमे परस्पर क्या सम्बन्ध है ?

७—नकद मजदूरी व वास्तविक मजदूरी मे क्या अन्तर होता है और उसका निर्धारण कैसे किया जाता है ?

८—सहयोग-समितियो द्वारा भारतवर्ष को क्या लाभ प्राप्त हुआ है और उन्हे और अधिक लाभप्रद किस प्रकार बनाया जा सकता है ?

९—प्रत्यक्ष-कर व परोक्ष-कर मे क्या भेद है ? इनमे कौन अधिक अच्छा है ? भारतीय कर—प्रणाली मे ये कर कहाँ तक लागू हैं ?

१०—निम्नलिखित विषयों मे से किन्हीं चार पर टिप्पणियाँ लिखिये :—

(क) सम्पत्ति। (ख) कम्पनी। (ग) पूजी। (घ) बाजार। (च) असल सूद। (छ) एञ्जील का सिद्धान्त।

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००० वि०)

अर्थशास्त्र—प्रश्न-पत्र २

समय ३ घटे] [पूर्णाक १००

सूचना—केवल पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिये। सभी प्रश्नों के लिए समान अक नियत है।

१—"भारतीय ग्रामीण ऋणी जन्म लेता है, अपने जीवन-काल मे ऋण को बढाता जाता है और अन्त मे ऋणी मरता है।"

उपर्युक्त कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं ? ग्रामीण ऋण के कारणों का उल्लेख कीजिये और इस समस्या को हल करने के लिए एक योजना बतलाइये।

२—कांग्रेस मन्त्रि-मण्डल द्वारा बनाये गये १९४० के सयुक्त प्रान्तीय टिनैन्सी ऐक्ट (कानून) के अनुसार किसानो को कौन-कौन सी सुविधाएँ प्राप्त हुई हैं ? उनकी विवेचना कीजिये और लिखिये, किसानों की आर्थिक दशा पर उनका क्या प्रभाव पड़ा है ?

३ - रफीज़न और शुल्ज सहकारी साख-समितियों की विशेषताओं का वर्णन कीजिये और बतलाइये कि रफीजन महोदय ने अपरिमित-दायित्व पर विशेष जोर क्यो दिया ?

४—खादी का आर्थिक दृष्टि से महत्व समझाइये। खादी मिलों की प्रतिस्पर्द्धा मे कहाँ तक टिक सकती है ? कारण-सहित अपना मत लिखिये।

५—भारतीय गोवश की नस्ल खराब होने के क्या कारण है ? गोवश की उन्नति के उपाय बतलाइये और यह भी समझाइये कि खेती पर अच्छे गाय और बैलों का क्या प्रभाव पडता है ?

६—गहरी खेती से आप क्या समझते हैं ? गहरी खेती करने के लिए आप प्रचलित खेती के तरीकों मे क्या परिवर्तन करना चाहेंगे ? साथ ही यह भी बतलाइये कि भारत मे गहरी खेती की आवश्यकता क्यों है ?

७—भारत मे बिखरे हुए छोटे छोटे खेता की समस्या इतनी अधिक जटिल क्यों बन गई है ? कारण-सहित लिखिये। बिखरे हुए छोटे-छोटे खेतों से जो हानियाँ होती हैं, उनकी व्याख्या कीजिये और बतलाइये, इस समस्या का हल किस प्रकार किया जाय ?

८—सहकारी चकबन्दी-समितियों के संगठन और उनके कार्य की विस्तृत आलोचना कीजिये। सहकारी चकबन्दी-आन्दोलन कहाँ कहाँ पर सफल हुआ ? चकबन्दी से क्या लाभ है ?

९—यदि आपको पाँच या दस गाँवों के एक समूह में ग्राम-सुधार का कार्य सौंपा जाय, तो आप किस प्रकार ग्राम-सुधार कार्य चलायेंगे और किन समस्याओं को हाथ मे लेंगे ? ग्राम-सुधार कार्य की एक संक्षिप्त योजना बनाकर समझाइये।

मध्यमा परीक्षा (सम्वत् २००० वि०)

दर्शन—प्रश्न-पत्र १

समय ३ घंटे] [पूर्णांक १००

१—प्रत्येक दर्शनों की भित्ति दुःखवाद है। इस विषय को सप्रमाण सिद्ध कीजिये।

२—साख्य मत के पुरुष से गीता के पुरुष मे क्या अन्तर है ? उसकी उपयोगिता विशद रूप से लिखिये। २०

अथवा

सृष्टि-क्रम से ईश्वर मे वैषम्य निर्दयत्वादि दोषों की आशका क्यो हुई ? उसका परिहार सयुक्तिक लिखिये।

३—पातञ्जल योग-सूत्र के 'ईश्वर प्रणिधान' शब्द का वास्तविक अर्थ सप्रमाण लिखिये। १५

४—पुनर्जन्म की सत्ता मे दिये गये प्रमाणों को सक्षेप में लिखिये। १५

अथवा

जीवन्मुक्ति का युक्तियुक्त स्पष्टीकरण कीजिये।

५—जैन-सम्प्रदाय मे रत्नत्रयमयी जीवात्मा के तीन रत्न कौन हैं और उन रत्नो से क्या लाभ है ? १५

६—उक्त सम्प्रदाय मे ज्ञान के आठ भेदों का निरुपण करते हुए परोक्ष भेदों का विवरण उपस्थित कीजिये। २०

अथवा

अरहत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय तथा मुनिजनो के असकीर्ण लक्षण लिखिये।

मध्यमा परीक्षा सम्वत् (२००० वि०)

दर्शन—प्रश्न-पत्र २

समय ३ घंटा] [पूर्णांक १००

सूचना—केवल पॉच प्रश्नों के उत्तर लिखने की आवश्यकता है। प्रश्न १ अनिवार्य है। सभी प्रश्नों के लिए समान अक नियत हैं।

१—निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दो मे से किन्हीं पॉच की दार्शनिक व्याख्या कीजिये :—

प्रतिज्ञा, उपाधि, तर्काभास, मनोदैहिक विद्या, अभ्यास, समुदाय मनोविज्ञान, अहकार, पुनर्जन्म और जीव-ब्रह्म-सम्बन्ध।

२—लैंगिक और अलैगिक अनुमानों की स्पष्ट व्याख्या कीजिये। मध्यम

पद, पक्ष और साध्य का सम्बन्ध प्रकट करते हुए तार्किक वाक्यों मे उनका निर्देश कीजिये।

३—कल्पना का हमारे दैनिक जीवन में क्या महत्व है ? कल्पनाओं की यथार्थता कैसे सिद्ध होती है ? उदाहरण देते हुए स्पष्ट कीजिये।

४—प्रमाण की क्या आवश्यकता है ? उपमान के प्रामाणिक महत्व का विश्लेषण कीजिये। उपमान की प्रामाणिकता सम्बन्धी शकाओं का निराकरण कीजिये।

५—इन्द्रियानुभव की उत्पत्ति कैसे होती है ? इसके लिए किन बातों की आवश्यकता है ? इन्द्रियानुभव के गुणों की व्याख्या कीजिये।

६—विचार की दार्शनिक परिभाषा सोदाहरण लिखिये। विचार-विधि के कर्मों का निर्देश करते हुए पदार्थ-बोध की क्रिया की सक्षिप्त व्याख्या कीजिये।

७—प्राच्य और पाश्चात्य दर्शनों के अनुसार मुक्ति के कौन-कौन साधन है ? स्वर्ग पाने से मुक्ति पाना क्योंकर अधिक श्रेयस्कर है ? क्या मुक्त होने पर भी पुनरावर्त्तन सम्भव है ?

८—तीन शरीर और पॉच कोशों की व्याख्या कीजिये। आत्मा और शरीर के सम्बन्ध पर प्रकाश डालते हुए इन दोनों की पारस्परिक सहायता का विश्लेषण कीजिये।

मध्यमा परीक्षा (सम्वत् २००० वि०)

धर्मशास्त्र—प्रश्न-पत्र १

समय ३ घटा] [पूर्णांक १००

सूचना—किन्हीं ६ प्रश्नों के उत्तर लिखिये। सभी प्रश्नो के लिए समान अक नियत हैं। चार अक स्वच्छलेखन के लिए निश्चित हैं।

१—द्यूत-कर्म से आप क्या समझते हैं ? इससे समाज को क्या हानि होती है ? राजा को इस प्रकार के कर्म करने वाले व्यक्ति को कौन-सा दण्ड देना चाहिये ?

२—पुरुप अथवा स्त्री-समाज में व्यभिचार फैल जाने से समाज को किस प्रकार की क्षति होती है ? ऐसे लोगों के लिए कौन-सा दण्ड उपयुक्त है ?

३—'व्यवहारशून्य व्यक्ति लौकिक तथा पारलौकिक किसी प्रकार के भी सुख प्राप्त नहीं कर सकते'। शास्त्रीय प्रमाण तथा अपनी स्वतन्त्र मति से इस कथन की पुष्टि कीजिये।

४ ब्रह्मचर्य्याश्रम मे छात्र को किन-किन नियमों का पालन करना पड़ता था और किस अभिप्राय से ? आर्यावर्त्त किस प्रदेश का नाम था ? जहाँ कृष्णसार मृग होते थे उस देश का कोन-सा नाम प्रख्यात था ?

५—चातुवर्ण्य व्यवस्था कब, किसके द्वारा और किस अभिप्राय से हुई ? इस व्यवस्था से समाज का क्या लाभ हुआ ? क्या यह व्यवस्था आज भी अनुकरणीय है ? स्पष्ट समझाइये।

६ मानव-जीवन की भित्ति किस आधार पर स्थिर है ? अपने उत्तर को शास्त्रीय प्रमाणों तथा उचित तर्कों से पुष्ट कीजिये।

७—प्रतिग्रह की विस्तृत व्याख्या कीजिये। इस प्रकार के कर्म करने वाले राजा को पुनर्जन्म मे क्या फल मिलते हैं ?

अथवा

नरक कितने प्रकार के होते हैं ? किन्हीं १० के नाम लिखिये। कुम्भीपाक और रौरव नरक की व्याख्या कीजिये।

८—वेदाध्ययन के लिए कोन-सा समय तथा दिन निषिद्ध कहा गया है ? उन अवसरो पर अध्ययन करने से क्या हानि होती है ?

९—सन्यास कब और क्यों ग्रहण करना चाहिये ? सन्यासी के जीवन की उपादेयता समझाइये।

१०—वर्तमानयुग में हमारे शास्त्रोक्त धर्म का कहाँ तक पालन हो रहा है ? क्या उसका पालन होना सम्भव है ? विशेषकर खान-पान तथा आचार-विचार मे कहाँ तक उसका निर्वाह हो सकता है ?

मध्यमा परीक्षा (सम्वत् २००० वि०)

धमशास्त्र—प्रश्न-पत्र २

समय ३ घंटे] [पूर्णांक १००

सूचना—केवल छै प्रश्नों का उत्तर लिखने की आवश्यकता है सभी

प्रश्नों के लिए समान अंक नियत हैं। चार अक स्वच्छ-लेखन के लिए निश्चित हैं।

१ – ब्रह्मादि ऋषियो द्वारा की हुई वाराह भगवान् की स्तुति का वर्णन कीजिये।

२—दिति के गर्भ की उत्पत्ति सन्क्षेप में लिखिये।

३—भगवान् कपिलजी ने माता से जिस अष्टाग योग का वर्णन किया है, उसमे से प्राणायाम का विशद रूप से वर्णन कीजिये।

४—परमात्मा के तीन रूपों—"सगुण," "सगुण-निर्गुण" और "केवल निर्गुण" पर एक तुलनात्मक टिप्पणी लिखिये और इनमे से किस रूप की उपासना सुलभ है, इसका विवेचन कीजिये।

५—"वासुदेव. सर्वमिति"—"यह सब वासुदेव ही हैं"—इससे आप क्या अभिप्राय समझते हैं? भगवद्भक्ति के इस स्वरूप को विस्तार से समझाइये।

६—"यज्ञार्थ" और "पुरुषार्थ" कर्म मे क्या भेद है? इस विषय मे गीता का अभिप्राय स्पष्ट समझाइये।

७—"कर्म," "अकर्म" और "विकर्म" पर भिन्न-भिन्न मतों का उल्लेख करके गीता का मुख्य आशय प्रकट कीजिये।

८ - "विभक्त में अविभक्त" भाव की विशद विवेचना कीजिये।

मध्यमा परीक्षा (सम्वत् २००० वि०)

संस्कृत—प्रश्न-पत्र १

समय ३ घटे] [पूर्णांक १००

१—नीचे लिखे हुए श्लोकों की व्याख्या प्रसग-निर्देशपूर्वक हिन्दी में कीजिये। तीन-तीन अक प्रसग-निर्देश के लिए तथा दश-दश अक व्याख्या के लिए नियत हैं। एक अशुद्धि पर एक अंक काटा जायगा।

(क) असौमहेन्द्र द्विपदानगन्धी
त्रिमार्गगावीचिविमर्दशीतः।

आकाशवायुर्दिनयौवनोत्था—
नाचामति स्वेदलकान्मुखे ते। १३

(ख) क्वचित्प्रभा चान्द्रमसी तमोभि—
श्छायाविलीनैः शबलीकृतेव।
अन्यत्र शुभ्रा शरदभ्रलेखा
रन्ध्रेष्विवालक्ष्यनभःप्रदेशा। १३

२—नीचे लिखे हुए अवतरणों का अनुवाद हिन्दी मे कीजिये। प्रसग की आवश्यकता नहीं। एक अशुद्धि पर एक अंक काटा जायगा।

(क) भृत्याः त एव ये सम्पत्तेर्विपत्तौ सविशेषं सेवन्ते। समुन्नम्यमानाः सुतरामवनमन्ति। आलाप्यमानाः न समालापाः संजायन्ते। पराक्रम्य न विकत्थन्ते। विकत्थमाना अपि लज्जामुद्वहन्ति। महाहवेष्वग्रतो ध्वजभूता इव लक्ष्यन्ते। दानकाले पलाय्य पृष्ठतो मिलीयन्ते। ८

(ख) पानीयस्य क्रिया नक्त न कार्या भूतिमिच्छता।
वर्जनीयाश्चैव नित्य सक्तवो निशि भारत। ४

(ग) अथ बोधिसत्वस्त शिष्यमेव संप्रेष्य चिन्तामापेदे। सकलेऽपि शरीरे विद्यमाने किमित्यहं परस्मात् मास मृगये। न स विचक्षणो यः सारहीने, दुःखमये, सतताशुचौ न देहे परस्मा उपयुज्यमाने प्रीतमान् न स्यात्। तस्मात् तटप्रपातोद्गतजीवितेन शरीरेण व्याघ्रयाः शावकाना च संरक्षण करिष्यामि। ८

३—(क) नीचे के श्लोक का अर्थ सस्कृत मे लिखिये :— १०

न चौरहार्यं न च राजहार्यं,
न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि।
व्यये कृते वर्धत् एव नित्य,
विद्याधन सर्वधनप्रधानम्।

(ख) नीचे लिखे श्लोक का अन्वय कीजिए :— ५

भूयस्ततो रघुपतिर्विलसत्पताक—
मध्यास्त कामगति सावरजो विमानम्?

दोषातन बुधबृहस्पतियोगदृश्य—
स्तारापतिस्तरलविद्यु दिवाभ्रवृन्दम् ।

४—(क) अस् धातु के लोट् मध्यम पुरुष एक वचन मे, शी धातु के लङ् प्रथम पुरुष मे, दा धातु के परस्मैपद लङ् प्रथम पुरुष में; कृ धातु के आत्मनेपद तथा परस्मैपद लुङ् उत्तम पुरुप में; सह् के लुट् प्रथम पुरुष में; आस् के लट् प्रथमपुरुष बहुबचन मे रूप लिखिये । १०

(ख) त्रि के सम्पूर्ण रूप स्त्रीलिंग मे, सखि के सप्तमी मे, मघवत् के द्वितीय बहुवचन मे; असृज् के तृतीया मे, विद्वस् के चतुर्थी मे, नृ के षष्ठी-बहुवचन में, अप् के तृतीया तथा सप्तमी में रूप लिखिये । १०

(ग) बुध्+क्तिन्, धा+क्त, हा+क्त, इनके सिद्ध रूप लिखिये । ३

(घ) "जनाना समूह:" "भृगोरपत्य पुमान्" – इन दोनों अर्थों को प्रकट करने के लिए उपयुक्त प्रकृति मे उपयुक्त तद्धित प्रत्यय जोडकर दिखलाइये और प्रकृति प्रत्यय के सयोग का सिद्ध रूप लिखिये । २

(ङ) ऊपर २ (ग) मे आये हुए "परस्मा उपयुज्यमाने" में सन्धिविच्छेद कीजिये । २

(च) 'विलमत्लताकम्" मे समासविग्रह समेत समासनाम बतलाइये । २

५—लका मे लोटते समय श्रीरामचन्द्र जी ने श्रीसीताजी से समुद्र का तथा पञ्चवटी के भिन्न-भिन्न स्थलों का जो वर्णन किया है उसका उल्लेख अपनी सस्कृत में कीजिये । १०

मध्यमा परीक्षा (सम्वत् २००० वि०)

सस्कृत--प्रश्न-पत्र २

समय ३ घटे] [पूर्णांक १००

१—निम्नलिखित श्लोकों मे से किन्हीं दो का शुद्ध एव सरल हिन्दी में अनुवाद कीजिये :—

(अ) यावत् स्वस्थमिद कलेवरगृह यावच्च दूरे जरा
यावच्चेन्द्रियशक्तिरप्रतिहता यावत्क्षयो नायुप. ।

–

आत्मश्रेयसि तावदेव विदुषा कार्यः प्रयत्नो महान्

सदीप्ते भवने च कूपखननं प्रत्युद्यमः कीदृशः ॥

(आ) बोद्धारो मत्सरग्रस्ताः प्रभवः स्मयदूषिताः ।

अज्ञानोपहत ज्ञानं जीर्णमंगे सुभाषितम् ॥

(इ) स्थाने हृषीकेश ! तव प्रकीर्त्या

जगत् प्रहृष्यत्यनुरज्यते च ।

रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति

सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसघाः ॥

२—निम्नलिखित गद्यांश का अर्थ हिन्दी मे लिखिये :— २५

कस्मिश्चित् अधिष्ठाने मित्रशर्मा नाम ब्राह्मणः प्रतिवसतिस्म । कदाचित् माघमासे सौम्यानिले प्रवाति, मेघाच्छादिते गगने, मन्द मन्द प्रवर्षति पर्जन्ये, पशुप्रार्थनाय किञ्चित् ग्रामान्तर गत्वा तेन कश्चित् यजमानो याचितः । "भो यजमान ! आगामिन्याममावास्यायामह यक्ष्यामि यज्ञम् । तद् देहि मे पशुमेकम्"। अथ तेन तस्य शास्त्रोक्तः पीवरतनुः पशुः प्रदत्तः । सोऽपि त समर्थमितश्चेतश्च गच्छन्त विज्ञाय स्कन्धे कृत्वा सत्वर स्वपुराभिमुखः प्रतस्थे । अथ तस्य गच्छतो मार्गे त्रयो धूर्ताः क्षुत्क्षामकण्ठाः सम्मुखा बभूवुः । तैश्च तादृश पीवरतनु स्कन्धे आरूढमवलोक्य मिथोऽभिहितम्—"अहो ! अस्य पशोः भक्षणात् अद्यतनीयो हिमपातो व्यर्थता नीयते तत् एन वञ्चयित्वा पशुमादाय शीतत्राण कुर्मः"। अथ तेषामेकतमो वेषपरिवर्तन विधाय सम्मुखो भूत्वा तमूचे "भो भो बालाग्निहोत्रिन् किमेव जनविरुद्ध हास्यकार्यमनुष्ठीयते । यदेष सारमेयोऽपवित्रः स्कन्धाधिरूढो नीयते" ।

३—नीचे लिखे हिन्दी गद्याश का सस्कृत मे अनुवाद कीजिये— २०

गीता में सब तरह के सत्यों (सच्चाइयों) का सार विद्यमान है । जिस प्रकार सूर्य मे (नीला पीला इत्यादि) रंग मौजूद रहते हैं, उसी प्रकार गीता रूपी सूर्य में सचाइयाँ विद्यमान हैं । जिस प्रकार फूल जिस रग का होता है उसी रंग को सूर्य की किरण से प्राप्त करके पुष्टि-वृद्धि पाता है । इसी प्रकार मनुष्य का चित्त जिस उपाय (साधन) से पुष्ट और उज्ज्वल हो सकता है,

उसी को गीता-रूपी सूर्य से प्राप्त करके अपनी पुष्टि और स्वच्छता पाता है। यदि सूर्य में भाँति-भाँति के रंग न होते, केवल एक ही श्वेत रङ्ग होता, तो भाँति-भाँति के फूल उससे विकसित न हो सकते। इसी तरह यदि गीता में भाँति-भाँति के साधनों के उपदेश न होते, केवल एक ज्ञान या कर्म-रूप साधन का ही उपदेश होता, तो संसार भर के मनुष्यों का चित्त गीतोपदेश से आकर्षित, पुष्ट और उज्ज्वल न होने पाता। पर गीता सब की इच्छा पूरी कर देती है। यही उसकी महत्ता, विशेषता और विलक्षणता है।

४—नीचे लिखे किन्हीं दो वाक्यों को कारण निर्दिष्ट करते हुए शुद्ध कीजिये :—

(१) कुरुत बालकाः कार्यः (२) स्थानस्य वहिः गच्छामहे (३) रामात् गीता न अवदः।

५—निम्नलिखित किन्हीं दो उक्तियों का प्रयोग स्पष्ट करने के लिये संस्कृत वाक्य बनाइये—

(१) अपि ते (२) दुष्ट ! (३) धिक् ! तान्।

६ —निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर बीस पंक्तियों का एक छोटा-सा निबन्ध सरल संस्कृत में लिखिये—

(अ) वर्षा-ऋतुः।
(आ) परोपकाराय सतां विभूतयः।
(इ) प्रयागः।
(ई) निर्द्वन्द्वो हि महाबाहो ! सुखं बन्धात् प्रमुच्यते।
(उ) सत्यमेव जयते नानृतम्।

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००० वि०)

भूगोल—प्रश्न पत्र १

समय ३ घण्टे] [पूर्णाङ्क १००

सूचना—केवल ५ प्रश्नों के उत्तर दीजिये। सभी प्रश्नों के लिए समान अंक नियत हैं। प्रथम प्रश्न का उत्तर देना अनिवार्य है।

१—किसी देश अथवा महाद्वीप के प्रादेशिक विभाग करने में किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिये? उदाहरण देकर समझाइये।

२—आर्थिक तथा औद्योगिक भूगोल के हिसाब से उत्तरी इगलैंड को कितने भागों मे विभाजित किया जा सकता है? उनमें से किसी एक का पूर्ण विवरण दीजिये।

३—फ्रांस ने कृषि-कला मे वर्तमान समय मे, कैसी उन्नति की है? एक नोट लिखकर समझाइये और यह भी लिखिये कि वहाँ पर कौन-कौन सी फसलें किन-किन स्थानों पर होती हैं।

४—जर्मनी के किन-किन स्थानों मे खनिज पदार्थों की प्रचुरता है? उन स्थानों मे कौन-कौन से उद्योग-धन्धे उन्नति पर हैं।

५—इटली को बड़े-बड़े प्राकृतिक भागों मे विभाजित कीजिये और उनमे से किसी एक भाग के उद्योग-धन्धे, व्यापार तथा आर्थिक अवस्था का विस्तृत वर्णन लिखिये।

६—कनाडा (उत्तरी अमेरिका), भौगोलिक दृष्टि से, कितने भागों में विभाजित किया जा सकता है? इनमे से सबसे अधिक उन्नतिशील भाग का वर्णन लिखिये।

७—संयुक्त-राज्य (अमेरिका) मे कपास की खेती किन-किन स्थानों पर होती है? उस फसल का कहाँ और किस प्रकार उपयोग होता है? उन भौगोलिक कारणों का निरीक्षण कीजिये, जिन पर वह फसल अवलम्बित रहती है।

८—चीन को बड़े-बड़े प्राकृतिक भागों में विभाजित कीजिये, और उनमें से किसी एक का पूर्ण वृत्तान्त लिखिये।

९—बम्बई नगर की स्थिति का उसकी उन्नति पर क्या प्रभाव पड़ा है? उदाहरण देकर समझाइये।

१०—कलकत्ते से न्यूयार्क जाने के लिए कितने सामुद्रिक मार्ग हैं। उनमें से, आपकी समझ मे, आजकल सबसे अधिक सुरक्षित तथा सुविधाजनक कौन-सा मार्ग है?

११—निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर एक-छोटा-सा निबन्ध लिखिये—

(अ) दक्षिण अमेरिका की लाप्लाटा नदी की-घाटी

अथवा

(ब) आस्ट्रेलिया के विक्टोरिया प्रान्त

की स्थिति, प्राकृतिक बनावट, जलवायु, उपज, व्यापार तथा आर्थिक उत्थान।

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००० वि०)

भूगोल—प्रश्न-पत्र २

समय ३ घंटे] [पूर्णाङ्क १००

सूचना—प्रत्येक प्रश्न के उत्तर के साथ यथासम्भव मानचित्र देना आवश्यक है। कुल ६ प्रश्नों का उत्तर दीजिये। प्रश्न १ का उत्तर देना अनिवार्य है।

१—भारतवर्ष का, पूर्णपृष्ठ पर, एक नकशा खींचकर उसमें निम्नांकित बातें उपयुक्त चिह्नों से स्पष्ट दिखलाइये :--

(क) नदियाँ—सिंध, कावेरी और दामोदर।

(ख) कपास, चाय और गन्ने में से प्रत्येक की उत्पत्ति का एक-एक प्रधान भाग।

(ग) ४० इंच वार्षिक वृष्टिवाला भाग।

(घ) दो स्थान, जहाँ जलशक्ति से बिजली उत्पन्न करने की योजनाएँ काम आ रही हैं।

(ङ) कानपुर से हवड़ा जाने का रेल-मार्ग—मुख्य-मुख्य स्टेशनों सहित। २०

२—एक इंच प्रति-वर्गमील पर बने हुए भारतवर्ष के मानचित्र से अपने प्रान्त का संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार लिखिये, जिससे वहाँ के प्राकृतिक भूगोल तथा मनुष्य-सम्बन्धी भूगोल के विषय में आपके ज्ञान का यथेष्ट परिचय

प्राप्त हो सके। उत्तर के साथ ऐसा नकशा होना आवश्यक है, जिसमे मुख्य प्राकृतिक आकृतियाँ दिखलाई गई हों। १६

३—भारतवर्ष में उपयुक्त सिंचाई के भिन्न-भिन्न साधनों पर एक संक्षिप्त लेख लिखिये और उनके आर्थिक लाभो की विवेचना कीजिये। १६

४—भारतवर्ष में लोहा, कपास और तम्बाकू की उपज की प्राप्ति के साधनों पर ऐसी संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिये, जिनसे विदित हो सके कि ये वस्तुएँ किस सीमा तक जगत्-व्यापार मे सम्मिलित हैं। १६

५—'भारत भिन्नता का देश है।' भूमि की ऊँचाई, वर्षा तथा कृषि से होने वाली फसल का वर्णन देते हुए उपर्युक्त उक्ति की विवेचना कीजिये। १६

६—आर्थिक उन्नति का विशेष विवरण देते हुए सयुक्त-प्रान्त आगरा व अवध का भौगोलिक वर्णन लिखिये। १६

७—भारतवर्ष मे प्राकृतिक धन अटूट है, तथापि यहाँ उद्योग-धन्धे इने-गिने हैं। इसके कारण बतलाइये और इस विषय मे उन्नति के उपायों पर विचार कीजिये। १६

८—भारतवर्ष में १२,००,००,००० से अधिक चौपाये हैं, पर पशु सम्बन्धी व्यवसाय तुलना में नगण्य हैं। इस उक्ति पर एक टिप्पणी लिखिये और उसमे सप्रमाण अपने मत का प्रतिपादन कीजिये। १६

९—भारतवर्ष में वनों का विवरण दीजिये (क) कृषि तथा (ख) उद्यमों पर उनका प्रभाव दिखलाइये। १६

१०—भारतवर्ष की नदियों की आर्थिक उपयोगिता का भली भाँति वर्णन कीजिये। १६

११—किसी देश के निवासियों पर भौगोलिक बातो का किस प्रकार प्रभाव पड़ता है, यह दिखलाने के लिए सिन्ध और गंगा के मैदानों का विवेचन कीजिये। १६

—:०:—

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००० वि०)

वैद्यक—प्रश्न पत्र १

समय ३ घण्टे] [पूर्णाङ्क १००

सूचना—केवल पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिये। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

१—मनुष्य शरीर में अस्थि, कण्डरा, स्नायु, शिरा, धमनी और नाड़ियों की संख्या कितनी है? प्रकार भेद पुरस्सर लिखिये।

२—मिथ्याहार, मिताहार, परिमितनिद्रा, प्रज्ञापराध और ओकसात्म्य इन वाक्यों की परिभाषा तथा इनके लक्षणों का स्पष्टीकरण कीजिये।

३—दोष और दूष्य शब्द का अर्थ, संख्या-भेद तथा दोषों का संचय, प्रकोप, उपशम काल, एवं प्राकृत-वैकृत ऋतुओं का कारण-भेद बतलाइये।

४—मनुष्यों में प्रकृति-भेद का कारण क्या है? उत्तम प्रकृति का लक्षण लिखिए और बतलाइए प्रकृति वशात् श्रेष्ठाग्नि के विषय में आप क्या जानते हैं।

५—चतुर्विध आहार तथा षट्रस आहार कब, किस स्वाद में, परिणत होता हुआ, कितने दिन में, किस क्रम से शुक्रत्व को प्राप्त होता है? किये हुए आहार में कितने दिन में माँस बनता है? 'वसा' किस धातु का मल है?

६—प्राणायाम का शब्दार्थ लिखिये। प्राणायाम से मुख्यतः किस शारीरिक तत्व की रक्षा होती है? प्राणायाम कब और कितने बार करना चाहिए, विवेचन कीजिये।

७—क्या मनुष्य ब्रह्मचर्य, सदाचार तथा सद्व्यवहार के पालन से दीर्घायु हो सकता है? अथवा दीर्घायु होने का कोई और भी कारण हैं? सयुक्ति-सतर्क तथा सोदाहरण लिखिए।

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००० वि०)

वैद्यक—प्रश्नपत्र २

समय ३ घण्टे] [पूर्णांक १००

सूचना—केवल पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए। प्रश्न ४ का उत्तर देना अनिवार्य्य है।

१—गुडूची, वासा, चित्रक, सोमराजी, पपीता, बथुआ, मुद्ग और यव के गुण लिखिए।

२—रक्तातिसार, रक्तार्श और अधोग रक्तपित्त मे क्या भेद है? स्पष्ट लिखिए।

३—ज्वर के वेग का नाड़ी की गतिविधि पर क्यों और कैसा प्रभाव पड़ता है? युक्तियुक्त प्रतिपादन कीजिए।

४—वैद्यकशास्त्र मे 'निदान' शब्द का व्यवहार किन अर्थों मे होता है और उनकी उपयोगिता क्या है?

५—ग्रहणी, गुल्म और अम्लपित्त की असाध्यावस्था का वर्णन कीजिये।

६—अष्टवर्ग, बृहत् पञ्चमूल तथा स्वल्प पञ्चमूल के द्रव्य और उनके सामूहिक गुण लिखिये।

७—मान लीजिये, किसी नवजातशिशु को यकृत्विकार हो गया है। साथ-साथ ज्वरातिसार और कास भी है। उसकी माता को दूध होता तो है, किन्तु विकृत। ऐसी परिस्थिति मे उसके लिए आयुर्वेद सम्मत पथ्य की व्यवस्था कीजिये।

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००० वि०)

राजनीति—प्रश्नपत्र १

समय ३ घण्टे] [पूर्णांक १००

सूचना - किन्हीं पाँच का उत्तर लिखिये। सभी प्रश्नों के लिए समान अंक नियत है।

१—'हिन्दू राज्य-शासन निरकुश शासन न था।' इस विषय पर एक टिप्पणी लिखिये।

२—हिन्दू-राजनीति मे राज्याभिषेक का क्या महत्व था ?

३—सन् १८५३ ई० से सन् १८६१ ई० तक भारतीय शासन के विकास में कौन-कौन महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए थे ?

४—मारले-मिंटो सुधारों पर एक ऐसा निबन्ध लिखिये, जो आपकी उत्तर-पुस्तक के चार पृष्ठों से अधिक न हो।

५—(अ) 'भारतीय वैधानिक समस्या हल करने के लिए साम्प्रदायिक मेल उत्पन्न करना परमावश्यक है।'

(ब) 'भारतीय वैधानिक समस्या हल करने के पश्चात् ही साम्प्रदायिक मेल हो सकता है।'

इनमें से आप किस मत के समर्थक हैं और क्यों ? तर्क देकर अपने मत का प्रतिपादन कीजिये।

६—भारत की केन्द्रीय सरकार और प्रान्तिक सरकारो के वर्तमान सम्बन्धों पर एक आलोचनात्मक निबन्ध लिखिये।

७—कांग्रेस की नीति में सन् १९१८ से सन् १९४२ तक कौन-कौन परिवर्तन हुए हैं और क्यों ?

८—प्रान्तीय धारा-सभाओं का निर्वाचन किस प्रकार होता है ?

९—भारत की वर्तमान स्थानिक स्वराज्य-प्रणाली मे कौन-कौन दोष हैं और वे किस प्रकार दूर हो सकते है ?

१०—'वर्तमान प्रान्तिक शासन-प्रणाली केवल देखने भर को ही उत्तर-दायी प्रणाली है।' इस विषय पर एक टिप्पणी लिखिये।

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००० वि०)

राजनीति—प्रश्नपत्र २

समय ३ घण्टे] [पूर्णांक १००

सूचना—किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिये। परन्तु प्रत्येक भाग से कम-से-कम दो प्रश्नो का उत्तर देना अनिवार्य है। सभी प्रश्नों के अंक बराबर हैं॥

प्रथम भाग

१—राज्य की उत्पत्ति के कौन-कौन से सिद्धान्त प्रतिपादित किये गये हैं ?

उनका सच्चेप में वर्णन कीजिये और बतलाइये, उनमे कौन-सा सिद्धान्त तर्कपूर्ण और ठीक है ?

२—अपराधी को दंड देने से क्या लाभ हैं ? दड के मुख्य सिद्धान्तों को उदाहरण देते हुए समझाइये।

३—व्यक्तिवाद और समाजवाद की तुलना करते हुए यह समझाइये कि अमुक दृष्टि से दोनों एक दूसरे के विरोधी सिद्धान्त नहीं हैं।

४—अन्तर्राष्ट्रीय नियमो के पालन के लिए सबसे उचित उपाय क्या है ? क्या इसके लिए अन्तर्राष्ट्रीय फौज अथवा अन्तर्राष्ट्रीय सरकार की व्यवस्था हो सकती है ?

५—'राजनीति-शास्त्र का अध्ययन राष्ट्रीय उत्थान के लिए अनिवार्य है।' इस कथन की पुष्टि कीजिये।

द्वितीय भाग

६ रूस मे स्थानीय शासन की क्या व्यवस्था की गई है, इसका वर्णन कीजिये।

७—इटली मे केन्द्रीय धारा-सभा का सगठन कैसे किया गया है ? उसकी तुलना जर्मनी की केन्द्रीय धारा-सभा से कीजिये।

८—फ्रांस मे मन्त्रिमडल अकसर बदलता रहता है, इसका क्या कारण है और इस परिवर्तन का उसकी राजनैतिक व्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

९—जापानी स्वभाव से रूढिवादी होते हैं। जापान की शासन-पद्धति से उदाहरण देकर इस कथन की पुष्टि कीजिये।

१०—अमेरिका (U S.A.) की सीनेट का सगठन और उसके अधिकारों का वर्णन करते हुए ब्रिटेन की लार्ड-सभा से उसकी तुलना कीजिये।

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००१ वि०)

समय ३ घटे] राजनीति—प्रश्नपत्र १ [पूर्णाङ्क १००

सूचना—किन्हीं पॉच प्रश्नों का उत्तर लिखिये। सभी प्रश्नों के लिए सामान अङ्क नियत हैं।

१—गत पंद्रह वर्षों से चली आरही मुसलिम लीग की नीति पर एक लेख लिखिये।

२—कांग्रेस के विकास का वर्णन कीजिये।

३—अहिंसा के सिद्धांतों की विवेचना करते हुए लिखिये, उनका भारतीय राजनीति पर क्या प्रभाव पड़ा।

४—फेडरल-कोर्ट के अधिकारों का वर्णन कीजिये।

५—सन् १९३५ के एक्ट मे गवर्नर-जनरल को कोन-कौन से अधिकार प्राप्त हैं ? उन पर एक टिप्पणी लिखिये।

६— माटेग्यू-चेम्सफोर्ड-सुधार भारतवर्ष मे उत्तरदायी स्वराज्य स्थापना का प्रथम सोपान था'—इस विषय पर अपनी सम्मति प्रकट कीजिये।

७—संघ-शासन की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं ? १९३५ के गवर्नमेन्ट-ऐक्ट के अनुसार हिन्दुस्तानी-संघ की जो योजना की गई, उसकी व्याख्या कीजिये।

८—भारतवर्ष में प्रांतीय स्वराज्य किस हद तक सफल हुआ ? जिन प्रांतो मे वह स्थगित कर दिया गया, वहाँ आजकल कोन से नियम लागू हैं ?

९—'क्रिप्स-मिशन' का संक्षेप मे विवरण लिखिये और बतलाइये कि उसने कोन-कोन से प्रस्ताव पेश किये और वे क्यो अस्वीकार किये गये।

१०—देशी रियासतों पर एक लेख लिखिये और उन कठिनाइयों को प्रदर्शित कीजिये, जिन्हें देशी राजा लोग पूर्ण स्वराज्य के प्राप्त होते समय प्रस्तुत करेंगे।

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००१ वि०)

राजनीति—प्रश्नपत्र २

समय ३ घण्टे] [पूर्णांक १००

सूचना—केवल पॉच प्रश्नों का उत्तर देना है। कम से कम दो प्रश्नों का उत्तर प्रत्येक विभाग से देना आवश्यक है। सभी प्रश्नो के अंक बराबर हैं।

प्रथम भाग

१—राष्ट्रीयता से क्या तात्पर्य है ? उसकी उत्पत्ति और उन्नति से लिए जनसाधारण मे कि गुणो का होना आवश्यक है ? वे गुण भारतीय जनता में कहाँ तक हैं ?

२—"विधान और स्वतन्त्रता इन दोनों में बड़ा घनिष्ट सम्बन्ध है।" इस कथन की पुष्टि कीजिये।

३—नागरिक-शास्त्र का राजनीति और इतिहास से क्या सम्बन्ध है ? इन विषयों से अलग रहकर क्या नागरिक-शास्त्र का अध्ययन किया जा सकता है ?

४—कौन-कौन से सिद्धान्त समाजवाद की पुष्टि मे सहायक होते हैं ? उनके सूक्ष्म वर्णन करते हुए उनकी दुर्बलताओं पर भी प्रकाश डालिये।

५—'राजसत्ता' से आप क्या समझते हैं ? राज्य की उत्पत्ति मे इसका क्या स्थान हैं ?

द्वितीय भाग

६—ब्रिटेन की राजनीति मे पार्लियामेन्ट का क्या स्थान है ? वह सभा भारतवर्ष के लिए क्या करती है ?

७—कहा जाता है कि स्विट्जरलैंड का प्रजातन्त्र एक सच्चा प्रजान्त्र है। क्या भारतवर्ष में उसका अनुकरण सम्भव है ?

८—संसार की शासन-पद्धतियो मे आप किसको उत्तम मानते हैं और क्यो ? कारण और उदाहरण देकर अपने मत की पुष्टि कीजिये।

९—जर्मनी और इटली की तानाशाही मे आपको कौन-कौन सी त्रुटियाँ जान पड़ती हैं ? कहा जाता है कि उस तानाशाही का अस्तित्व, किसी-न-किसी अंश में, रूस की शासन-व्यवस्था मे भी, पाया जाता है। इस विषय मे आपका क्या मत है ? प्रमाण देकर अपने मत का प्रतिपादन कीजिये।

१०—क्या रूस का बोलशेविकवाद मार्क्स के समाजवाद से किन्हीं अर्थों मे भिन्न है ? रूस की वर्तमान शासन-पद्धति से उदाहरण देकर समझाइये।

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००१ वि०)

अर्थ शास्त्र—प्रश्नपत्र १

समय ३ घण्टे] [पूर्णांक १००

सूचना—केवल पाँच प्रश्नों का उत्तर लिखिये। सभी प्रश्नों के लिए समान अंक नियत हैं।

१—माँग' तथा 'माँग की लोच' का अर्थ स्पष्ट कीजिये और बतलाइये कि माँग की लोच किन बातों पर निर्भर है।

२—रहन-सहन का दर्जा किसे कहते हैं ? भारतवासियों के रहन-सहन का दर्जा किस प्रकार बढ़ाया जा सकता है ?

३—उत्पत्ति के साधन बतलाइये और भारतीय उदाहरणों द्वारा समझाइये, वे उत्पत्ति किस प्रकार बढ़ाते हैं।

४—श्रम-विभाग किसे कहते हैं ? उसके लाभ पूर्णतया स्पष्ट कीजिये।

५—भारतीय उद्योग-धंधों पर द्वितीय विश्व-समर का क्या प्रभाव पड़ा है ? युद्धोत्तर काल में उनकी उन्नति किस प्रकार की जा सकती है ?

६—बाजार में मूल्य का निर्धारण किस प्रकार होता है ? रेखा-चित्रों की सहायता से समझाइये।

७—कुल सूद व असल-सूद में क्या भेद है ? वे किस प्रकार निश्चित किये जाते हैं ? क्या सहयोग-समितियों की सहायता से भारतीय ग्रामों में सूद की दर कम हो सकी है ?

८—लगान किस प्रकार निर्धारित किया जाता है ? अत्यधिक लगान कब लिया जा सकता है ?

९—राष्ट्रीय व्यय तथा करों के मुख्य सिद्धान्तों का संक्षेप में विवेचन कीजिये।

१०—निम्नलिखित विषयों में से किन्हीं चार पर टिप्पणियाँ लिखिये :—

(क) अर्थशास्त्र की परिभाषा।

(ख) आर्थिक नियम।

(ग) सीमान्त उपयोगिता ।
(घ) साझेदारी ।
(च) बाज़ार ।
(छ) असल मुनाफ़ा ।
(ज) कौटिल्य का अर्थशास्त्र ।

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००१ वि०)

अर्थशास्त्र—प्रश्नपत्र २

समय ३ घण्टे] [पूर्णांक १००

सूचना—केवल पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिये । सभी प्रश्नों के लिए समान अंक नियत हैं ।

१—भारतवर्ष में खेती की दशा खराब क्यों है ? खेती की उन्नति के उपाय सक्षेप में लिखिये ।

२—भारतीय किसान को खेती के अतिरिक्त सहायक धन्धों की क्यों आवश्यकता है ? उनका स्वरूप कैसा होना चाहिये ? उनमें क्या विशेष बातें होनी चाहिये, कि जिससे वे किसान के लिए उपयुक्त हो सकें । उपयुक्त सहायक धन्धों के नाम लिखिये ।

३—भूमि-बंधक सहकारी बैंकों का उद्देश्य, संगठन और कार्य-पद्धति विस्तारपूर्वक लिखिये और यह भी बतलाइये कि भारतवर्ष में वे कहाँ तक सफल हुए हैं ।

४—"गाँव वास्तव में मनुष्य-जनसंख्या की नर्सरी है, जहाँ से मनुष्य-रूपी पौध शहरों में लगाई जाती है । पर शहरों में जाकर उनकी जीवन-शक्ति क्षीण होने लगती है । यही कारण है कि शहरवाले अच्छे कुटुम्ब-निर्माण-कर्त्ता प्रमाणित नहीं हो सकते ।" इस मत की विवेचना कीजिये और बतलाइये, किसी जाति के पतन को रोकने के लिए आवश्यक क्यों है कि गाँवों के साहसी, बुद्धिमान, महत्त्वाकांक्षी और स्वस्थ युवक और युवतियों को शहरों की ओर जाने से रोका जावे ?

५—भारतीय किसान को अपनी पैदावार का उचित मूल्य क्यों नहीं

मिलता ? खेती की पैदावार किसान किस प्रकार बेचता है ? संक्षेप में लिखिये, और उससे उसे क्या हानि होती है यह भी बतलाइये। सहकारी विक्रय-समितियो के द्वारा खेती की पैदावार के बेंचने की समस्या कहाँ तक हल हो सकती है ? समझाकर लिखिये।

६—भारतीय गौ-वंश की नस्ल खराब होने के क्या कारण हैं ? गौ-वंश की उन्नति के उपाय बतलाइये और यह भी समझाइये कि खेती पर अच्छे गाय और बैलों का क्या प्रभाव पड़ेगा ?

७—भारतीय ग्रामों की उन मुख्य समस्याओं पर प्रकाश डालिये, जिनके हल किये बिना गाँवों का सुधार होना सम्भव नहीं है।

८—खादी का आर्थिक दृष्टि से महत्व समझाइये और विस्तार-पूर्वक बतलाइये, सहकारी खादी-समितियाँ स्थापित करके इस धंधे का किस प्रकार सुदृढ संगठन किया जा सकता है ?

९—भारतीय ग्राम इतने गंदे क्यों होते हैं ? वहाँ रोग स्थायी रूप से क्यों जमे रहते हैं। गाँवों में स्वास्थ्य-रक्षा और सफाई का समुचित प्रबन्ध किस प्रकार किया जा सकता है ? विस्तार-पूर्वक समझाइये।

१०—भूमि की उर्वरा-शक्ति को बनाये रखने के लिए खाद की आवश्यकता है। पर भारतीय किसान अपने खेतों को समुचित खाद नहीं देता। इसका क्या कारण है ? भारत की भूमि में किस तत्व की कमी है और उसे खाद यथेष्ट क्यों नहीं मिलती ? इसका विस्तार-पूर्वक विवेचन कीजिये।

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००१ वि०)

समय ३ घंटे] भूगोल—प्रश्नपत्र १ [पूर्णांक १००

सूचना—केवल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिये। सभी प्रश्नों के लिए समान अङ्क नियत हैं। प्रथम प्रश्न का उत्तर देना अनिवार्य है।

१—'प्राकृतिक प्रदेश' (Natural Region) से भूगोल में आप क्या अभिप्राय समझते हैं ? उदाहरण देकर समझाइये। पृथ्वी के किसी भी एक प्राकृतिक प्रदेश का सूक्ष्म किन्तु रोचक वर्णन लिखिये।

२—संयुक्तराष्ट्र अमेरिका (U.S.A.) को मुख्य-मुख्य प्रादेशिक विभागों में विभाजित कीजिये और उनमे से किसी एक भाग का भौगोलिक वर्णन लिखिये।

३—कनाडा (उत्तरी अमेरिका) में गेहूँ की खेती किन-किन स्थानों में होती है? उस फसल का कहाँ और कैसे उपभोग होता है? उन भौगोलिक कारणों का निरीक्षण कीजिये, जिन पर वह फसल अवलम्बित रहती है।

४—दक्षिणी अमेरिका की अमेजन नदी की घाटी का भौगोलिक वर्णन लिखिये और वह भी बतलाइये कि निकट भविष्य में इस घाटी मे कितनी आर्थिक तथा सामाजिक उन्नति होने की सम्भावना है।

५—न्यूजीलैंड मे गोपालन (Dairy Farming) व्यवसाय बहुत उन्नति पर है। कारण देते हुए उसका वर्णन लिखिये, और न्यूजीलैंड के इस व्यवसाय का पश्चिमी योरप अथवा पूर्वी उत्तर अमेरिका के गोपालन व्यवसाय से मिलान कीजिये।

६—"मिश्र देश (Egypt) नील नदी की देन है।" उक्त कथन को चरितार्थ करते हुए मिश्र देश पर एक छोटा-सा भौगोलिक निबन्ध लिखिये।

७—"जापान मे पत्थर का कोयला तथा अन्य प्रकार के कच्चे माल की प्रचुरता न होते हुए भी हाल में अद्भुत औद्योगिक तथा आर्थिक उन्नति हुई है।" इस उन्नति के कारण बतलाइये। यह भी लिखिये कौन-कौन से व्यवसाय किन-किन स्थानो मे उन्नत हो रहे हैं?

८—निम्न-लिखित प्रदेशों में से किसी एक का भौगोलिक वर्णन लिखिये:—

(१) लन्दन बेसिन (London Basm)
(२) पेरिस बेसिन (Paris Basin)
(३) राइन रिफ्ट वेली (Rhine Rift Valley)
(४) पो नदी की घाटी।

९—निम्नलिखित व्यवसायों में से किसी एक का वर्णन लिखिये:—

(१) उत्तर सागर (North Sea) का मछली मारने का व्यवसाय।

(२) उत्तर योरप का(Beat Sugar) चुकन्दर से शक्कर बनाने का व्यवसाय।

(३) भूमध्य-सागर (Mediterranean Sea) के पास का रेशम बनाने का व्यवसाय।

(४) रूम सागरीय फलों की खेती तथा व्यापार।

१०—वर्तमान महायुद्ध का भारत के औद्योगिक तथा व्यापारिक विकास पर क्या प्रभाव पड़ा? समझा कर लिखिये और बतलाइये क्या यह प्रभाव स्थायी होगा?

मध्यमा परीक्षा (संवत २००१ वि०)

भूगोल—प्रश्नपत्र २

समय ३ घण्टे] [पूर्णांक १००

सूचना—प्रत्येक प्रश्न के उत्तर के साथ यथासम्भव मानचित्र देना आवश्यक है। कुल छः प्रश्नों का उत्तर दीजिये। प्रश्न एक का उत्तर देना अनिवार्य है।

१—पूर्णपृष्ठ पर भारतवर्ष का एक मानचित्र खींचकर उसमें निम्नांकित बातें उपयुक्त चिह्नों से स्पष्ट दिखलाइये:—

(क) नदियाँ—ताप्ती, महानदी गंगा।

(ख) तालाबों तथा नहरों से सिंचाई होनेवाले प्रदेशों में से प्रत्येक के दो प्रदेश।

(ग) जूट, तम्बाकू और तेलहन मे से प्रत्येक की उत्पत्ति का एक-एक प्रधान भाग।

(घ) कपड़ा और कागज़ तैयार करनेवाले स्थानों में प्रत्येक के प्रधान दो दो स्थान।

(ङ) दिल्ली से मद्रास जाने का रेल-मार्ग—मुख्य स्टेशनों सहित।

२—"भारतवर्ष का मैदानी भाग उसके सब प्रदेशों मे से उत्तम गिना जाता है"। दृष्टान्त देते हुए उक्त कथक की पूर्ण विवेचना कीजिये और बतलाइये कि इस भाग में अन्य प्रदेशों की अपेक्षा कौन-कौन सी विशेषताएँ हैं। १६

३—आर्थिक दृष्टिकोण से कश्मीर या उड़ीसा मे से किसी एक का पूर्ण भौगोलिक वृत्तान्त लिखिये। १६

४—भारतवर्ष से जल-विद्युत शक्ति पैदा करनेवाले मुख्य केन्द्र का सक्षिप्त विवरण लिखिये और देश की कलाकौशल की उन्नति मे उनकी उपयोगिता दिखलाइये। १६

५—भारतवर्ष के वनों के विभाग तथा उनमे पाये जानेवाले पदार्थों की उपयोगिता दिखलाते हुए उनके भविष्य के विकास के विषय में अपना मन्तव्य प्रकट कीजिये। १६

६—सयुक्तप्रान्त के पूर्वी और पश्चिमी भाग की कृषि के सम्बन्ध मे तुलनात्मक विवेचना कीजिये और साथ मे सिचाई के साधनों का एक मानचित्र भी दीजिये। १६

७—"मैसूर प्रान्त एक बड़ा उन्नतिशील प्रदेश गिना जाता है"। भौगोलिक कारणों को दिखलाते हुए इस बात का स्पष्टीकरण कीजिये। १६

८—भारत के मैंगनीज, जूट और चाय की उपज के साधनों पर एक संक्षिप्त लेख लिखिये और बतलाइये ये वस्तुएँ किस सीमा तक ससार के व्यापार मे सम्मिलित हैं। १६

९—एक भारतीय ग्रामीण तथा बम्बई या कलकत्ता के कारख़ानों में काम करनेवाले कारीगर के दैनिक जीवन की तुलनात्मक दृष्टि से विवेचना कीजिये। १६

१०—रूई, पटसन और चाय मे से किसी एक के विषय में निम्नलिखित बातों की दृष्टि से पूर्ण विवेचना कीजिये— १६

(क) इसके विकास तथा समृद्धि के भौगोलिक कारण।

(ख) बाहर भेजने के मुख्य बन्दरगाह।

(ग) माल-तैयार करने और इकट्ठा करने के दो केन्द्र।

(घ) तैयार किया माल किन देशों और बन्दरगाहों को भेजा जाता है?

११—भारतवर्ष के वायुयान-मार्गों की भावी-उपयोगिता तथा उन्नति का, देशों के आभ्यन्तरिक तथा वाह्य व्यापार पर प्रभाव दिखलाते हुए संक्षिप्त लेख लिखिये। १६

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००१ वि०)

दर्शन—प्रश्नपत्र १

समय ३ घण्टे] [पूर्णाङ्क १००

१—धर्म का लक्षण तथा प्रयोजन सप्रमाण लिखिये। १४

२—दर्शन-शास्त्रों का विकास कैसे हुआ, लिखिये। १४

३—महर्षि पतञ्जलि के अष्टाग योग कौन हैं और उनकी उपयोगिता क्या है। १४

४—सृष्टि तथा प्रलय के विषय में अपना मन्तव्य प्रकट कीजिये। १४

५—ईश्वर की सत्ता मे विभिन्न मतभेदों का निरूपण करते हुए अपना मत निश्चित कीजिये। १६

६—जैन-सम्प्रदाय के जीवात्मा का स्वरूप-निर्देश कीजिये। १४

७—जैन-सम्प्रदाय के प्रत्यक्ष-परोक्ष ज्ञानों का भेद प्रकट कीजिये। १४

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००१ वि०)

दर्शन—प्रश्नपत्र २

समय ३ घण्टे] [पूर्णांक १००

सूचना—केवल पॉच प्रश्नों का उत्तर लिखिये। सभी प्रश्नों के लिए समान अंक नियत हैं।

१—तर्क-शास्त्र की उपयोगिता पर अपना विचार सतर्क व्यक्त कीजिये और यह भी स्पष्ट कीजिये कि तर्क-शास्त्र का व्याकरण, मनोविज्ञान और अलंकार-शास्त्र से क्या सम्बन्ध है? २०

२—प्राच्य और पाश्चात्य दृष्टिकोण से तुलनात्मक विवेचना करते हुए पदार्थों की संख्या बतलाइये। २०

३—मतभेद पुरस्सर प्रमाणों की गणना करते हुए प्रत्यक्ष प्रमाण की दार्शनिक व्याख्या कीजिये और उसकी विशेषता, उसके प्रकार लिखिये। २०

४—(अ) विज्ञान और दर्शन-शास्त्र में परस्पर सम्बन्ध बतलाइये।

(ब) विज्ञान की वृद्धि से क्या दर्शन-शास्त्र का क्षेत्र संकुचित हो जायगा ?

(स) "दर्शन-शास्त्र में सब से अधिक भूल का कारण विज्ञानों का स्वाधिकारोल्लंघन है।" इसकी स्पष्ट विवेचना कीजिये। २०

५—हेत्वाभाव किसे कहते हैं ? इसके कितने भेद हैं ? प्रत्येक की परिभाषा अवान्तर भेद के साथ सोदाहरण दर्शाइये। २०

६—(अ) लुप्तावयव अनुमान के कितने प्रकार हैं ? उदाहरण-सहित बतलाइये।

(ब) पुष्टावयव अनुमान की परिभाषा सोदाहरण लिखिये।

(स) काल्पनिक अनुमान किस अनुमान के अन्तर्गत आता है ? २०

७—अभ्यास की मनोवैज्ञानिक व्याख्या कीजिये। नये अभ्यासों के उपार्जन के कौन-कौन से नियम हैं और उनके विषय मे आप क्या जानते हैं ? २०

८—प्राच्य और पाश्चात्य दर्शनों के अनुसार मुक्ति के कौन-कौन साधन हैं ? स्वर्ग पाने से मुक्ति पाना क्योंकर अधिक श्रेयस्कर है ? क्या मुक्त होने पर भी पुनरावर्त्तन सम्भव है ? २०

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००१ वि०)

संस्कृत—प्रश्नपत्र १

समय ३ घण्टे] [पूर्णांक १००

१—नीचे लिखे श्लोकों की व्याख्या अन्वय-सहित, प्रसंग निर्देशपूर्वक, शुद्ध हिन्दी मे कीजिये :—

(क) अभूर्विमानान्तरलम्बिनीनाम्
श्रुत्वा स्वनं काञ्चनकिंकिणीनाम्।

प्रत्युद्व्रजन्तीव खमुत्पतन्त्यः
गोदावरी सारसपङ्क्तयस्त्वाम् ॥ १५

(ख) श्मश्रुप्रवृद्धिजनिताननविक्रियाश्च
प्लक्षान् प्ररोहजटिलानिवमन्त्रिवृद्धान् ।
अन्वग्रहीत् प्रणमत शुभदृष्टिपातै.
वार्तानुयोगमधुराक्षरया च वाचा ॥ १५

२—नीचे लिखे अवतरणों का हिन्दी मे अनुवाद कीजिये .—-

(क) विहायाम्बरतल उत्सुज्यच कमलिनीवनानि शकुनय इव दिवसावसादे तरु शिखरषु पर्वताग्रेपु च रविकिरणाः स्थितिमकुर्वन्त । अस्तमुपगते च भगवति सहस्रदीधितावपरार्णवतलादु उल्लसन्ती विद्रुमलतेव पाटला सन्ध्या समदृश्यत । अचिरप्रोषिते सवितरि शोकविधुरा हसितदुकूल परिधानाकमलिनी दिनपति समागमव्रतमिवाचरत् । अपरसागराम्भसि पतिते दिवसकरे तारागणमम्बरमधारयत् । अचिराच्च तारकित वियद्राजत । अपहाय मुनिहृदयानि सर्वमन्यदन्धकारता तिमिरमनयत् । १०

(ख) अहो मे मोहाद् बालिश्यम् । अरुचितेऽर्थे प्रेरयन्नर्थावाप्तिगतोऽस्मस्य हास्यो जातः । स्पष्टमस्य चेष्टा नामायथापूर्वम् । तथाहिनमास्निग्ध पश्यति न स्मितपूर्वं भाषते न रहस्यानि विवृणोति न हस्ते स्पृशति न व्यसनेष्वनुकम्पते नोत्सवेष्वनुगृह्णाति न विलोभनवस्तूनि प्रपयति न मत्सुकृतानि प्रगणयति न गृहवार्ताम् पृच्छति न मत्पक्षयान्प्रत्यवेक्षते न मामासन्नकार्येष्वभ्यन्तरी करोति । १०

३—नीचे लिखे श्लोक की व्याख्या अपनी संस्कृत में कीजिये :—-

दिवाकराद्रक्षति यो गुहासु लीनं दिवाभीतमिवान्धकारम् ।
क्षुद्रेऽपि नूनं शरणं प्रपन्ने ममत्वमुच्चैः शिरसा सतीव ॥ १०

४—(क) अदस् (पु०) के चतुर्थी, युष्मद् के पञ्चमी, राजन् के षष्ठी, चन्द्रमस् के प्रथमा, धी के द्वितीया और वाच् के सप्तमी में रूप लिखिये । ६

(ख) अस् के विधिलिङ् (मध्यम पुरुष) भू के लुङ् (प्रथम पुरुष) श्रु के लोट् (उत्तम पुरुष), इष् के लङ् (प्रथम पुरुष), ज्ञा के लुट् (प्रथम पुरुष) ब्रू के लिट् (प्रथम पुरुष) के रूप लिखिये । ६

(ग) विहाय, स्थिति, उपगते मे प्रकृति-प्रत्यय-विच्छेद कीजिये । ३

(घ) श्रु + मन्, प्रच्छ् + क्त, इष् + शतृ के सिद्ध रूप लिखिये । ३

(ङ) शुभदृष्टिपातैः मे विग्रह सहित समास-नाम लिखिये । २

५—'हरिशर्मकथा' अथवा "नवम वेतालकथा" मे से किसी एक की कथा संस्कृत मे लिखिये । १०

६—कालिदास अथवा दण्डी का समय और लिखित ग्रन्थों का नाम लिखिये ।

मध्यमा परीक्षा (सं० २००१ वि०)

सस्कृत—प्रश्नपत्र २

समय ३ घण्टे] [पूर्णांक १००

१—निम्नलिखिति श्लोकों मे से किन्हीं दो का शुद्ध एव सरल हिन्दी मे अनुवाद कीजिये :— २०

(क) क्वचिद् भूमाशायी क्वचिदपि च पर्यङ्कशयनम्
क्वचिच्छाकाहारी क्वचिदपि च शाल्योदनरुचि. ।
क्वचित्कन्थाधारी क्वचिदपि च दिव्याम्बरधरो,
मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दु.ख न च सुखम् ॥

(ख) सहस्रबाहुस्त्वमह द्विबाहुः त्व सैन्ययुक्तोऽस्म्यहमेक एव ।
त्व चक्रवर्ती मुनिनन्दनोऽहं तथापि नो पश्यतु तर्कमर्कः ॥

(ग) हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम् ।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः ॥

२—निम्नलिखित पद्यमिश्रित गद्याश का अर्थ सरल हिन्दी मे लिखिये :— ३०

'अस्त्यत्र धरातले वर्धमानं नाम नगरम् । तत्र दन्तिलो नाम नानाभाण्ड पतिः सकलपुरनायकः प्रतिवसतिस्म । तेन पुरकार्य नृपकार्यं च कुर्वता तुष्टि नीतास्तत्पुरवासिनो लोका नृपतिश्च । किं बहुना । न कोऽपि तादृक्केनापि चतुरो दृष्टो श्रुतो वेति । अथवा साधु चेदमुच्यते—

नरपति हितकर्त्ता द्वेष्यता याति लोके जनपद हितकर्त्ता त्यज्यते पार्थिवेन्द्रैः।
इति महति विरोधे वर्तमाने समाने नृपतिजनपदाना दुर्लभः कार्यकर्त्ता॥

अथैव गच्छति काले दन्तिलस्य कदाचिद्विवाहः सवृत्तः। तत्र तेन सर्वे पुरवासिनो राजसन्निधिलोकाश्च सम्मानपुरःसरमामन्त्र्य भोजिता वस्त्रादिभिः सत्कृताश्च। ततो विवाहानन्तर राजा सान्तःपुरः स्वगृहमानीयाभ्यार्चितः। अथ तस्य नृपतेगृ‍ह-सम्मार्जनकर्त्ता गोरम्भो नाम राजसेवको गृहायतोऽपि तेनानुचित-स्थान उपविष्टोऽवज्ञयार्धचन्द्र दत्वा निःसारितः। सोऽपि ततःप्रभृति निःश्वसन्न-पमानान्न रात्रावप्यधिशेते। 'कथ मया तस्य भाण्डपते राजप्रसादहानिकर्त्तव्या' इति चिन्तयन्नास्ते।

३—नीचे लिखे हिन्दी गद्यांश का संस्कृत में अनुवाद कीजिये :— २०

किसी नदी के किनारे एक भेड़िया और एक भेड़ का बच्चा पानी पी रहे थे। भेड़िया ऊपर की ओर और भेड़ का बच्चा नीचे की ओर था। भेड़िये ने भेड़ के बच्चे से कहा—ओ बेवकूफ! पानी क्यों जूठा कर रहा है। देखता नहीं कि मैं पानी पी रहा हूँ? भेड के बच्चे ने उत्तर दिया—भगवन्! मै आपसे नीचे की ओर हूँ। पानी तो ऊपर से मेरी ओर ही आ रहा है, फिर जूठा कैसे हो सकता है? भेड़िये ने कहा—ठीक है। तूने मुझे परसाल गाली भी दी थी। भेड़ के बच्चे ने उत्तर दिया—महाराज! मै छः महीने का हूँ, परसाल तो मैं पैदा भी नहीं हुआ था। भेड़िये ने कहा—तो फिर तेरा बाप रहा होगा। भेड़ के बच्चे ने कहा—मेरा बाप तो एक वर्ष पूर्व ही मर चुका है। भेड़िये ने यह कहकर—तो फिर तेरी जाति का कोई और रहा होगा, भेड़ के बच्चे को पकड़ कर मार डाला। दुष्ट अपनी दुष्टता के लिए कोई-न-कोई बहाना बना ही लेता है।

४—निम्नलिखित विषयों मे से किसी एक विषय पर बीस पंक्तियों की एक टिप्पणी संस्कृत में लिखिये :—

(क) गंगावर्णनम् (ख) विद्या प्रशंसा (ग) धर्मेणहीनः पशुभिस्समानः
(घ) आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मना (ङ) शशकसिंहयोः कथा।

५—नीचे लिखे किन्हीं दो वाक्यों को कारण-निर्दिष्ट करते हुए शुद्ध कीजिये :— ५

(१) स प्राण तत्याज (२) विधुर्राजिते (३) रामोऽध्यास्ते सिंहासने।

६—नीचे लिखे किन्हीं दो पदों का प्रयोग स्पष्ट करने के लिए संस्कृत वाक्य बनाइये :— ५

(१) मम दाराः, (२) नमोनमः, (३) मा स्म

मध्यमा परीक्षा सम्वत २००१ वि०)

धर्मशास्त्र प्रश्नपत्र १

समय ३ घण्टे] [पूर्णांक १००

सूचना—प्रश्न १ और ३ अनिवार्य हैं। शेष प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर पर्याप्त हे कुल छः प्रश्नो का उत्तर लिखना हैं। युक्तिसगत और तर्क-पूर्ण उत्तर को विशेष महत्व दिया जायगा।

१—राजधर्म की व्याख्या कीजिये। राज्यांग कौन-कौन है? राष्ट्र के लिए प्रत्येक अंग की उपादेयता और राजा का कर्तव्य संक्षेप में लिखिये। १८

२—संग्राम मे सम्मुख मृत्यु प्राप्त करनेवाले व्यक्ति को कौन गति उपलब्ध होती है? समर के अवसर पर अवध्य कौन-कौन कहे गये हैं? अवध्य के वध करनेवाले व्यक्ति को जन्मान्तर मे किस प्रकार के भोग भोगने होते हैं? १६

३—प्राचीन भारतीय शिक्षा का क्या उद्देश्य था? प्रवृत्तिमार्ग और निवृत्तिमार्ग को स्पष्ट समझाइये। प्राचीन शिक्षा के द्वारा दोनों का समन्वय किस प्रकार किया गया था? १८

४—स्मृति से आप क्या समझते है? याज्ञवल्क्यस्मृति में गृहस्थ-धर्म का विवेचन किस प्रकार किया गया है? उत्तर सतर्क और सोदाहरण होना चाहिये। १६

५—महा प्रलय के अनन्तर पुनः नवीन सृष्टि का क्रमविकास किस प्रकार होता है? मनु ने ब्राह्मण के क्या लक्षण कहे हैं और किसको सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण घोषित किया है? १६

६—सामान्यधर्म के क्या लक्षण हैं ? "मानव-जीवन-रथ की धुरी धर्म ही है"—इस कथन की पुष्टि सतर्क और सप्रमाण कीजिये। १६

७—शास्त्रों मे किस-किस का अन्न अभक्ष्य कहा गया है ? अभक्ष्यान्न खाने पर किस प्रकार प्रायश्चित्त करना चाहिये ? वैडालवृत्तिक और वकवृत्तिक के लक्षण लिखिये। १६

८—आश्रमधर्म का विस्तृत विवेचन कीजिये। वानप्रस्थाश्रम के लिए कौन समय उपयुक्त है ? इस आश्रम में किन-किन नियमों का पालन करना आवश्यक है ? १६

९—दुर्ग कितने प्रकार के होते हैं ? राजा को अपना दुर्ग किन-किन बातों को दृष्टिकोण मे रखकर बनवाना चाहिये ? १६

१०—राजा के छः गुण कौन-कौन से हैं ? उसको प्रत्येक का पालन कब और किस प्रकार करना चाहिये ? १६

मधयमा परीक्षा (संवत् २००१ वि०)

धर्मशास्त्र—प्रश्नपत्र २

समय ३ घण्टे] [पूर्णांक १००

सूचना—केवल छः प्रश्नों का उत्तर लिखिये। चार अंक स्वच्छ लेखन के लिए नियत हैं।

१—जीव मनुष्य-योनि को कैसे प्राप्त होता है ? गर्भ के दशम मास में जीव ज्ञान-प्राप्त करके ईश्वर की जो प्रार्थना करता है, उसको संक्षेप में लिखिये।

२—ब्रह्मा के चारों मुखों से जो ज्ञान और कर्म-रूप सृष्टि उत्पन्न हुई, उसका विशद रूप से वर्णन कीजिये।

३—यमों और नियमों का वर्णन कीजिये। अष्टाग योग मे यम-नियम की आवश्यकता क्यों है, इस पर एक टिप्पणी लिखिये।

४—जीवात्मा के चार शरीर कौन-कौन से हैं ? उनकी विशद व्याख्या कीजिये।

५—सृष्टि-रचना के निमित्त और उपादान कारणों का विशद वर्णन कीजिये। प्रकृति अपने सूक्ष्म आकार से क्रमशः किस प्रकार स्थूलाकार में आती है? सूक्ष्म प्रकृति से लेकर स्थूल भूतों तक, सबका, संक्षेप में वर्णन कीजिये।

६—गीता के तीसरे अध्याय मे कर्म या यज्ञ के चक्र का वर्णन किस प्रकार किया गया है? "सर्वगत ब्रह्म नित्य यज्ञ में प्रतिष्ठित है," इस पर एक टिप्पणी लिखिये।

७—गीता में भगवान् ने युग-युग में अपने अवतारों का जो कारण बतलाया है, उसका उल्लेख कीजिये।

८—गीता के अठारहवें अध्याय के प्रारम्भ में "सन्यास" और "त्याग" शब्दों का उल्लेख है। इनकी विशद व्याख्या कीजिये।

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००१ वि०)

कृषिशास्त्र—प्रश्नपत्र १

समय ३ घण्टे] [पूर्णांक १००

सूचना—किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिये। सभी प्रश्नों के अंक बराबर हैं।

१—कृषि के लिए भूमि मोल लेते समय किन विचारों को ध्यान मे रखियेगा। और क्यों?

२—हरी खाद के प्रयोग से क्या लाभ होता है? कौन-कौन से वृक्ष इस हेतु खेत मे बोकर जोत दिये जाते हैं? उनकी खाद में क्या अन्तर होता है?

३—निम्नांकित फसलों के बोने का समय, बीज और पैदावार की मात्रा लिखिए :—

गेहूँ, धान, चना, मक्का, ईख, पटसन, लूसर्न, रेंडी, तम्बाकू और कपास।

४—(क) निम्नांकित कीड़े मारने की औषधियाँ बनाने तथा उनका प्रयोग करने की विधियाँ लिखिए—

(अ) क्रूड ऑयल एमलशन (ब) चूना-गंधक घोल,

(स) तम्बाकू घोल (द) पारा-रांगा मिश्रित (ई) पेरानाफ

(ख) निम्नांकित वृक्षों के उदाहरण दीजिये—

(अ) जिस वृक्ष के पुष्प मे स्त्रीलिंग व पुल्लिंग होते हैं।

(ब) जिस वृक्ष मे नर-पुष्प और मादा-पुष्प अलग-अलग होता है और वे दोनों एक ही वृक्ष पर होते हैं।

(स) मादा-पुष्प अलग वृक्ष पर होता है और नर-पुष्प दूसरे वृक्ष पर।

५—(क) कृषि के लिए बैल मोल लेते समय क्या परीक्षा की जाती है और किन विचारों को ध्यान मे रखना होता है ?

(ख) १. खुरपका, २ फेंफड़ी, ३. गलसूजन। इनके लक्षण और औषधियाँ लिखिये।

६—इस बीसवीं शताब्दी में सयुक्तप्रान्त मे कृषि की क्या उन्नति हुई है? उदाहरण-सहित समझाइए।

मध्यमा परीक्षा (सवत् २००१ वि०)

कृषिशास्त्र—प्रश्नपत्र २

समय ३ घण्टे] [पूर्णांक १००

सूचना—कुल पॉच प्रश्नों का उत्तर दीजिए। प्रथम प्रश्न का उत्तर देना आवश्यक है। सभी प्रश्नों के लिए समान अंक नियत हैं।

१—"दुर्दशा के गहरे गढे से दरिद्र को ऊपर उठाने के लिए सर्वप्रथम हम सब मे दृढ सकल्प और आत्म-विश्वास की आवश्यकता है। दूसरी ओर किसानों को चाहिए कि वे अपनी उन्नति के लिए जो कुछ भी कर सकते हैं, अपने साथी किसानों के सहयोग से, अवश्य करें।" इस कथन की विवेचना कीजिए।

२—"उत्तराधिकार-कानून, अपव्यय और बिक्री के अव्यवस्थित ढंग के कारण भूमि व्यवस्था में किसान को भूमि का मालिक बनाने की नीति नहीं अपनानी चाहिए। इस कथन पर सतर्क विचार कीजिए।

३ – सहकारी खेती और चकबन्दी में क्या अंतर है ? बड़े परिमाण की खेती के ध्येय तक पहुचने के लिए आप किसे अच्छा समझते हैं और क्यों ?

४—"महाजन और बनिये सुधारे नहीं जा सकते। अतः किसान की ऋण-सम्बन्धी समस्या की पूर्ति का एकमात्र उपाय सहकारी साख-समिति है।" इस मत की व्याख्या कीजिये और बतलाइये, आपके प्रात में साख-समितियाँ क्यो असफल रही है ?

५—सरकारी फ़ार्मों मे होनेवाले प्रयोगों के कारण जो नवीन सुधार निकाले जाते हैं, किसानों मे उनका किस प्रकार सफलता-पूर्वक प्रचार किया जा सकता है ? सकारण उत्तर दीजिये।

६—"वर्तमान युद्ध के कारण कृषि-क्षेत्र मे बेकारी बहुत घट गई है।" सोदाहरण बतलाइये कि आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं। ऐसी बेकारी को दूर करने के मुख्य-मुख्य व्यावहारिक उपाय बतलाइये।

७—"गाँव और शहर की आर्थिक उन्नति मे कोई विरोध नहीं है।" अपने प्रदेश से उदाहरण लेकर इस मत पर विचार कीजिए।

मध्यमा परीक्षा (संवत २००१ वि०)

अँगरेज़ी—प्रश्नपत्र १

समय ३ घण्टे] [पूर्णांक १००

१—निम्नलिखित उद्धरणों मे से किन्हीं दो का हिन्दी मे, मूल-प्रसङ्ग बतलाते हुए, अर्थ लिखिए:—

(अ) For he loves to hear
That unicorns may be betray'd with trees
And bears with glasses, elephants with holes
Lions with toils and men with flatterers:
But when I tell him he hates flatterers
He says he does, being then most flattered.

(आ) Cowards die many times before their deaths
The valiant never taste of death but once.

'Of all the wonders that I yet have heard,
It seems to me most strange that men shonld fear;
Seeing that death, a necessary end
Will come when it will come

(इ) And Caesar's spirit, ranging for revenge
With Ate by his side come hot from hell
Shall in these confines with a monarch's voice
Cry 'Havoc' and let slip the dogs of war;
That this foul deed shall smell above the earth
With Carrion men groaning for búrial.

२—जूलियस सीजर की मृत्यु पर ब्रूटस और एन्टनी ने जो भाषण दिये थे उनकी तुलना कीजिये और यह दिखलाइये कि एन्टनी ने किस कौशल से जनता के मत को मोह कर उसे षड्यन्त्रकारियों के विरुद्ध भड़का दिया। १२

३—"जूलियस सीजर" नाटक का नायक (Hero) कौन है—जूलियस सीजर या ब्रूटस ?

या

"जूलियस सीजर" नाटक में ट्रेजेडी के कारण क्या हैं ?

या

"जूलियस सीजर" में साम्राज्यवाद और प्रजातन्त्रवाद का जो द्वन्द्व दिखलाया गया है उसका विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिये।

४—प्रसंग-सहित हिन्दी मे किन्हीं दो का अर्थ लिखिये और उनके सौन्दर्य पर सक्षिप्त टिप्पणी लिखिये :—

(अ) In the full clutch of circumstance
I have not winced nor cried aloud
Under the bludgeonings of chance
My head is bloody, but unbowed.

(आ) I for a beaker full ot the warm South
Full of the tiue, the blushful Hippo-
crence
With headed bubbles winking at the brime
Aud purple-staine'd mouth ;

(इ) Flowers laugh before thee on their beds,
And fragrance in thy footing treads ;
Thou dost preserve the stars from wrong,
And the most ancient heavens, through
thee, are fresh and strong.

५.—निम्नलिखित कविताओं में से किन्हीं दो का (हिन्दी में) संक्षेप में विवरण लिखिये :— १६

Keats' "La Belle Dame Sans Merci"; Milton's" "On his blindness"; Browning's "Prospice"; Shelley's "To a sky lark"; Tennyson's Sir Galahad".

६—अंग्रजी कवियों में कौन आपको सबसे ज़्यादा पसन्द है और क्यों ? १२

या

वर्डसवर्थ, शेली, कीट्स तथा टेनीसन—इनमें से किसी एक के जीवन तथा कविता पर आलोचनात्मक निबन्ध लिखिये।

७—निम्नलिखित पद का हिन्दी में अर्थ लिखिये :— २०

Weavers, weaving at break af day,
Why do you weave a garmeat so gay ?...
Blue as the wing of a halcyon wild,
We weave the of robes of a new-born child.
Weavers, weaving at fall ot night,
Why do you weave a garment so bright ?...
Like the plumes of a peacock, purple and green
We weave the marriage-veils of green.

Weavers, weaving Solemn and still,
What do you weave in the moonlight chill ?
White as a feather and white as a cloud,
We weave a dead man's funeral shroud

मध्यमा परीक्षा (सम्वत २००१ वि०)

अँगरेज़ी—प्रश्नपत्र २

समय ३ घण्टे] [पूर्णांक १००

१—निम्नलिखित अवतरणों मे से किन्हीं दो का सरल हिन्दी में अनुवाद कीजिये :— ३०

(अ) It was a heavy mass of building, that chateau of Monsieur the Marquis, with a large stone court-yard before it, and two stone sweeps of staircase meeting in a stone terrace before the principal door. A stony business altogether, with heavy stone balustrades, and stone urns, and stone flowers, and stone faces of men, and stone heads of lions, in all directions. As if the Gorgan's head had surveyed it, when it was finished, two centuries ago

(आ) As he stood by the wall in a dim corner, while some of the fiftytwo were brought in after him, one man stopped in passing, to embrace him, as having a knowledge of him It thrilled him with a great dread of discovery, but the man went on A few moments after that, a young woman, with a slight girlish form, a sweet spare face in which there was no vestige of colour, and large widely opened patient eves, rose from the seat where he had observed her sitting, and came to speak to him

(इ) Then he began to analyse the roots of those names,—and various interpretations of their meanings He brought before the bewildered audience all the intricacies of the

different schools of metaphysics with consummate skill. Each letter of those names he divided from its fellow, and then pursed them with a relentless logic till they fell to the dust in confusion, to be caught up again and restored to a meaning never before imagined by the subtlest of word-mongers.

२—निम्नलिखित अंश का हिन्दी मे अनुवाद कीजिये :— १०

If I were to look over the whole world to find out the country most richly endowed with all the wealth, power, and beauty that nature can bestow in some parts a very paradise on earth—I should point to India. If I were asked under what sky the human mind has most fully developed some of its choicest gifts, had most deeply pondered on the deepest problems of life, and had found solutions of some of them which well deserve the attention even of those who have studied Plato and Kant—I should point to India.

३—Sydney Carton का चरित्र-चित्रण हिन्दी भाषा में कीजिए।

अथवा

We Crown Thee King की कहानी हिन्दी मे लिखिये। १०

४—निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर तीन पृष्ठों का एक निबन्ध अंग्रेजी मे लिखिए :— १०

(अ) Democracy is the most heartless tyrant in the world.

(आ) The Modern Civilization.

(इ) War is necessary for the progress of the world.

(ई) Literature and Nationalism

(उ) Place of Hindi among the spoken lenguages of India.

५—निम्नलिखित अंश का सरल अँगरेजी मे अनुवाद कीजिए :— २०

यह निस्सन्देह सत्य है कि हम अपना जीवन शोक के बिना व्यतीत नहीं कर सकते। धूप छाया के बिना नहीं रहती। हमें शिकायत नहीं करनी चाहिये कि गुलाब के पुष्प के साथ काँटे होते हैं, वरन् कृतज्ञ होना चाहिये कि इन काँटों मे भी पुष्प खिलते हैं। हमारा जीवन ही ऐसा उलझा हुआ है कि हमें बहुत अधिक दुःख और कठिनाइयाँ मिलनी चाहिये। मनुष्य प्रायः जीवन के इस उलझेपन मे, अपने आपको दुःख और कष्ट देता है। माना कि इस प्रकार एक सज्जन पुरुष कभी-कभी ससार से विमुख हो जाता है; परन्तु यह भी सत्य है कि जो पुरुष सदा नियमित जीवन व्यतीत करता है, वह इस संसार से असन्तुष्ट नहीं रहता। ससार एक दर्पण की नाईं है। यदि आप मुसकराएँ तो वह भी मुसकराता है, यदि आप नाक चढाएँ, तो वह भी नाक चढाता है। यदि आप एक लाल दर्पण से देखें, तो सब कुछ लाल और गुलाबी प्रतीत होता है। यदि नीले दर्पण से देखें तो सब कुछ नीला दिखाई देगा। और यदि धुँधले दर्पण से देखें तो सब वस्तुएँ धुँधली और गँदली दिखाई देंगी। अतः आप वस्तुओं की चमकती हुई दिशा की ओर क्यों न देखें, प्रत्येक वस्तु इस ससार मे चमकदार पहलू रखती है। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जिनकी मुसकान, जिनके बोलने का ढंग, जिनका केवल अपने निकट होना, सूर्य की किरण की भाँति चमकदार प्रतीत होता है और ऐसा जान पड़ता है, जैसे सारा कमरा आलोकमय हो गया है।

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००१ वि०)

इतिहास – प्रश्नपत्र १

समय ३ घटे] [पूर्णांक १००

सूचना—केवल छः प्रश्नों का उत्तर लिखिए, परन्तु प्रत्येक समूह में से दो प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य है। सभी प्रश्नों के लिए समान अंक नियत हैं। चार अक स्वच्छलेखन के लिए सुरक्षित हैं।

(क)

१—वेदकालीन सभ्यता से आप क्या समझते हैं? उस समय के समाज में स्त्रियों का क्या स्थान था?

२—बुद्ध-धर्म के विषय में अपनी सम्मति प्रकट करते हुए उसके पतन का कारण बतलाइए।

३—कनिष्क कौन था? उसके शासन की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

४—किन्हीं चार विषयों पर सक्षेप मे टिप्पणियाँ लिखिए :—

समुद्रगुप्त, सिकन्दर, महावीर, मेगस्थनीज, हर्ष. पाटलिपुत्र नालदा-विश्वविद्यालय तथा फाहियान।

(ख)

५—दिल्ली के पठान सुल्तानों के समय की सामाजिक अवस्था तथा संस्कृति का वर्णन कीजिए।

६—'मुहम्मद तुगलक के सारे कार्य राजनीति पूर्ण थे।' इस कथन की सप्रमाण आलोचना कीजिए।

७—अलाउद्दीन खिलजी के शासन-प्रबध पर प्रकाश डालिए।

८—बहमनी-साम्राज्य की उत्पत्ति तथा विनाश का कारण बतलाइए।

(ग)

९—मुगल-काल मुसलमान-काल का स्वर्ण-युग क्यों कहा जाता है?

१०—निम्नाकित विषयों में से किन्हीं चार पर सक्षेप मे टिप्पणियाँ लिखिए :—

दीनइलाही, शेरशाह, अबुलफजल, सर टामस रो, नूरजहाँ, तुलसीदास, जज़िया तथा प्रतापसिंह।

११—भारत के इतिहास में शिवाजी का क्या स्थान था?

१२—भारतवर्ष का एक मानचित्र तैयारकर औरगजेब के समय का राज्य-विस्तार दिखलाइए।

निरधार अधार दै धार मँझार,
दई गहि बाँह न बोरिए जू।
घन आनन्द आप के चातक को,
गुन बाँधि कै मोह न छोरिए जू।
रस प्याय कै ज्याय बढाय कै आस,
बिसास मे यों विष घोरिए जू।

(ङ) सोहत ओढ़े पीतपट स्याम सलौने गात।
मनहुं नीलमनि सैल पर आतप परयो प्रभात।
भजन कह्यो तासों भज्यो भज्यौ न एकौ बार।
दूर भजन जासों कह्यो सो तू भज्यो गँवार।

(च) या लकुटी अरु कामरिया पर,
राज तिहूँ पुर को तजि डारौ।
आठहु सिद्धि नवौं निधि को सुख,
नन्द की गाइ चराई बिसारौ।
इन आँखिन सों रसखानि कबौं,
ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारौ।
कोटिक हूँ कलधौत के धाम,
करील के कुञ्जन ऊपर वारौं।

२—"राम चरित मानस मे तुलसी केवल कवि के रूप मे ही नहीं, उपदेशक के रूप में भी हमारे सामने आते हैं।" १२

इस पर अपना मत लिखिए और यह बताइए कि काव्य-दृष्टि से तुलसीदास जी के उपदेशों का क्या स्थान है?

३—"बिहारी की रस-व्यजना का पूर्ण वैभव उनके अनुभावों के विधान में दिखायी पड़ता है।" १२

इस कथन को उदाहरण देकर समझाइए।

४—निम्नलिखित मे से किन्हीं तीन पर टिप्पणियाँ लिखिए— १२

रसखान, घनानन्द, हरिश्चन्द्र, रत्नाकर, सत्यनारायण।

५—भूषण कवि को आप साम्प्रदायिक कवियों की श्रेणी में रखेंगे या राष्ट्रीय कवियों की श्रेणी में? अपने मत का प्रतिपादन कीजिए। १६

६—उत्प्रेक्षा, यमक, प्रतीप, अतिशयोक्ति, मालोपमा में से केवल तीन के लक्षण उदाहरण सहित लिखिए।

७—छन्दःशास्त्र की दृष्टि से प्रश्न १ के अवतरण (क) और (च) में क्या त्रुटियाँ हैं? प्रश्न १ के अवतरण (ख) मे कौन सा रस है? उक्त अवतरण मे किस प्रकार रस-परिपाक हुआ है, इसकी व्याख्या कीजिए। १६

८—"काव्यक्षेत्र मे जिस स्वाभाविक स्वच्छन्ता का आभास पं० श्रीधर पाठक ने दिया था उसके पथ पर चलने वाले द्वितीय उत्थान मे त्रिपाठी जी ही दिखायी पड़े।" १६

'पथिक' को दृष्टि में रखकर इस कथन की व्याख्या कीजिए।

९—पथिक के कथानक-सगठन की आलोचना कीजिए। १६

१०—वर्त्तमान हिन्दी काव्य में प्रगतिवाद का क्या स्थान है? उसके गुणदोष लिखिए। छायावाद से उसकी भिन्नताएँ स्पष्ट करके समझाइए। १६

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००२ वि०)

साहित्य—प्रश्न पत्र २

समय ३ घंटे] [पूर्णाङ्क १००

सूचना—केवल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए जिनमें पहला और सातवाँ अनिवार्य है।

१—निम्नलिखित अवतरणों मे से केवल तीन की संदर्भ-सहित व्याख्या कीजिए:— २०

(क) सत्य-चिरन्तन के जन्मजात वीर बालको! अरे तुम अपनी आत्मा की ओर देखो—शरीर की ओर नहीं। शरीर तो नाशवान है; मगर, यह आत्मा तुम्हारी अमर है। इसें कोई नहीं मार सकता। फिर उठो! और उठो! जागो और जागो! तथा विद्रोह करो इन भूले पागलों के विरुद्ध, जो धर्म की गद्दी पर अपने शरीरों को सँवारे बैठे हैं। ये मिथ्या मार्ग पर हैं, भूले हैं—

इनके असत् और भूल का सर्वनाश होगा ही; बशर्ते कि तुम सत्य पर सावधानी से डटे रहो।

(ख) जिस प्रकार धार्मिक क्षेत्र में भारत के ज्ञान, भक्ति तथा कर्म के समन्वय की प्रसिद्धि है तथा जिस प्रकार वर्ण एव आश्रम चतुष्टय के निरूपण द्वारा इस देश मे सामाजिक समन्वय का सफल प्रयास हुआ है, ठीक उसी प्रकार साहित्य तथा अन्यान्य कलाओ मे भी भारतीय प्रवृत्ति समन्वय की ओर रही है। साहित्यिक समन्वय से हमारा तात्पर्य साहित्य प्रदर्शित सुख-दुख, उत्थान-पतन, हर्ष-विषाद आदि विरोधी तथा विपरीत भावों के समीकरण तथा एक अलौकिक आनन्द में उनके विलीन होने से है। साहित्य के किसी अंग को लेकर देखिए, सर्वत्र यही समन्वय दिखाई देगा।

(ग) ससार मे पाप कुछ भी नहीं है, वह केवल मनुष्य के दृष्टिकोण की विषमता का दूसरा नाम है। प्रत्येक व्यक्ति एक विशेष प्रकार की मनः-प्रवृत्ति लेकर उत्पन्न होता है—प्रत्येक व्यक्ति इस ससार के रंगमंच पर एक अभिनय करने आता है। अपनी मनः-प्रवृत्ति से प्रेरित होकर अपने पाठ को वह दुहराता है—यही मनुष्य का जीवन है। जो कुछ मनुष्य करता है वह उसके स्वभाव के अनुकूल होता है, और स्वभाव प्राकृतिक है।

(घ) तर्क वास्तव में जोगी से करना ही चाहिये। योगी का काम है तत्वदर्शी होना, और जो तत्वदर्शी है उससे तर्क होता ही है। सैकड़ों-हजारों वर्ष के बाद सभी की जबान अब खुलना ही चाहती है। स्त्री-शिक्षा और साथ ही साथ उसके अधिकार—पर्वत फोड़ कर नदी बाहर निकली है—समतल-भूमि में वह रोकी नहीं जा सकती। अब तो स्त्री तर्क करेगी, प्रतिवाद करेगी और जरूरत पड़ेगी तो युद्ध करेगी। ज्वालामुखी भड़क उठा है। उसके हृदय की आग दबाई नहीं जा सकती!

(ङ) मृत्यु के कुछ समय पहले स्मृति बहुत साफ हो जाती है। जन्म भर की घटनाएँ एक-एक कर के सामने आती हैं। सारे दृश्यों के रंग साफ होते हैं; समय की धुन्ध बिलकुल उन पर से हट जाती है—× × एक दिन उसने वैसे ही पूछा तो उसने कहा—"हाँ कल हो गई, देखते नहीं यह

रेशम के फूलों वाला साल ?" सुनते ही उसे दुःख हुआ क्रोध हुआ। क्यों हुआ ?

२—राजयोग का प्रमुख पात्र कौन है, और क्यों ? उसका चरित्र-चित्रण कीजिए तथा यह भी बताइए कि उसमे नाटककार को कहाँ तक सफलता मिली है ? २०

अथवा

शकुन्तला नाटक को नाटकीय तत्वों की कसौटी पर कसते हुए, उसका मूल्य निर्धारित कीजिये !

३—कथानक, चरित्र-चित्रण भाषा और शैली की दृष्टि से आप को "इक्कीस कहानियाँ" में कौन कहानी सब से अच्छी लगी और क्यों ? २०

अथवा

"मनुष्य अपना स्वामी नहीं है, वह परिस्थितियों का दास है—विवश है। वह कर्ता नहीं केवल साधन है।" इस उक्ति के आधार पर चित्रलेखा के पात्र कुमारगिरि का चरित्र चित्रण कीजिये।

४—"साहित्य-जन-समूह के हृदय का विकास है।" इस कथन को सप्रमाण सिद्ध कीजिये और इसके लेखक की शैली की समीक्षा कीजिए २०

अथवा

बाबू श्यामसुन्दर दास पं० रामचन्द्र शुक्ल की गद्य-शैली की तुलनात्मक विवेचना कीजिए

५—काव्य मे सगीत का क्या महत्व है ? २०

अथवा

आलोचना के विविध रूप निश्चित करते हुए हिन्दी के दो प्रमुख आलोचकों तथा उनकी कृतियों पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

६—निम्नलिखित मे से किन्हीं पाँच पर टिप्पणियाँ लिखिए:—प्रख्यात, प्रारम्भ, फलागम, विन्दु, प्रकारी, प्रतिमुख, विष्कंभक, श्राव्य, नियत श्राव्य धीर-प्रशान्त, स्थायी भाव, सचारी भाव। २०

अथवा

रस की परिभाषा बतला कर उसके विभिन्न अंगों की व्याख्या उदाहरण सहित कीजिए।

७—नीचे लिखे गद्य-खंड का भाव शुद्ध तथा हिन्दी में लिखिए:— १०

पहले 'इच्छा' का मधु मादकता, और अंगड़ाई वाला माया राज्य है जो रागारुण उषा के कंदुक सा सुन्दर है, और जिसमे शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गध की पारदर्शिनी पुतलियाँ रंग-बिरगी तितलियों के समान नाच रही हैं। यहाँ चलचित्रों की सस्तिछाया चारों ओर घूम रही है और आलोक-विन्दु को घेर कर बैठी हुई माया मुस्कुरा रही है। यहाँ पर चिर वसत का उद्‌गम भी है और एक ओर पतझड़ भी अर्थात् सुख और दुख एक सूत्र में बँधे हैं।' यहीं पर मनोमय विश्व रागारुण चेतन की उपासना कर रहा है।

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००२ वि०)

साहित्य-प्रश्न पत्र ३

समय ३ घण्टा] [पूर्णांक १००

सूचना—केवल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्न ८ अनिवार्य है। समस्त प्रश्नों के अंक बराबर हैं।

१—'हिन्दी-साहित्य के इतिहास' से आप क्या तात्पर्य समझते हैं? उसे हम कितने कालों में विभाजित कर सकते हैं और क्यों?

२—निर्गुण धारा के कवियों के कबीर तथा जायसी का स्थान इतने महत्व का क्यों माना जाता है? उनकी भाषा, भाव एव शैली को दृष्टिकोण मे रखते हुए युक्ति-सगत उत्तर लिखिए।

३—सूर का क्षेत्र तुलसी की अपेक्षा सकुचित है किन्तु जिस क्षेत्र मे इनकी वाणी ने संचरण किया उसका कोई कोना अछूता नहीं छोड़ा, इस कथन की उद्धरणों सहित पुष्टि कीजिये।

४—रीति-काल से क्या अभिप्राय है? मतिराम, भूषण और पद्माकर में से किन्हीं दो की भाषा, भाव, शैली तथा काव्य सम्बन्धी विशेषताओं की मार्मिक और युक्ति-सगत आलोचना कीजिये।

५—वर्तमान काव्य की प्रगति पर अपने विचार प्रकट कीजिए। मैथिली-

शरण जी गुप्त, हरिऔध और जयशकर प्रसाद जी में से किन्ही दो की काव्य सम्बन्धी विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

६—निम्न लिखित में से किन्ही दो की लेखन-शैलियों पर प्रकाश डालिए :—

१—पं० बालकृष्ण भट्ट
२—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
३—बाबू श्यामसुन्दर दास
४—पं० माखनलाल चतुर्वेदी

७—हिन्दी भाषा के उद्भव और विकास पर अपने विचार प्रकट कीजिये। हिन्दी की प्रधान बोलियो की व्यापकता का उल्लेख करते हुए ब्रजभाषा अथवा अवधी के महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

८—नागरी अङ्कों और अक्षरों के विकास पर एक सक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। नागरी लिपि की कतिपय विशेषताओ पर प्रकाश डालते हुए अ, ए, क, ट तथा १, २ के प्राचीन रूप प्रस्तुत कीजिए।

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००२ वि०)

साहित्य—प्रश्नपत्र ४

समय ३ घण्टे] [पूर्णांक १००

१—निम्न लिखित विषयों में से किसी एक पर सुन्दर भाषा में प्रायः १०० पङ्क्तियों का एक निबन्ध लिखिये :— ६०

(क) आधुनिक शिक्षा और स्त्री समाज।
(ख) सौन्दर्य काव्य का अनिवार्य उपकरण है।
(ग) वर्तमान युद्ध का सामाजिक जीवन पर प्रभाव।
(घ) 'कविता' मनोरञ्जन का विषय है, वा जीवन की महौषधि ?
(ट) हिन्दी ही राष्ट्र की भाषा है।

२—"प्रत्येक सभ्य और प्रतिभाशाली मनुष्य वर्तमान में रहता हुआ, अतीत और भविष्य मे भी रहता है"। इस कथन की पुष्टि एक साहित्यकार एव कलाकार की दृष्टि से कीजिए। १०

अथवा

आधुनिक काल के जिस कवि की कृतियों से आप अधिक प्रभावित हुए हों, उसकी किसी रचना की सम्यक् आलोचना कीजिये। २०

३—आधुनिक काल के जीवित कहानीकारों में से किसकी कहानियों ने आपको अधिक प्रभावित किया है? उचित तर्क, युक्ति, प्रमाण एवं उद्धरणों के सहित अपने उत्तर की पुष्टि कीजिए। २०

अथवा

सर्वश्री महादेवी वर्मा, रामकुमार वर्मा, दिनकर, बच्चन तथा निराला मे से जिस कवि की काव्य-रचना की ओर आप अधिक आकृष्ट हो सके हैं, उसकी काव्य-कलादि विशेषताओं की व्याख्या कीजिये, तथा यथावश्यक उसकी रचना की कुछ पक्तियों का उद्धरण भी कीजिए। २०

अथवा

वर्तमान कालिक किसी एक उच्चकोटि की साहित्यिक पत्रिका की आलोचना कीजिए। २०

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००२ वि०)

इतिहास—प्रश्नपत्र १

समय ३ घण्टे] [पूर्णांक १००

सूचना केवल छः प्रश्नों का उत्तर दीजिये। परन्तु प्रत्येक समूह से दो प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य है। सभी प्रश्नों के लिए समान अक नियत हैं। सुलेख के लिए चार अक सुरक्षित रक्खा गया है।

(क)

१—मौर्य कालीन शासन-प्रबन्ध का वर्णन विस्तार पूर्वक कीजिये।

२—'गुप्त काल को प्राचीन भारत का स्वर्ण-युग कहते हैं?' इसे प्रमाणित कीजिए।

३—किन्ही चार विषयों पर संक्षेप मे टिप्पणियाँ लिखिए :—

'पुष्यमित्र, ह्वेनसांग, स्कन्दगुप्त, सेल्यूकस, अजातशत्रु, शाक्यसिंह, पोरस, चाण, विक्रमशीला तथा पुरुषपुर।

४—राजपूत कौन थे? इनकी उत्पत्ति के विषय में अपना मत प्रकट कीजिए।

(ख)

५—विजयनगर साम्राज्य के बारे में जो कुछ ज्ञात हो लिखिए।

६—फिरोज तुगलक कौन था? उसकी शिक्षा प्रचार की आयोजना का वर्णन कीजिए।

७—भारतवर्ष का एक मानचित्र तैयार कर अलाउद्दीन खिलजी का राज्य-विस्तार दिखलाइये।

८—लोदी सुलतानों का संक्षेप मे वर्णन कीजिए तथा पठानों की अवनति का कारण बतलाइये।

(ग)

९—शेरशाह के राज्य का वर्णन कीजिये।

१०—मुगल साम्राज्य की अवनति के कारण विस्तार पूर्वक लिखिए।

११—मुगल वंश के सबसे बड़े सम्राट अकबर तथा औरंगजेब की तुलना कीजिए।

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००२ वि०)

इतिहास—प्रश्नपत्र २

समय ३ घंटा] [पूर्णाङ्क १००

सूचना—केवल छः प्रश्नों का उत्तर लिखिए। प्रत्येक समूह से तीन प्रश्नों का उत्तर देना आवश्यक है। प्रत्येक प्रश्न के लिए १६ अंक नियत है, शेष ४ स्वच्छ तथा सुन्दर लेख के लिए सुरक्षित हैं।

समूह (क)

१—लार्ड क्लाइव का जीवन चरित्र लिखते हुए, उसके द्वारा किए हुए सुधारों पर प्रकाश डालिए। उसके बंगाल के "दोहरे-प्रबन्ध" की आलोचना कीजिए।

२—लार्ड वेलेजली के आने के समय भारतवर्ष की क्या दशा थी? उसने कम्पनी की स्थिति को कैसे सुधारा? उसकी नीति का फल तथा उसके कार्य की महत्ता प्रदर्शित कीजिए।

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००२ वि०)

भूगोल—प्रश्नपत्र १

समय ३ घण्टे] [पूर्णांक १००

सूचना—केवल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के लिये समान अंक नियत हैं।

१—संसार (दुनिया) का एक मानचित्र बना कर निम्नांकित चीजें अंकित कीजिये।

(अ) ड्रैकेन्स वर्ग पहाड़; मीसीसीपी, ह्वाङ्गहो, नील नदियाँ ४

(ब) मोटी रेखा से न्यूयार्क से याकोहामा तक का सबसे छोटा रास्ता और उस रास्ते में पड़ने वाले दो प्रसिद्ध बन्दरगाह। २

(स) सरगासो समुद्र, जंजीवार द्वीप, कील नहर; रिओडिजेनेरियो, स्टालिन-ग्रैड; सिडनी। ६

(द) प्राचीन दुनिया के उष्ण कटि बन्धीय घास के मैदान। २

(क) नवीन दुनिया के तीन प्रसिद्ध तेल क्षेत्र। २

(ख) दुनिया के गेहूँ पैदा करने वाले प्रदेश। ४

२—समुद्र में धारायें कैसे चलती हैं? जिन २ देशों के तट से होकर गुजरती है उनके जलवायु पर वे क्या असर डालती हैं? किसी एक महासागर की धाराओं का वर्णन कीजिये। २०

३—निम्नांकित प्रदेशों में से किसी एक का भौगोलिक वर्णन कीजिये—(वहाँ के जमीन की बनावट, जलवायु, उपज, कलाकौशल और प्रसिद्ध शहर) २०

उक्रेन, इराक, अबीसिनिया; ब्रेजील।

४—कारण बतलाइए क्यों :—

(अ) चीली (या चाइल) का उत्तर भाग रेगिस्तान है। ८

(ब) अमेरिका का लोहे का कारोबार इरी झील और अपेलीशियन के पहाड़ी प्रदेशों में केन्द्रित है। ८

(स) हालैण्ड और बेलजियम में मक्खन और पनीर का कारोबार होता है। ५

५—आर्टिजयन कुयें से क्या मतलब समझते हैं? मानचित्र बनाकर आस्ट्रेलिया में ऐसे कुओं का उपयोग और विस्तार समझाइए। २०

६—उत्तरी इगलैंड और वेल्स के एक २ कारोबारी प्रदेश को चुनिये और उनका पूरा २ वर्णन कीजिये—(खानिज पदार्थ की सुविधायें, वहाँ के उद्योग धन्धे इत्यादि) हरेक में ही मुख्य केन्द्रों का नाम लीखिये और वर्णन कीजिये। २०

७—निम्नलिखिति नगरों मे से किन्हीं चार को ले लीजिये और उनका पूरा वर्णन कीजिये :—वे कहाँ हैं, कैसे बढे आज कल उनकी क्या उपयोगिता है :—

विनीपेग; बुअनस ऐअरिज; अलेक्जेंड्रिया; कैंटन, होनोलूलू, ग्लासगो, श्रीडसी, सैलोनिका-लेनिनग्रैड, सींगापुर (शोनान), याकोहामा, लन्दन, मास्को। २०

८—निम्नाकित मे से किन्हीं चार पर मानचित्र बनाकर इन्हें अकित कीजिए छोटे छोटे नोट लिखिये : — २०

साइक्लोन, नेजड ; रानेडो ; सिमून ; मु गे के द्वीप ; टड्रा ; फैरेललो ; सहारा। २०

९—भूमध्य सागरिक जलवायु से क्या अर्थ है? ऐसा जलवायु दुनियाँ मे कहाँ पाया जाता है? इसके होने के क्या क्या कारण हैं समझाकर लिखिये। २०

१०—नील या काँगों नदी का पूरा २ वर्णन कीजिये और बतलाइये वहाँ कौन २ से उद्योग धन्धे होते हैं और लोग अपना जीवन बसर कैसे करते हैं? २०

११—निम्नाकित प्रदेशों मे किन्हीं दो की भौगोलिक परिस्थिति वहाँ के लोगों पर क्या असर डालती है। २०

प्रेयरीज; डेनमार्क; अर्जेटाइन; नाइजेरिया।

१२—यदि आपको रूस मे रहने के लिये कहा जाय जहाँ आप अपना शेष जीवन व्यतीत कर सकें तो आप रूस के किस प्रदेश मे रहना पसन्द करेंगे ? क्यो ? २०

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००२ वि०)

भूगोल—प्रश्न-पत्र २

समय ३ घण्टे] [पूर्णाङ्क १००

सूचना—१—प्रत्येक प्रश्न के उत्तर के साथ यथासंभव मानचित्र देने से उत्तर का मान अकों मे अधिक किया जायगा।

२—स्मरण रहे कि आप को कुल ६ प्रश्नों का उत्तर देना है। प्रश्न एक का उत्तर अनिवार्य है।

१—अपने देश भारतवर्ष का एक मानचित्र पूर्ण पृष्ठ पर खींच कर निम्नांकित बातें उपयुक्त चिन्हों द्वारा स्पष्ट दिखलाइये :— २०

(क) पामीर का पठार, विन्ध्याचल, पटकोई की पहाड़ियाँ तथा इलायची के पहाड़।

(ख) सिन्ध नदी, ब्रह्मपुत्र नदी, गगा तथा गोदावरी नदी।

(ग) घोरवृष्टि वाले कम से कम दो भाग तथा दो अत्यन्त शुष्क प्रदेश।

(घ) गेहूँ, कपास (रुई), गन्ना (ईख), और अबरक उत्पन्न करने वाले कम से कम दो दो प्रान्त।

(ङ) वे रेल मार्ग जिनके द्वारा बम्बई और कलकत्ता बन्दरगाहों पर जहाजों से उतरने वाला विदेशी माल दिल्ली के बाजारों को भेजा जाता है तथा इन पर दो बड़े जंकशन।

२—निम्नलिखित दृश्य भारतवर्ष के कौन से भाग मे और क्यों दिखाई पड़ते हैं ? १६

(क) खनिज पदार्थों भूगर्भ से निकाल कर जीवन निर्वाह करने वाले श्रमजीवी।

(ख) जगलों की उपज एकत्र करने वाली जगली जातियाँ।

(ग) जलशक्ति से उत्पन्न की हुई विद्युत शक्ति के कारखाने।

(घ) चाय के बाग तथा बाजार के लिए चाय तैयार करने वाले कारख़ाने।

३—'नदियाँ अपने मैदानी भाग में मनुष्य मात्र के' लिये अधिक लाभदायक होती हैं।' गंगा नदी की उपमा देकर उपरोक्त कथन का प्रतिपादन कीजिये तथा एक मानचित्र बना कर अपने पक्ष का समर्थन कीजिये। १६

४—बंगाल तथा पंजाब उत्तरी भारत के एक ही मैदान पर स्थित हैं; परन्तु इन दोनों प्रान्तों के निवासियों के रहन सहन तथा भोजन और घरों की बनावट मे बड़ा अन्तर दृष्टिगोचर होता है। इस अन्तर के भौगोलिक कारण लिखिये और उत्तरी भारतवर्ष का एक छोटा मानचित्र खींच कर उनको प्रदर्शित कीजिये। १६

५—निम्नलिखित विषयों में से केवल किसी एक पर ऐसा सुलेख लिखिये जिसमे इसकी (अ) उपयोगिता, (ब) उत्पन्न होने के मुख्य भाग तथा केन्द्र, (स) बाजार के लिए तैयार करने के ढग (द) उन बाजारों के नाम जहाँ इसकी अधिक माँग है, इत्यादि बातों पर प्रकाश पड़ सके :— १६

(१) तम्बाकू, (२) चाय, (३) शक्कर या चीनी और (४) जूट या कपास।

६—निम्नलिखित मे से किन्हीं चार के कारण लिखिये।— १६

(१) 'दक्षिणी पठार के नगरों में तालाब और उत्तरी मैदान के नगरा मे कुओं का मनुष्य जीवन पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ता है।

(२) सिंध-गगा के मैदान में जनसंख्या, जलवृष्टि की मात्रा के अनुसार पूर्व से पश्चिम की ओर क्रमशः घटती जाती है।

(३) पजाब में रेलवे लाइनें नदियों के प्रायः समानान्तर बनानी पड़ी हैं।

(४) 'भारत की जल सेना मे बंगाल, मद्रास तथा बम्बई प्रान्त की अपेक्षा सयुक्त प्रान्त मे बहुत कम नवयुवक भर्ती हुए हैं।

(५) उत्तरी भारत के पहाड़ी प्रदेशों के रहने वाले साधारण मनुष्य प्रायः गंदे नजर आते हैं।

(६) राजपूताने तथा मध्य भारत के निवासी प्रायः रंगीन कपड़े पहिनना बहुत पसन्द करते हैं।

७--हिमालय प्रदेश तथा मध्य भारत के जंगलों की तुलना निम्नलिखित विषयों में कीजिये :— १६

(१) पेड़ों की उन्नति (२) लकड़ी की मजबूती (३) उपज की उपयोगिता, (४) जंगलों से प्राप्त होने वाली वस्तुओं का आधिक्य। इस अन्तर का कारण स्पष्ट रूप में लिखिये।

८—निम्नलिखित में से किन्हीं चार पर छोटी छोटी टिप्पणियाँ लिखिये :— १६

(१) भारत में जहाज बनाने के कारखानों की भावी उन्नति।

(२) हमारे देश के हवाई मार्ग तथा इनकी भावी उन्नति।

(३) झोपड़ियों तक में होने वाले व्यवसायों की भावी उन्नति।

(४) भारत के गावों की उन्नति के साधन।

(५) हमारे पशुओं के पतन के कारण तथा उनकी उन्नति के उपाय।

(६) खेती के नवीन साधन तथा उनका हमारे देश में भावी प्रयोग।

९—निम्नलिखित में से किसी एक प्रान्त का वर्णन उसकी स्थिति, प्राकृतिक बनावट, जलवायु, उपज, व्यवसाय तथा नगरों के वाणिज्य के विषय में लिखिये :— १६

(क) काश्मीर (ख) उत्तरी-पश्चिमी सीमा प्रान्त (ग) विहार प्रान्त।

१०—गत युद्ध काल में भारत में गेहूँ, चावल, चीनी या शक्कर और सूती कपड़ों तथा मिट्टी के तेल पर लगाये जाने वाले बन्धनों के केवल भौगोलिक कारण समझाइये। भारत का एक मानचित्र खींचकर इन वस्तुओं के उपज के मुख्य भाग तथा मुख्य केन्द्र दिखाइये।

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००२ वि०)

समय ३ घण्टे] राजनीति—प्रश्नपत्र १ [पूर्णांक १००

सूचना—निम्न लिखित प्रश्नों में से केवल पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिये। सभी प्रश्नों के लिये समान अङ्क नियत हैं।

१—१८२० ई० से लेकर आज तक की अगरेज सरकार की जो नीति देशी राजाओं के प्रति रही है उसका वर्णन कीजिये।

२—सूरत के अधिवेशन में कॉंग्रेस मे दो प्रथक प्रथक दल हो जाने के क्या कारण थे ?

३—सन् १९२७ से लेकर आज तक के राष्ट्रीय आन्दोलन की मुख्य मुख्य घटनाओं का वर्णन करते हुए एक लेख लिखिये।

४—संघ शासन में फैडरल कोर्ट का क्या महत्व होता ? हमारा फैडरल कोर्ट अमेरिका के संयुक्त राज्यों के फैडरल कोर्ट मे किन बातों मे कम है ?

५—सन् १९३५ ई० के एक्ट में प्रस्तावित भारतीय सघ शासन की आलोचना कीजिये।

६—लखनऊ पैक्ट, गॉंधी-इरविन पैक्ट तथा पूना पैक्ट में से किन्हीं दो का आलोचनात्मक वर्णन कीजिये।

७—सन् १८७५ ई० से लेकर सन् १९२५ ई० तक के भारतीय स्थानीय स्वराज्य के विकास का वर्णन कीजिये'

८—'यह बात सच है कि इगलैंड मे भरतवर्ष सम्बन्धी प्रश्नों पर वहाँ के भिन्न भिन्न राजनैतिक दलों में मतभेद नहीं है' इस पर टिप्पणी लिखिये।

९—इस बात से आप कहाँ तक सहमत हैं कि अगरेजी सत्ता के स्थापित होने के साथ ही साथ हिन्दू भारत के स्थानीय स्वराज्य की संस्थाओं का पतन हुआ ?

१०—हिन्दू राज्य शासन की विशेषताओं का फैसिज्म की विशेषताओं से तुलना कीजिये।

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००२ वि०)

राजनीति—प्रश्नपत्र २

नोट—किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक विभाग के दो प्रश्न अनिवार्य हैं। सब प्रश्नों के अंक बराबर हैं।

(अ) विभाग

१—प्रभुत्व शक्ति से क्या तात्पर्य है और वह राज्य में किसके पास निवास करती है ?

२—समाजवाद के मुख्य सिद्धान्तों का सूक्ष्म वर्णन कीजिये और इसकी मुख्य कमजोरियों पर प्रकाश डालिये ,

३—व्यवस्थापिका सभा के निर्माण में किन किन बातो का ध्यान रखना चाहिये ? क्या प्रान्तीय व्यवस्थापिका सभाओं में उनका ध्यान रक्खा गया है ?

४—राजनीति शास्त्र को आप कला अथवा विज्ञान की श्रेणी में रखते हैं ? उदाहरण सहित समझाइये ।

५—राज्य की उत्पत्ति और मनुष्य की सभ्यता का इतिहास एक ही है। क्या आप इससे सहमत हैं ?

(ब) विभाग

६—ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत कौन कौन से देश हैं और इनका एक दूसरे से क्या सम्बन्ध है ?

७—इटली में सरकार की ओर से किस आर्थिक व्यवस्था का प्रबन्ध किया गया है ? क्या वह आप को मान्य है ?

८—सयुक्त राष्ट्र अमेरिका के शासन विधान में सभापति को कौन कौन से अधिकार प्रदान किये गये हैं ?

९—रूस की वर्तमान शासन पद्धति में क्या क्या विशेषतायें हैं क्या अन्य देश इसका अनुकरण कर सकते हैं ?

१०—किसी देश की शासन पद्धति का प्रभाव वहाँ के निवासियों पर कैसा पड़ता है ? क्या देशवासी उस प्रभाव से अपने को वंचित रख सकते हैं ?

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००२ वि०)

दर्शन—प्रश्नपत्र १

किन्हीं पाँच भी प्रश्नों का उत्तर दीजिए। सब प्रश्नों के अङ्क समान ही हैं। प्रमाण से पुष्ट उत्तर को विशेष महत्व दिया जायगा।

१—"गीता का मुख्य विषय ब्रह्मविद्या पर प्रतिष्ठित व्यवहार प्रतिपादन है"—'भारतीय दर्शन'।

इस कथन को सप्रमाण सिद्ध करते हुए गीता के प्रधान उपदेश को स्पष्ट शब्दों में लिखिए।

२—भारत मे षड्दर्शनों का विकास किस प्रकार सम्पन्न हुआ ? इसका विवेचन प्रमाण के साथ कीजिए।

३—'द्रव्यसंग्रह' के आधार पर जैनमत के तत्वों की मार्मिक समीक्षा कीजिए। जैन मत तथा बौद्धमत की 'तत्वसमीक्षा' में मूलतः क्या पार्थक्य है ?

४—'आस्तव तथा शकर के मोक्षोपयोगी तत्वों का प्रतिपादन ही जैन धर्म का प्रधान विषय है। अन्य सब सिद्धान्त इन्हीं के प्रपञ्चभूत हैं"—इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं ? सप्रमाण उत्तर दीजिए।

५—अद्वैत तथा विशिष्टाद्वैत सिद्धान्तों में क्या अन्तर है ? ईश्वर जीव और जगत्—इन तीन विषयों मे इनके सिद्धान्तों का प्रतिपादन कीजिए।

६—'आत्माविद्या' मे आत्मा के स्वरूप तथा प्राप्ति के विषय में प्रतिपादित मन्तव्यों को अच्छी तरह समझाइए।

७—धर्म और दर्शन में क्या सम्बन्ध है ? दोनों में सामञ्जस्य है या विरोध ? वैदिक धर्म तथा जैन धर्म का प्रचुर उदाहरण देकर इस विषय का विवेचन कीजिए।

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००२ वि०)

दर्शनशास्त्र—प्रश्नपत्र २

केवल पाँच प्रश्नों के उत्तर देना अभीष्ट है। सब प्रश्नों के अंक बराबर हैं।

१—न्याय और वैशेषिक के मत से जीवात्मा के चिन्ह बतलाते हुए यह दिखलाइये कि इस सम्बन्ध में इन दोनों दर्शनों में आपस में कोई मतभेद नहीं है। २०

२—अभौतिक आत्मा का अस्तित्व किन प्रमाणों से सिद्ध किया जा सकता है ? २०

३—'इस प्रकार शरीर की क्रियायें न केवल शरीर के ही अवयवों को बनाने में काम आती हैं किन्तु मानसिक विकास का भी कारण होती हैं। यही हाल मानसिक व्यापारों का है। उनमें भी तारतम्य है, और उन सब व्यापारों का मिलकर एक प्रयोजन है। २०

उपर्युक्त कथन की उदाहरणों सहित व्याख्या करते हुए यह बतलाइये कि इस सम्बन्ध मे अध्यात्मवाद विकासवाद से किस प्रकार आगे बढा हुआ है ?

४ - मनोवेगों के सम्बन्ध मे विलियम जेम्स की कल्पना की व्याख्या करते हुए उसकी समीक्षा कीजिये । २०

अथवा

समानान्तरवाद या प्रतिक्रियावाद दोनों वादों मे से किसी एक वाद की व्याख्या करके उसकी समीक्षा कीजिये ।

५—तर्क शास्त्र का व्याकरण, मनोविज्ञान और अलङ्कार शास्त्र से सम्बन्ध बतलाइये ? २०

६—तार्किक, भौतिक और आध्यात्मिक विभाग में अन्तर बतलाइये। उदाहरण सहित उत्तर दीजिये ।

७—अलैंगिक अनुमान किसको कहते हैं इस प्रकार के अनुमान की उपयोगिता की विवेचना कीजिए।

अथवा

नीचे लिखे वाक्य युगो का तारकिक सम्बन्ध बतला कर यह दिखलाइये कि पहले वाक्य से दूसरे वाक्य का अनुमान कहाँ तक तर्क सम्मत है ?

(क) देखने से विश्वास होता है ।

जो बात देखी नहीं वह विश्वास योग्य नहीं ।

(ख) अधार्मिक लोग निन्दा के योग्य हैं ।

सब अनिन्दनीय लोग धार्मिक हैं ।

८—तर्काभास किसे कहते हैं ? नीचे लिखे अनुमानों की परीक्षा करके बतलाइए कि इनमे कौन सा तर्काभास है ? २०

(क) अँग्रेज लोग बड़े वैज्ञानिक होते हैं ।

अँग्रेज लोग शराब पीते हैं ।

अतः शराब पीने वाले वैज्ञानिक होते हैं ।

(ख) दूसरों के शरीर को क्षत पहुँचाना पाप है ।

डाक्टर शल्य चिकित्सा करते समय दूसरे के शरीर को क्षति पहुचाते हैं। इसलिए डाक्टर लोग पाप करते हैं।

(ग) तार्किक लोग विचारशील होते हैं।

कवि लोग तार्किक नहीं होते हैं।

अतः कवि लोग विचारशील नहीं होते।

(घ) यह मनुष्य अच्छा धनुर्धारी होगा क्योंकि यह भी अर्जुन की भाँति सव्यसाची अर्थात् बायें हाथ से काम करने वाला है।

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००२ वि०)

कृषिशास्त्र—प्रश्नपत्र १

१—कुएँ मे पानी किस वेग से आ रहा है यह कैसे ज्ञात करोगे और इसके ज्ञान में क्या लाभ होगा।

२—ग्रीन मैन्योर अर्थात् हरी खाद के प्रयोग से क्या लाभ होता है।

३—किसी पशु के चोट लग जाए और सूजन हो जाय तो क्या करोगे? और घाव हो जाय तो क्या करोगे।

४—निम्नाङ्कित जिन्सों के बोने का समय, बीज की मात्रा, पैदावार, और विशेष क्रियाएँ लिखो :—

अरडी, रिजका, पान, तम्बाकू, मक्का, मूँगफली: नील, ज्वार।

५—फल संरक्षण की कुछ रीतियाँ लिखो।

६—किसी पाँच तरकारियों का एक ऋतु चक्र अर्थात् रोटेशन लिखो और बतलाओ कि किसके पश्चात् कौन तरकारी फसल जायद मे, कौन ख़रीफ में, और कौन रबी में बोओगे।

७—फसलों को कीड़ों से बचाने के और कृषी को सुरक्षित रखने के सरल उपाय लिखो।

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००२ वि०)

कृषिशास्त्र—प्रश्न पत्र २

नोट—केवल पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिये। प्रथम प्रश्न का उत्तर देना आवश्यक है। सभी प्रश्नों के अंक बराबर हैं।

१--'जब तक देश में अन्य उद्योग-धन्धों की व्यवस्था नहीं होती तब तक कृषि का औद्योगीकरण अवाञ्छनीय तथा अव्यवहारिक है'। इस कथन की विवेचना कीजिये।

२—भारत में कृषि ऋणग्रस्तता के क्या कारण हैं? इस समस्या को हल करने में सहकारी साख समितियों ने कहाँ तक सफलता पाई है?

३—कानून कब्जा आराजी (संयुक्त प्रान्त) १६३६ से किसानों के अधिकारों मे क्या अभिवृद्धि हुई है? पिछले छः वर्षों में उन्हें इस अभिवृद्धि से कहाँ तक लाभ हानि हुई है?

४—'बिचवइये मिटाये नहीं जा सकते। केवल उनका सुधार या रूप परिवर्तन हो सकता है'। इस मत पर विचार कीजिये और कृषि-पदार्थों की बिक्री का उचित उपाय बतलाइये।

५—आप की सरकार ने ग्राम-सुधार के लिये क्या व्यवस्था की है? सफल ग्राम-सुधार कार्य के लिये आप उसमें क्या परिवर्तन करियेगा?

६—तगड़े बैलों और दुधार गायों की पूर्ति के लिये सरकार तथा गैर-सरकारी संस्थाएँ कौन कौन उपाय कर सकती हैं?

७—'अधिक अन्न पैदा करो, सम्बन्धी आन्दोलन कहाँ तक सफल रहा है? अधिक सफलता की दृष्टि से आप अन्य कौन उपाय उपयुक्त समझते हैं?

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००२ वि०)

धर्मशास्त्र—प्रश्न पत्र १

सूचना—इनमें स्वेच्छानुसार ६ प्रश्न उल्लेखनीय हैं किन्तु पञ्चम अनिवार्य है।

१—आर्य्यावर्त की परिभाषा लिखकर द्विजातियों के पृथक् पृथक् उपनयन काल का प्रमाण पुरःसर वर्णन कीजिए।

२--विवाह संस्कार का भेद वर्णन करते हुए यज्ञ के भेद और अधिकारी बताइये।

३—मांस खाने के विषय में मनु की आज्ञा का उल्लेख कीजिए।

४—युद्ध का अधिकार किसे है शिक्षा की शैली तथा उद्देश्य क्या है?

५—आश्रम के भेद तथा प्रत्येक आश्रम का विषय दिखला कर ब्राह्मण के लक्षण को लिखिए।

६—याज्ञवल्क्य मुनि के मतानुसार वर्णसंकरों की व्यवस्था सम्यक् कीजिए।

७—याज्ञवल्क्य ने किनको अभक्ष्यान्न बतलाया है ?

८—व्यभिचार से होने वाली बुराइयों को बताकर उसके प्रतिरोधावर्थक दण्ड विधान बतलाइये।

६—मनु की आज्ञा के अनुसार शत्रु पर चढाई करने के निश्चित काल का उल्लेख कर स्थान का निरूपण कीजिए।

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००२ वि०)

धर्मशास्त्र—प्रश्नपत्र २

सूचना—केवल छः प्रश्नों का उत्तर लिखिए चार अंक स्वच्छ लेखन के लिए नियत हैं।

१—परमात्मा के सगुण निर्गुण रूप मे कौन सा अन्तर है इस पर एक संक्षिप्त निबन्ध लिखिए।

२—श्रीमद्भागवत के तृतीय स्कन्ध के कथानक द्वारा आपको कौन सी शिक्षा मिलती है इसका विशद रूप से वर्णन कीजिए।

३—यज्ञ शब्दार्थ लिखकर, उसके उपयोग के सम्बन्ध में स्पष्ट विवेचन कीजिए।

४—ईश्वर सृष्टि का निमित्त या उपादान कारण है। व्यक्त कीजिए। साथ ही सृष्टि के उत्पत्ति क्रम का भी निर्देश कीजिए।

५—गीता के १६वें अध्याय से आपको कौन सी शिक्षा मिलती है।

६—भिन्न भिन्न योनियों मे जीव का क्योंकर प्रवेश होता है ? तथा मनुष्य योनि की उत्तमता को प्रमाणित कीजिए।

७—संचित, प्रारब्ध, क्रियमाण, कर्मो का उल्लेख कर कि[illegible] उपयोगिता बतलाइए।

८—जय विजय की शापाख्यायिका संक्षेप में लिखिए।

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००२ वि०)

अर्थशास्त्र—प्रश्नपत्र १

केवल पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिए। सभी प्रश्नों के अंक समान नियत हैं।

१—अर्थ शास्त्र की परिभाषा कीजिये। अर्थ शास्त्र के मुख्य विभाग तथा उनके पारस्परिक सम्बन्ध का वर्णन कीजिये।

२—उपयोगिता ह्रास नियम के बारे में जो आप जानते हों उदाहरण सहित लिखिये, और उपयोगिता का ह्रास चित्र द्वारा दिखलाइये।

३—श्रम की कुशलता किन बातों पर निर्भर है? भारतवर्ष के श्रमजीवी कार्य कुशल क्यों नहीं हैं?

४—बाज़ार मूल्य और सामान्य मूल्य की परिभाषा कीजिये। और उनका आपस का सम्बन्ध उदाहरण तथा रेखा चित्र सहित बतलाइये।

५—भारतवर्ष में खेती सम्बन्धी मुख्य कठिनाइयों का वर्णन कीजिये और सुधार के उपाय बतलाइये।

६—मजदूरी की परिभाषा कीजिये और नग्दी तथा असली मजदूरी में भेद बताइये? उदाहरण सहित उत्तर दीजिये।

७—मुनाफा किसे कहते हैं। कुल लाभ और वास्तविक लाभ में क्या अन्तर हैं? उदाहरण देकर समझाइये।

८—भारत में आय कर के बारे में आप क्या जानते हैं, विस्तार पूर्वक लिखिये।

९—निम्नलिखित विषयों मे से किन्हीं चार पर टिप्पणियाँ लिखिये :—

(क) असल सूद।

(ख) उत्पत्ति ह्रास नियम।

(ग) माँग।

(घ) संगठन।

(च) विलास की वस्तुएँ।

(छ) प्रतिबन्धक व वैसर्गिक उपाय।

(ज) कौटिल्य का अर्थशास्त्र।

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००२ वि०)

अर्थशास्त्र—प्रश्न-पत्र २

सूचना—केवल पाँच प्रश्नों का उत्तर लिखिये। सभी प्रश्नों के लिए समान अङ्क नियत हैं।

१—भारत में बिखरे हुए छोटे छोटे खेतों की समस्या इतनी जटिल क्यों बन गई हैं? कारण सहित लिखिये। बिखरे हुए छोटे छोटे खेतों से जो हानियाँ होती हैं उनको लिखिए और इस समस्या का हल किस प्रकार किया जाय इस पर प्रकाश डालिये।

२—"सहकारी उपभोक्ता स्टोर" किसे कहते हैं, उसकी विशेषताओं का वर्णन कीजिये. सहकारी उपभोक्ता स्टोर से उपभोक्ताओं को क्या लाभ हो सकता है? विस्तारपूर्वक बतलाइये।

३—भारतीय गाँवों की मुख्य समस्यायें कौन कौन सी हैं, उनका दिग्दर्शन कराइये और यह भी बतलाइये कि क्या वे एक दूसरे से सम्बन्धित हैं। उसके सम्बन्ध पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डालिये।

४—"भारतीय ग्रामीण ऋण को सर्वथा चुका देने के लिए आज स्वर्ण अवसर उपस्थित हुआ है" इस मत से आप कहाँ तक सहमत हैं। यदि सरकार आप को ग्रामीणों के ऋण चुका देने के सम्बन्ध मे एक व्यवहारिक योजना बनाने को कहे तो आप कोन सी योजना उपस्थित करेंगे कारण सहित लिखिये।

५—ईस्ट इंडिया कंपनी की आर्थिक नीति के परिणाम स्वरूप भारत मुख्यतः कृषि प्रधान देश कैसे बन गया। ब्रिटिश साम्राज्यवादी नीति का देश के आर्थिक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा प्रमाण सहित लिखिये।

६—भारत कृषि प्रधान देश है फिर भी यहाँ प्रति एकड़ पैदावार बहुत कम है। प्रति एकड़ पैदावार कम होने के कारण लिखिये और पैदावार बढ़ाने के लिए कौन कौन से उपाय काम में लाये जाने चाहिएँ उनका विस्तार पूर्वक वर्णन कीजिये।

७—भारत में जमींदारी प्रथा का जन्म कब और कैसे हुआ, सप्रमाण लिखिये, जमींदारी प्रथा के गुण और दोषों का विवेचन कीजिये और यह भी बतलाइये कि जमींदारी प्रथा को यदि नष्ट किया जाय तो किस नीति का अवलम्बन करना उचित होगा।

८—"खादी का आन्दोलन वास्तव में वस्त्र स्वावलम्बन का आन्दोलन है मिलों की प्रतिस्पर्द्धा का प्रश्न ही नहीं उठता।" इस मत पर विस्तार पूर्वक प्रकाश डालिये और बतलाइये कि यह मत कहाँ तक ठीक है।

९—भारतीय किसान को खेती के अतिरिक्त अन्य सहायक धधों की क्यों आवश्यकता है? सहायक धधों का स्वरूप कैसा होना चाहिये? उनमें कौन सी विशेष बातें होनी चाहिए कि जिससे वे किसान के लिए उपयुक्त हो सकें। उपयुक्त सहायक धधों के नाम लिखिये।

१०—भारतीय सहकारिता आन्दोलन ४० वर्षों बाद भी निस्तेज और निर्बल क्यों है। कारण सहित लिखिये और यह भी बतलाइए कि सहकारिता आन्दोलन को सतेज और सबल बनाने के लिए क्या उपाय करने चाहिए।

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००२ वि०)

विज्ञान—प्रश्नपत्र १

नोट १—स्वच्छता की ओर विशेष ध्यान दीजिये।

२—कुल छः प्रश्न कीजिये।

१—कैसे सिद्ध कीजियेगा कि वायु दबाव डालती है। क्या आप उसे नाप भी सकते है? एक वायु दाब मापक का वर्णन कीजिये और बताइये उससे दबाव कैसे नापा जाता है?

वायु का समुद्र तल पर दबाव ३०" है यदि वायु मण्डल का तापक्रम सम हो और एक लीटर वायु का औसत भार १·२ ग्राम हो तो वायु मण्डल की ऊँचाई कितने मील होगी।

२—शरीर ताप मापक का वर्णन लिखिये।

एक मनुष्य के शरीर का तापक्रम १०५·६° नापा गया, क्या उसी ताप मापक से उबलते पानी का ताप नहीं नापा जा सकता? यदि उसी कमरे में

एक दूसरा ताप मापक ४५° ताप दर्शाता हो तो इस अन्तर को समझाइये।

३—जल तुल्यता निकालने से क्या लाभ होता है।

एक लोहे की गोली जिसका भार ५०० ग्राम है एक भट्टी मे डाली गई जब उसका तापक्रम भट्टी के तापक्रम के बराबर हो गया तब वह निकाल कर एक बड़े बर्तन मे, जिसका भार ३०० ग्राम था और जिसमे ८५ ग्राम पानी और १० ग्राम बर्फ पड़ी थी, डाल दी गई। बाद में तौलने पर कुल वजन ८०८·५ ग्राम पाया गया तो भट्टी का तापक्रम बताइये जब बर्तन की जल तुल्यता ६० ग्राम है तथा लोहे का विषिष्ट ताप ·१ और बर्फ का गुप्त ताप ८० केलरी प्रति ग्राम है।

४—वाष्प और वायु में क्या अन्तर है। क्या वायु सम्बन्धी सभी नियम वाष्प के लिये भी शुद्ध हैं।

कैसे सिद्ध कीजियेगा कि क्वथनाक पर का संतृप्ति दबाव वायुमण्डल के दबाव के बराबर होता है।

५—उन्नतोदर दर्पण का सूत्र सिद्ध कीजिये।

उन्नतोदर दर्पण का नाभ्यान्तर ६० से० मी० है। ५ मीटर दूर पर स्थित मकान का प्रतिबिम्ब कहाँ, कैसा और कितना बड़ा होगा?

६—(अ) एक त्रिपार्श्व का कोण ४५° है उसका वर्तनाक $\frac{3}{2}$ है यदि एक किरण ३०° पर आयतित हो तो विचलनकोण बताइये।

(ब) "मनुष्य का नेत्र साधारण कैमरा से कुछ समता रखता है" इस अंश को समझाइये। चश्मा मनुष्य को देखने में कैसे मदद करता है?

७—शब्द का वेग निकालने की विधि लिखिये।

८—चुम्बक के उपयोग लिखिये। किसी लोहे की छड़ को आप चुम्बक कैसे बनायेंगे।

९—निम्नलिखित मे से दो पर टिप्पणी लिखिए:—

(१) एक्सकिरण।

(२) चाँदी का मुलम्मा करना।

(३) विद्युव घट।

१०—निम्नलिखित के चित्र खींच कर उनका कार्य संचालन दर्शाइए:—

(१) विद्युत मापक।
(२) विद्युत उत्पादक।
(३) सूक्ष्म दर्शक।
(४) दूरदर्शक।

मध्यमा परीक्षा (संवत् २००२ वि०)

विज्ञान—प्रश्नपत्र २

सूचना—केवल छः प्रश्नों के उत्तर लिखिए। प्रश्न एक अनिवार्य है।

१—अलम्यूनियम प्रकृति में किस रूप मे पाया जाता है? बाक्साइट से अलम्यूनियम किस प्रकार बनाया जाता है? अलम्यूनियम किस काम आता है? अलम्यूनियम क्लोराइड बनाने की विधि बतलाइए। २०

२—फासफोरस के भिन्न भिन्न रूपान्तरों का वर्णन कीजिए। १६

फासफीन बनाने के विधि बतलाइए तथा अमोनियॉ से इसकी तुलना कीजिए।

३—निम्नलिखित पदार्थों के बनाने की विधि तथा उनके रसायनिक गुण लिखिए:— १६

पोटैशियम परमैंगनेट, सिलवर नाइट्रेट, कापर सलफेट तथा नाइट्रस एसिड।

४—गन्धक का तेजाब बनाने की एक विधि बतलाइए। तॉबा गन्धक तथा कार्बन पर इसकी क्या क्रियाएँ होती हैं? १६

५—हाइड्रोजन पर आक्साइड बनाने की विधियॉ बतलाइए। इसके तथा ओजोन के गुणों की परस्पर तुलना कीजिए। १६

६—निम्नलिखित पदार्थों मे परस्पर क्या क्रियाएँ होती हैं:— १६

(क) सलफर डाइऑक्साइड तथा हाइड्रोजन सलफाइड।
(ख) पोटैशियम परमैंगनेट तथा हाइड्रो क्लोरिक एसिड।
(ग) जिन्क क्लोराइड तथा कासटिक सोडा।
(घ) क्लोरीन गैस तथा कैलशियम हाइड्रोक्साइड।

७—इक्यूवेलेन्ट वेट से क्या मतलब समझते हैं। इसके निकालने की एक विधि लिखिए। १६

~~७~~ १.८ ग्राम धातु नमक के तेजाब से २०० सी० सी हाइड्रोजन निकालती है उस धातु का इक्यूवेलेन्ट वेट निकालिए। १६

८—क्लोरीन, ब्रोमीन तथा आयोडीन के भौतिक तथा रसायनिक गुणों की परस्पर तुलना कीजिए। १६

९—विद्युत् विश्लेषण से क्या मतलब समझते हैं? आयनिक थ्योरी के सम्बन्ध मे जो जानते हो लिखिए। १६

१०—निम्नलिखित का अन्तर समझाइए। १६

(क) काम्पलेक्स साल्ट तथा डबल साल्ट।

(ख) इवापोरेशन तथा बौएलिङ्ग।

(ग) भौतिक मिक्सचर तथा रसायनिक कम्पाउन्ड।

(घ) मैटल तथा नानमैटल।

११—लोहे के खनिज कौन कौन से हैं? स्टील बनाने की विधि विस्तार पूर्वक लिखिए। स्टील किस किस काम आती है? १८

समाप्त